**चतुर्थ अध्याय**

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का तुलनात्मक**

**अध्ययन**

**अध्याय - 04**

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन**

प्रकरणः एक

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीत : लोरियाँ**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी लोरी गीत

सारांश

* गुजराती लोरी गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में तुलनाः

समानता एवं असमानता

* निष्कर्ष

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः लोरियाँ**

**प्रस्तावना**

 लोकगीतों में विविधरसों की धारा निरंतर प्रवाहित होती रही हैं। उनमें वात्सल्य रस का स्थान महत्वपूर्ण है। माँ अपने शिशु के प्रति हृदय में प्रेम को रसपूर्ण भाव-गीतों में अभिव्यक्त करती है तब वह वात्सल्य रस की धारा लोरी-गीतों में परिवर्तित होती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक काव्य में लोरी-गीतों का विशेष महत्त्व रहा है।

मनोवैज्ञानिक द्रष्टिकोण से लोरी-गीतों द्वारा माँ के हृदय के प्रेम-भाव शिशु के मन में प्रविष्ट होकर प्रेम का संचार करते हैं तथा उसके मानसिक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। अतः गुजराती तथा राजस्थानी लोकगीतों में लोरी-गीत विशेष मात्रा में उपलब्ध हैं जिन्हें देखना आवश्यक है।

**राजस्थानी लोरी गीत**

**(1) पलना**

किशनगड़ शहर से आया सोने का पालना,

तेरे दादाजी मंगवाये सोने का पालना,

दादीरानी झुलावे तूं झूल ललना ।

जयपुर शहर से आया सोने का पलना,

तेरे बाबाजी मंगवाये सोने का पालना,

मम्मी रानी झुलावे तूं झूल ललना ।

बंबई शहर से आया सोने का पलना,

तेरे मामा ने मंगवाये सोने का पलना ।

तेरी मामी रानी झुलावे तूं झूल ललना,

दिल्ही शहर से आया सोने का पलना ।

तेरे चाचा ने मंगवाये सोने का पलना,

चाची रानी झुलावे तूं झूल ललना ।

कलकत्ता शहर से आया सोने का पलना,

तेरे फूफा ने मंगवाये सोने का पलना,

फूफीरानी झुलाये तूं झूल ललना ।

उदयपुर शहर से आया सोने का पलना,

तेरे भैया ने मंगवाये सोने का पलना,

भाभी रानी झुलावे तूं झूल ललना।[[1]](#endnote-2)

**(2) चिड़कली**

गीगा ने खिलायी ए चिड़कली,

गीगा ने खिलायी ए,

गीगा रोवै भ्याऊं-भ्याऊँ

गीगा ने हंसायी ए चिड़कली,

गीगा ने खिलायी ए चिड़कली ।

पगां आंधू घूंघरणा थारा ए,

गलड़ मोतीड़ां रो हार ए चिड़कली।

थारे हिंगलू ढोलूं पांखड़ल्या रंगकेशर,

ए चिड़कली गीगा ने खिलायी ए ।

आंगण छड़कूं बाजरी ए,

नित उठ चुगवा आव ए चिड़कली।

गीगा ने खिलायी ए चिड़कली ।।[[2]](#endnote-3)

**(3) गड़ा चंदन का पलना**

गड़ा चंदन अगर का पलना,

रेशम की डोर से ललना झूल ।

दूर झुलावै बाबा खड़े-खड़े

दादीबाई के प्राणों के प्यारे झूल ।

चाचा अम्मा बलैयां ले रही हैं,

तेरी बहिना का है अंखियों का नूर

गड़ा अगर का पलना झूल मेरे ललना ।

सब सुना रही है लोरी हिल-मिलकर,

वीर माता का तूने पिया है दूध ।

देश धर्म में बलि-बलि जाना,

संकट में पग पीछे न धरना सपूत ।

गड़ा चंदन अगर का पलना झूल मेरे ललना ।

तू वीर शिव और सुभाष बन जा,

मेरी लोरी के शब्दों को जाना न भूल ।

तेरे जीवन बगियां महक उठे,

तेरी राह के शूल बन जायेंगे फूल ।

लोरी देकर अम्मा सुला रही,

आजा निंदयां झूल ललना के संग झूल।।[[3]](#endnote-4)**(4) नान्या थारो पालणो**

नान्या थारो पालणो घलाद् यूं सामी साल,

आवलड़ा थारा बाबा सा झोट्या देश रे,

नान्या थारो पालणो ।

हुल रे नान्या हुल रे तू दूध पताशा पी रे,

नान्या थारो पालणो ।

थारा सोनारा झांझरिया,

 थारै रेशम को गज बैल रे,

नान्या थारो पालणो ।

थारे आंगन मौसी नाचे,

तेरी खुशियां-खुशियां मन में रे ।

नान्या थारो पालणो घलाद् यूं सामी साल।। [[4]](#endnote-5)

**सारांश**

 राजस्थानी गीतों में प्रथम गीत 'किशनगड़ शहर से आया सोने का पलना' में पुत्र-जन्म के स्वागत का वर्णन है। पुत्र-जन्म का आनंद व्यक्त करते हुए सभी रिश्तेदार नवागत शिशु को बड़े प्रेम से सोने के पलने में झुलाते हैं।

 द्वितीय गीत 'चिड़कली' में माँ अपने शिशु को भोजन कराते समय चिड़िया को बुलाती है। अपने शिशु का मन बहलाने के लिए चिड़िया के पैरों में घुंघरू बाँधकर गले में मोती का हार पहनाना तथा चोंच पर हिंगलु (लाल रंग) छिड़कना चाहती है। इस प्रकार माँ के हृदय से वात्सल्यपूर्ण भाव गीत में उमड़ आये हैं।

 तृतीय गीत 'गड़ा चन्दन का पलना' में प्राणों से प्रिय शिशु चंदन के पलने में झूल रहा है। रेशम की डोरी से सभी रिश्तेदार झुलाते समय शिशु के भविष्य के लिए उसे आशीवार्द देते हैं। वे चाहते हैं कि शिशु के जीवन में कोई कठिनाई न आये, उसकी जीवन-बगिया महक उठे और वह बालक भविष्य में वीर बने।

 चतुर्थ गीत 'नान्या थारो पालणो' में शिशु के जन्मोत्सव तथा नामकरण विधी का वर्णन है। सुन्दर पलने में बालक को सोने का झांझर तथा रेशमी वस्त्र से सजाकर बड़े ही हर्षोल्लास से उसे दुलारते हैं।

**गुजराती लोरी गीत**

 **(1) बाळा पोढो ने**

साव रे सोनानुं मारुं पारणियुं ने

 घूघरीये घमकार, बाळा पोढो ने

चार पाये चार पूतळियुं ने

 मोरवाये बे मोर, बाळा पोढो ने ।

सुवडाव्या सूवे निह रे

 आ शा कळजग रुप, बाळा पोढो ने ।

हमणां आवशे तारा दादाजी

 ने मांडशे काई वढवेड, बाळा पोढो ने ।

जेम तेम करी बाळ सुवरियां रे।

 करवा घरना काम, बाळा पोढो ने।

कामकाज करीने ऊभां रियां रे

 तोय न जाग्यां बाळ, बाळा पोढो ने ।

बाई रे पाडोशण बेनडी रे

 हजी नो जागे बाळ, बाळा पोढो ने ।

सरखी साहेली भेळी थईने रे

 जगाड्यां नानां बाळ, बाळा पोढो ने ।[[5]](#endnote-6)

**(2) तमे मारा देवना दीधेल छो**

तमे मारा देवना दीधेल छो,

 तमे मारा मागी लीधेल छो,

 आव्या त्यारे अमर थई ने रो।

मा देव जाऊँ ऊतावळी ने जई चडावुं फूल,

मा देवजी परसन थया त्यारे आव्या तमे अणमूल

 तमे मारुं नगद नाणुं छो

 तमे मारुं फूल वसाणुं छो,

 आव्या त्यारे अमर थई ने रो।

मा देव जाऊँ उतावळी ने जई चढ़ावुं हार,

पारवती परसन थया त्यारे आव्या हैयाना हार

तमे.... नगद.

हनुमान जाऊं उतावळी ने जई चडावुं तेल

हडमान परसन थया त्यारे घिडया बांध्या घेर

 तमे.... नगद.

तमे मारा......... छो

तमे मारा......... छो

अव्या त्यारे अमर थईने रो।[[6]](#endnote-7)

**(3) हालो रे वालो**

हालो रे वा'लो रे करसन काळो

हरिने हींचके वालो।

शामळी सूरत शामळो वा'लो, हां... हां... हां..

रंगमां रूपाळो,

माता जशोदा अम ज के' मारो

मोरली धजाळो

भाई भाई मोरली धजाळो ।

हां... हां मोरली धजाळो।

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-1

हतुं ई तो छतुं कीधुं हां... हां... हां...

कानजी तारूं काम,

वारिने बरमांड डोल्यां

मेवाडो मस्तान ।

भाई भाई मेवाडो मस्तान।

हां... हां मेवाडो मस्तान।

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-2

परथम तो धोबीडां लूट्यां हां.. हां.. हां

जोयुं मथुरा गाम,

मामा कंसने मारतां कांई

वरत्ये जेजेकारऍ

भाई भाई वरत्ये जेजेकार।

हां.. वरत्यो जेजेकार।

हालो रे वालो रे-3

पाताळे जईने काना हां.. हां.. हां

नाथ्यो काळीनाग,

पोयण करेपांदडे कांई

पोढ्या दीनोनाथ।

भाई भाई पोढ्या दीनोनाथ।

हां.. हां पोढ्या दीनोनाथ।

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-4

 दोड मेलीने दडो लीधो हां.. हां... हां

वनमां पाडी वाट,

माता जशोदाए हालरडुं गायुं

ऊगमते परभात ।

भाई भाई ऊगमते परभात ।

हां.... हां ऊगमते परभात ।

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-5

 चण्या केरो छोड मंगावुं हां... हां... हा

 ओळा पडावुं,

 बाळा छानो रे' ने

गुंजा भरावुं ।

भाई भाई गूंजा भरावुं ।

हां.. हां गूंजा भरावुं।

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-6

शेरडी केरो सांठो मगावुं हां.. हां.. हां

पाळीए छोडावुं,

बाळ काना छानो रे ने

गुंजा भरावुं।

भाई भाई गुंजां भरावुं।

हां.. हां गुंजा भरावुं

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वालो रे-7

 शामळी सूरत शामळो वाने हां.. हां.. हां

रंगमां रूपाळो,

माता जशोदा एम ज के मारो

मोरली धजाळोऍ

भाई भाई मोरली धजाळो

हां.. हां मोरली धजाळो

ओळोळोळो हाल्या हालूडा हाल्य

हालो रे वा'लो रे

कानो करसन काळो

बाळाने हींचको वालो - 8 [[7]](#endnote-8)

**सारांश**

 गुजराती लोरी-गीतों में प्रथम गीत 'बाळा पोढो ने' में हीरे-मोती तथा रेशम के पालने में सभी रिश्तेदार बड़े प्रेमपूर्ण भाव से शिशु को झूला झुलाते हैं।

 द्वितीय गीत 'तमे तो मारा देवना दीधेल छो' में बालक को सुखी रखने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इस गीत में अभिव्यक्त वात्सल्यपूर्ण भाव बड़े ही हृदयस्पर्शी हैं।

 तृतीय लोरी 'हालो रे वालो रे कान करसन काळो' में बालकृष्ण के पराक्रम वर्णन की संपूर्ण कथा वर्णित है। हर एक माँ अपने बालक में बालकृष्ण को ही देखती है। इस लोरी गीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है राजस्थान (मेवाड़) की वीरता के दर्शन गुजराती जननी बालक में प्रकट करके गुजरात और राजस्थान के गहरे संबंध को भी उजागर करती है।

**गुजराती और राजस्थानी लोरी गीतों की तुलना**

**(क) समानता**

1. दोनों भाषाओं में लोरी-गीतों में शिशु को चंदन, रेशम, हीरे-मोती के पलने में झुलाने का वैभवपूर्ण वर्णन प्राप्त होता है।

2. दोनों में जन्मोत्सव तथा रिश्तेदारों का बालक को झुलाने का वर्णन है।

3. दोनों में माँ के हृदय की ममता तथा वात्सल्य भाव प्रकट हुए हैं।

**(ख) असमानता**

1. राजस्थानी लोरी-गीतों की संख्या गुजराती की अपेक्षा अधिक है।

2. राजस्थानी लोरी-गीतों में बालक के जन्मोत्सव तथा उसे सजाने-संवारने का अधिक विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

3. राजस्थानी लोरी-गीतों में सम्पन्नता के कारण हीरे, मोती, सोने आदि का वैभवपूर्ण चित्रण मिलता है। वैसा चित्रण गुजराती लोरी में है किन्तु कच्छी लोरी-गीतों में अभाव-सा पाया जाता है।

**निष्कर्ष**

 प्राचीन काल से लेकर आज तक माँ का प्रेम अद्वितीय माना गया है। इसकी तुलना ईश्वर-प्रेम से की जाती है। माँ के हृदय के वात्सल्यपूर्ण भाव लोरी-गीतों के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।

 राजस्थानी तथा गुजराती लोरी-गीतों में भी माँ का ममत्व तथा हृदय का वात्सल्य उमडकर आया है। माँ अपने शिशु के लिए सदैव मंगल कामना करती है। शिशु को सजाने, संवारने में, उसे बड़ा करने में सुख का अनुभव होता है। सभी गीतों में माँ की अपना सब कुछ शिशु के प्रति न्यौछावर कर देने की प्रवृत्ति तथा आत्मसमर्पण भाव प्रकट हुआ है।

\* \* \* \*

**प्रकरणः दो**

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीत : बालगीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी बालगीत

सारांश

* गुजराती बालगीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी बालगीतों में

तुलना : समानता एवं असमानता

* निष्कर्ष

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः बालगीत**

**प्रस्तावना**

 बालगीतों मे वात्सल्य भाव की धारा निरन्तर प्रवहमान रही है। बालक ईश्वर है और माता उसकी पुजारिन। बालक अलौकिक दुनियाँ के सितारे हैं। उनकी स्वप्न-सृष्टि अजीब होती है। बालक वात्सल्य-मूर्ति माँ से प्रेरणा लेता हुआ मित्रों की ओर बढ़ता है। माता के कोमल हृदय से प्रेम का सिंचन होता है।

 बालक का मानसिक विकास बालगीतों से होता है। प्राचीन काल से लोकगीतों के स्रोत बालगीतों के द्वारा स्फुरित होते रहे हैं।

 मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक चोरी करता है तो अवश्य वहां स्नेह का अभाव होगा वात्सल्य भाव एवं स्नेह का न मिलने से बालक अपराधी बनते हैं।

 बालगीतों द्वारा बालक अपनी निष्पाप दुनियाँ बनाते हैं जिसमें निर्दोष आनंद और निःस्वार्थ भाव होते हैं। अतः बालगीतों में निःस्वार्थ मन की सरल अभिव्यक्ति प्राप्त है।

गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में समान रूप से बालगीत पाये गये हैं; जिस पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

**राजस्थानी बालगीत**

(1) मेरा लाल

मेरा लाल रिझाता चिड़ियाँ

ललना रोता, चीं-चीं-चीं-चीं,

राग सुनाता पीं-पीं-पीं-पी,

इसको जल्द हँसाना चिड़ियाँ,

मेरा लाल रिझाता चिड़ियाँ।

तरल पांव में पैंजन डालो मधुर गले में माला,

ललना को बहलाना चिड़ियाँ,

मेरा लाल रिझाता चिड़ियाँ ।

सरस चोंच पर कंकु ढोणूं,

जल्दी हरखाना,

मेरा लाल रिझाता चिड़ियाँ।

आँगन में मैं डालूँ दानी नित उठकर तूं चुगने आना,

रूठा लाल मनाना,

मेरा लाल मनाता चिड़ियाँ।[[8]](#endnote-9)

(2) चाल मारी ढोलकी ढ़माढ़म

1. चाल मारी ढोलकी ढ़माढ़म

 किसकी बकरिया किसके तुम

 बोल म्हारी ढोलकी ढ़माढ़म

2. भरघो समन्दर गोपी चन्दर

 बोल मारी मछली कितरो पाणी?

 इतरो कै इतरो, इतरो?

3. अक्कर-बक्कर लौ की टक्कर ठा ठूं ठस ।

 अतुल-बतुल, गौरी-शंकर, पीन पता कूज ।।

4. खाती चिड़ोरे भाई खाती चिड़ो,

 खाती का घर में चोर चिड़ो

 खाती का घर में चोर चड्यो

 आ जा रे काला कागला,

 काली हांड़ी चाट जा।

5. मेह बाबा आजा,

 दूध पूरी खा जा।

 गरम करेली की भाजी मेह ने रोटी खा ली।।[[9]](#endnote-10)

(3) गणगौर

गणगौर पूजूँ गणपति ये

ईश्वर पूजूँ पारवती ये ।

पारवती का आला गीला

गौर का सोना का टीला ।

टीला दे टपलादे रानी

वरत करे गोर दे रानी ।

करता करता आस आयो, पास आयो,

 सरा खांड लाडू लायो।

लाडूडो तो वीर ने दियो बीबी ले मने चूंदड़ दियो

 चूंदड़ लै मैं गौर औढ़ायी

गौर ले मने सुहाग दियो, भाग दियो।

सुहाग भाग सीला सात

कवोला बाड़ी में बाजारो

रानी पूजे राज में म्हैं पूजां लोका सुहाग में,

रानी का रोज तपतो जाय, म्हां को सुहाग वधतो जाय।[[10]](#endnote-11)

**सारांश**

 प्रथम राजस्थानी गीत 'मेरा लाल रिझाना चिड़ियाँ' में माता के वात्सल्यपूर्ण भाव का निरूपण हुआ है। माता बालक की खुशी के लिए चिड़ियाँ को बुलाकर सजाने को कहती है। बालगीत के द्वारा माता अपने लाल के प्रति प्रेम जताती है। उनकी मान्यता है कि चिड़ियाँ कुछ अन्न खायेगी और बालक उसे खायेगा तो जल्द बातें करने लगेगा। माता के हृदय के स्नेहपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति है।

 द्वितीय गीत 'चाल मारी ढोलकी ढ़माढ़म' में छोटे-छोटे गीतों में बच्चे अपना मन बहलाने के लिए खेल प्रारंभ करने से पूर्व अक्कर-बक्कर जैसे गीत गाते हैं। मेह राजा को आने का निमंत्रण देते हैं।

 तृतीय गीत 'गणगौर पूजूं गणपति ये' में बालक स्वप्न-सृष्टि में खोये हुए निर्दोष भावों से गणपति का पूजन करके अपनी कल्पनानुसार वर माँगते हैं।

**गुजराती बालगीत**

(1) हां, हो, हां हो

कोने घेर घेरिया नाचे रे भाई भाई

आपवुं होय तो आपजो ला भाई भाई।

जा बजारमां जई घुम घेरिया

अहीं तहीं केम घुमे रे लोल।

अल्या मोटा शेठिया आपवुं होय तो

आपो ला शेठिया, शेठाणीने कव

घेरिया नाचे रे भाई भाई

होली नुं कंई तो आपोला भाई भाई

 हां, हो, हां हो...[[11]](#endnote-12)

(2) मा ना लाडकवाया

माना लाडकवाया केरी पा पा पगली पडती जी।

पगलीए पगलीए भरती प्रेम-तरंगी चडती जी।

बापुजीना बेटिडयानी पा पा पगली पडती जी।

पगलीए पगलीए पांखो पुरुषातननी जडती जी।

वीरा केरा वीरलियानी पा पा पगली पडती जी।

पगलीए पगलीए ढगली जाई-जाईनी जडती जी।

देवोना दीधा दीवानी पा पा पगली पडती जी।

पगलीए पगलीए जोत जग अजवाळत जडती जी।

विश्वेश्वरना वारस केरी पा पा पगली पडती जी।

पगलीए पगलीए प्रभुताना जगदीश्वरनी जडती जी।[[12]](#endnote-13)

(3) आव रे वरसाद

आव रे वरसाद। घेवरियो परसाद।

उनी उनी रोटली ने कारेलानुं शाक।

मेघ मेघर जा। दिवालीना बाजरा ताजा।

\* \* \*

वरस रे वादळी ऍ

वीरना खेतरमां

(तो) बंटीनुं ढेबरूँ

पेनना पेटमां।

\* \* \*

आ शी तमारी टेव। रे हो मेघराजा।

पेली विजळी रिसाई जाय चे

पेली बाजरी सुकाई जाय छे

पेली जारोनां मूल जाय छे

हो मेघराजा। आ शी तमारी टेव।[[13]](#endnote-14)

(4) मोर

मारे आंगण अमरत आंबो रोपियो,

मारे आंगण टोडले कोर्या मोर,

 वधावो मारे आविया.

मारे आंगण सहियर पारेवां घूघवे,

मारे आंगण बेठो कळायल मोर,

 वधावो मारे आविया.

मारे आंगण सोनानो सूरज ऊगियो,

मारे आंगण मोती पूर्या चोक,

 वधावो मारे आविया.

\* \* \*

मारे आंगणिये तळशीनो केरो

तळशीने केरे रूडा राम रमे.

रूडा राम रमे, मोर मोती चणे,

मोर मोती चणे ढेल्युं ढूंगे वळे.

ढेल्युं ढूंगे वळे लीलो चमरो ढळे.

लीलो चमरो ढळे, किया भाईने गमे

राजुभाईने गमे, एनो मोभी परणे.[[14]](#endnote-15)

(5) सैयर आवो ने रमवा

एक पक्ष - सैयर आवो ने रमवां,

दूसरा पक्ष - अमने रमतां न आवडे,

एक पक्ष - अमे रमीने बतलावीए,

दूसरा पक्ष - अमने रमतां न आवडे,

एक पक्ष- सांकल्लानी जोड्य छे,

दूसरा पक्ष- एमां मारो भाग छे,

एक पक्ष- में बोलावी केम ना आवीय़

दूसरा पक्ष- एटली मारी भूल छे।

एक पक्ष- टीलडीनी जोड्य छे,

दूसरा पक्ष- एमां मारो भाग छे,

एक पक्ष- में बोलावी केम ना आवीय़

दूसरा पक्ष- एटली मारी भूल छे।

एक पक्ष - सैयर आवो ने रमवां,

दूसरा पक्ष - अमने रमतां न आवडे,[[15]](#endnote-16)

(6) मोर नो टले

मोर तो टले अंगण नो खले,

पनिंगया जानी मोर नो टले,

मारे जा गुडा धरिया जालीडा,

पनंगिया जानी मारे नो टले।

मारे ज्युं अखियुँ धरियाज्युं मच्छ्युँ,

पनंगिया जानी मोर नो टले ।

मोर जी मानी खणी बई इनजी नानी,

पनंगिया जानी मोर नो टले ।।[[16]](#endnote-17)

सारांश

 गुजराती बालगीत 'हो हो होली लाल' में बच्चे अपनी बाल-सहज चेष्टाएँ करके घर-घर घूमते हैं। होली से पहले घर-घर घूमकर पैसे माँगने का वर्णन है।

 दूसरे गीत 'माना लाडकवाया केरी पापा पगली पडती जी' में वात्सल्य-मूर्ति माता अपने बालक की खुशी में अपनी खुशी समझती है। भाग्य उज्जवल बनाने की मनोकामना करती है।

 तीसरे गीत 'आव रे वरसाद घेवरियो परसाद' में वर्षा के आगमन का स्वागत बच्चे करते हैं। बच्चे निर्दोष भाव से मेघ को आनंद से बुलाते हैं। उनके पास चो लड्डु, रोटी, करेले की भाजी आदि उपहार हैं, मेघ स्वीकार करते हैं।

चौथे गीत 'मारे आंगण अमरत' में वर्षारानी के आगमन से सृष्टि तृप्त हुई। प्रकृति के श्रृंगार-रूप मोर आता है तो आंगन हँसने लगता है। प्रकृति की हर चीज तितली, मोर, सभी बच्चे-बड़ों को आनंद देते हैं। बच्चे कल्पना की पंखों से उड़ने लगते हैं। मोर की तुलना समुद्र की लहरों, मछली, सीप आदि से की है। बच्चे प्रकृति-प्रेमी हैं।

पांचवे गीत 'सैयर आवो ने रमवा' में कुमार-कुमारिकाओं के मनोभावों की सृष्टि खड़ी हुई है। बच्चे कुछ बड़े होते ही काल्पनिक दुनियाँ से वास्तविक दुनियाँ की ओर आते हैं। दो टोली में खेल खेलती कन्याएँ अपने स्त्री-सहज स्वभाव से आभूषणों की इच्छाएँ व्यक्त करती हैं। कुमार उनकी इच्छाओं के प्रत्युत्तर 'हाँ' में देते हैं। इस प्रकार बच्चे परियों के देश से वास्तविक जगत में प्रविष्ट होते हैं।

**गुजराती और राजस्थानी बालगीतों की तुलनाः**

**(क) समानता**

1. दोनों बालगीतों में बालकों की काल्पनिक सृष्टि का निरूपण हुआ है।

2. दोनों में खेल शुरू होने से पूर्व के वर्णन-गीत हैं।

3. दोनों प्रदेश में एकरूपता होने के कारण ग्रामीण विभागों में खेलने की सुविधा न होने से प्रकृति के तत्वों को साधन बनाकर खेलते हैं।

4. दोनों में मेघ राजा को निमंत्रण देकर हृदय के कोमल भावों का निरूपण हुआ है।

**(ख) असमानता**

1. राजस्थानी बालगीतों की संख्या गुजराती गीतों की अपेक्षा कम है।

2. राजस्थानी बालगीतों में काल्पनिक तत्वों का अभाव-सा है जो गुजराती गीतों में अधिक है।

3. राजस्थानी में होली बाल-गीत नहीं है, जो गुजराती में है।

**निष्कर्ष**

 प्राचीन युग से लेकर वर्तमान तक बालगीतों में अलौकिक दुनियाँ की काल्पनिक सृष्टि हुई है। गुजराती और राजस्थानी बालगीतों में बच्चों के मानसिक एवं काल्पनिक भावों से कल्पना के परों के सहारे नयी दुनियाँ में खोये हुए पाते हैं। इस प्रकार बालगीतों से बाल-मानस की नींव मजबूत होती है।

 भविष्य में बच्चों के मानसिक विकास में सहायक होते हैं ये बालगीत।

प्रकरणः तीन

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः हास्य गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी हास्य गीत

सारांश

* गुजराती हास्य गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी हास्य गीतों की तुलना : समानता-असमानता
* निष्कर्ष

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः हास्य गीत**

**प्रस्तावना**

 हास्य स्वस्थ मन एवं शरीर की उत्तम औषधि है। लोकगीतों की विविध सृष्टि में हास्य-गीत बिखरे तारों की तरह समाज-जीवन में पाये जाते हैं। हास्य उद्भासित आनंद की अनुभूति है जो मौलिक रूप में होती है। मौलिक हास्य थके व्यक्ति को आनंद के उन्मादित सागर में डुबो देता है।

 मनोवैज्ञानिक दृष्टि से हास्य से क्रोध, थकान दूर होते हैं जो मानसिक विकास में लाभकारी होता है। गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में हास्य एवं व्यंग्य के गीत पाये जाते हैं जिन्हें अध्ययन के अन्तर्गत देखना आवश्यक है।

**राजस्थानी हास्यगीतः**

(1) काला पति

मैं सोने का तारा ननदिया, मैं रेशम का लच्छा ननदिया।

मेरे ससुर के पाँच थे लड़के, मैं काले को ब्याही री ननदिया।।

दिल्ही शहर में लागी बजरिया

काले को बेचन जा री ननदिया

ज्वार-बाजरी सब कोई लेवे

काले को कोई न लेवे ननदिया।

 मैं से का तारा ननदिया..

बेच-बेचकर घर को लौटी

पीछे मटकता आवै ननदिया

मेरे पिछवाड़ी बबूल का पेड़ है

काले को बांधन जा री ननदिया।

बांध बूंध जब घर को लौटी, पीछे भागता आया ननदिया।

कोठे ऊपर सात कोठरी

काले को बंद कर आयी ननदिया,

बारह बरस पीछे कोठा खोला

काले से गोरा पीया ननदिया।

मैं सोने का तारा ननदिया..[[17]](#endnote-18)

(2) मक्का

मक्का वैरण काहे सूं बनी,

जयपुर के बाजार में मक्का को गाडो आयो जी।

मक्का का दयोजी साईना सरदार

मक्का वैरण काहे सूं बनी।

हेगूं को मसरके पीसूं जयां रो हरडाट।

मकिया वैरण ऐसी गूंजै बादल से घरडाट

मक्का वैरण काहे सूं बनी।

गजा की मैं चार पोंची पीसां दुःखै घना हाथ

मकिया वैरण काहे सूं बनी।

गेहू की मैं दोय खायी, मक्का की मैं एक

मकिया की रोटी से दुःख्यो रात को पेट घणो रे,

मक्का वैरण काहे सूं बनी।।[[18]](#endnote-19)

(3) हिरनी

म्हारा घर पाछे खडो तूमडो

तोड़ बगारी भाजी जी ।

अंडो तोड्यो बंडो तोड्यो

तो नी सीजी भाजी जी ।

आखा गाम छैना चोर्या

तो नई सीजी भाजी जी ।

छोटा देवर की टांग तोड़ी

बड़ा जेठ की मूंछ कतरी

सासरो डाकी जीभण बैठ्यो

नई परेंड पाणी जी

आगे तो म्हारी चले जेठाणी

पाछे म्ह देराणी जी

पग रपट्यो म्हारी पायल टूटी

म्हैं जाणूं म्हारी कम्मर जी

कमर तो म्हारी राम बजई

फूटी कोरी गागर जी।[[19]](#endnote-20)

(4) डगलफोड़ भरतार

मल्यो डगल-फोड़ भरतार, भाग में कांई रे लिख्यो।

थाली तीन राबड़ी पीवे, नौ कांदा छै रोटी।

दो लोट्या पाणी का गटकै, किस्मत मारी खोटी।

भाग में कांई रे लख्यो।

न्हावे धोव कदै न बैरी, रहे सूगलो भारी।

ई को बिगड्यो डौल देखकर, काया बलगी म्हारी।

भाग में कांई रे लिख्यो।

डील उघाड़ो - पगां उबाणो, धोती गोडा तांई।

असा बलम के पल्ल पड़ गई, बिरथा गई पढ़ाई।

 भाग में कांई रे लिख्यो।

सारांश

 राजस्थानी हास्य गीत 'मैं सोने का तारा ननदिया' में हास्य के साथ व्यंग्य भी है। एक नारी अपने मनोभावों द्वारा दयनीय व्यथा मनोरंजक ढंग से व्यक्त करती है। अनमेल विवाह से उत्पन्न स्थिति से नारी को समाज में कितना सहन करना पड़ता है - इसका वर्णन है।

द्वितीय गीत 'मक्का वैरण काहे सूं बनी' में नारी अन्तर् मन की वेदना मक्का को प्रतीक बनाकर व्यक्त करती है। सामान्य स्थिति वाले गेहूं कम खरीद करने के कारण मक्का खाते हैं। सख्त अनाज होने के कारण जो कष्ट होता है, उसका वर्णन है।

तृतीय गीत 'म्हारा घर पाछे खड़ो तूमड़ो' में घर के पीछे तूमड़े (एक सब्जी) का पेड़ है जिसकी भाजी खाने के लिए परिवार के सभी उसे तोड़ने का प्रयत्न करते हैं। भाजी प्रयत्न करने पर भी पकती नहीं है। इससे सभी को कष्ट होता है। इस गीत में हास्य रस का बहुत ही सहज भाव में निरूपण हुआ है।

चौथे गीत 'मिल्यो डगलफोड़ भरतार' में नारी-हृदय का आर्तनाद वेदनापूर्ण है। नारी सहनशीलता की मूर्ति होने के कारण अनमेल विवाह भी दूसरों की खुशी के लिए करती है। इसमें संस्कारहीन पति का वर्णन है। नारी की करुणता का चित्रण है।

**गुजराती हास्यगीत**

(1) पेटसुर

आईयल मां पेट दुःखे, धोरो पी बाई धोरो पी।

जीजल मां पेट दुःखे, धोरो पी बाई धोरो पी।

हुं चेती धोरो खा, कोय न चे जलेबी खा।

हुं चेती धोरो खा, कोय न चे हलवो खा।

आईयल मां पेट सुर, धोरो पी बाई धोरो पी।

हुं चेती धोरो पी, कोय न चे भजीया खा।

हुं चेती धोरो पी, कोय न चे ढोकरा खा।

हुं चेती धोरो पी, कोय न चे सीरो खा।

आईयल मां पेट सुर, धोरो पी बाई धोरो पी।

सस चेती धोरो पी, धोरो पी,

 नरान चेती हलुवो खा।

आईयल मां पेट सुर, बाई धोरो पी बाई धोरो पी।[[20]](#endnote-21)

(2) दांपत्यपरक गीत (संयोगात्मक)

रे आज झीणा मारुजीनी झीणी पछोडी पथराय रे।

साग सीसमनो ढोलियो रे, ढोलिये सूता कोण रु भाई राजा रे?

 साजन मोरी।

वावलियो ढोळे रे कोण वहु राणी रे? लळी लळी आवे निंदरडी,

वावलियो ढोले ने वात वलोवे हाथ कंकण रणझणे रे,

 साजन मोरी।[[21]](#endnote-22)

(3) पांच मणी को लाडवो (हास्य गीत)

पांच मणीको लाडवो रे,

 पीरस्यो वेवाईने भाणे, मणीको लाडवो रे।

जमतां ते बैयर सांभरी रे,

 घाल्यो छे, ढींचण हेह्य, मणीको लाडवो रे।

चोरे जातां छूटी पड्यो रे,

 छोकरांए कर्यो फजेत मणीको लाडवो रे।[[22]](#endnote-23)

(4) वहुवारुनी होंश (बहू की अभिलाषा)

लीली लीली ईंढोणी हीरनी रे,

मने पाणी भर्यानी गणी होंश रे,

 लीली... रे।

सांकडी शेरीमां ससरो सामा मळ्यां रे,

मने लाज काढ्यानी घणी होंश रे। लीली.

 सांकडी शेरीमां जेठजी सामा मळ्या रे,

 मने झीणुं बोल्यानी घणी होंश रे। लीली.

सांकडी शेरीमां जेठाणी सामा मळ्यां रे,

मने ठेकडी कर्यानी घणी होंश रे। लीली.

 सांकडी शेरीमां देरजी सामा मळ्या रे,

 मने हस्या बोल्यानी घणी होंश रे। लीली.

सांकडी शेरीमां वालम सामा मळ्या रे,

मनो मोढुं मलकाव्यानी घणी होंश रे। लीली. [[23]](#endnote-24)

**सारांश**

 प्रथम हास्य गीत 'आईयल माँ पेट दुखे, धोरो पी' में हास्य रस का बहुत सुन्दर निरुपण हुआ है। एक नारी संयुक्त परिवार में रहते हुए मिठाई आदि चीजें नहीं खा सकती। पेट दुखने का बहाना करके विविध चीजों का वर्णन है। मां-सास आदि मना करती हैं। हास्य के साथ-साथ व्यंग्य भाव भी है।

 द्वितीय गीत 'रे आज झीणा मारुजी' में हास्य एवं मजाक का निरुपण हुआ है। तकिये को बच्चे का प्रतीक बनाकर विवाह की रात को जगाने के लिए मनोरंजन की चेष्टाएँ कर हंसाने का प्रय़त्न किया गया है। यह गीत अभिनय के साथ गाया जाता है। इसमें हास्य रस अधिक प्रस्फुटित होता है।

 तृतीय गीत 'पांच मणीको लाडवो' समधिजी की थाली में परोसा गया। उसे खाते ही उन्हें अपनी पत्नी का स्मरण हो आया और उन्होंने लड्डु पत्नी के लिए घुटनों के नीचे दबा दबालिया, परंतु घर जाते समय चौराहे पर लड्डु चूर-चूर हो बिखर गया, जिससे आसपास के लड़कों ने ठिठौली की।

 चौथे गीत 'लीली लीली ईंढोणी हीरनी रे' में बहू को पानी भरने की बड़ी चाह है। संकरी गली में ससुरजी मिले, घूँघट निकालने की बड़ी चाह। आगे जेठानी मिली उनसे ठिठोली करने की चाह है। देवरजी से भी हँसी-मजाक की चाह। और अपने प्रियतम को देख मुस्कान देने की बड़ी चाह है।

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में हास्य गीत की तुलना**

(क) समानता

1. दोनों हास्य गीतों में समाज में अनमेल विवाह के कारण नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन है।

2. दोनों के गीतों में हंसाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

3. दोनों के गीतो में हास्य के साथ-साथ व्यंग्य भी है। मूल भावना व्यंग्य की है।

(ख) असमानता

1. राजस्थानी हास्य गीतों में पति के हृदय की मनोव्यथा नहीं मिलती है जबकि गुजराती हास्यगीतों में यह उपलब्ध है।

**निष्कर्ष**

 हास्य गीतों की धारा निरंतर बहती रही है। हास्य गीत में हास्य के द्वारा व्यंग्य का निरुपण हुआ है जो नारी-हृदय के भावों की अभिव्यक्ति है। नारी-हृदय अगणित दुखों को चुपचाप सह लेती है। गुजरात और राजस्थान के कुछ हिस्सों में में आज भी अनमेल विवाह होते हैं। राजस्थान में कई जगह लड़की पंद्रह साल की और लड़का पाँच साल का होता है ताकि वह संभाल सके। संयुक्त परिवार हो और सुंदर नारी के साथ कुरूप पुरुष, या सुंदर पढ़े-लिखे पुरुष को संस्कारहीन स्त्री से पाला पड़ता है। स्त्री-पुरुष दोनों इज्जत के कारण जीवन चलाते हैं। मन से दुःखी जीवन से ऐसे गीत व्यक्त होते हैं जो समाज में हास्यास्पद बनते हैं।

 इस प्रकार गुजराती तथा राजस्थानी लोकगीतों में हास्य रस का पुट मिलता है जो हास्य गीतों के द्वारा प्रकट होता है।

प्रकरणः चार

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीत : वीर-गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी वीर-गीत

सारांश

* गुजराती वीर-गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी वीर गीत की तुलना :

समानता-असमानता

* निष्कर्ष

गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः वीर गीत

प्रस्तावना

 वीर रस की धारा लोकगीतों में प्राचीन से अर्वाचीन युग तक प्रवाहित होती रही है। वीर रस के प्रधान तीन भेद हैं- युद्धवीर, दयावीर और दानवीर। तीनों में युद्धवीर श्रेष्ठ है। वीरता अलौकिक गुण है। वीरता अंतर् मन से स्फुरित होती है। वीर बनाये नहीं जाते, अपने-आप वीरता स्फुरित होती है।

 आत्म-रक्षा के हेतु शरीर की पुष्टि करने वाला प्रशंसनीय हो सकता है। वीर हमेशा अत्याचार, अन्याय एवं दुष्टों का नाश करने हेतु तैयार रहता है। प्राणों की बाज़ी लगाकर शहीद हो जाता है। ऐसे वीरों की स्मृति के प्रतीक बनाकर पूजा होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शिशु अवस्था में लोरियाँ उनके मानसिक विकास में बहुत बड़ा योगदान देकर वीरता की सहायक बनती हैं। अतः गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में प्राप्त वीरता के गीत दृष्टव्य हैं।

राजस्थानी वीरगीतः

1. भोमियाजी का गीत

पोळिया में बैठोड़ा भाभो सा बरजिया,

मत जाओं कंवर झगड़ा री लार (ए),

भोमियाजी झगडे जूंजिया ।।1।।

आंघोड़ी कमरां ओ भाभोसा नहीं खोलो

लाजै म्हारी जर्णी रो दूध ए

हिन्दवाणी झगड़े जूंजिया ।।2।।

रसोड़े बैठोड़ा बुजीसा बरजिया

मत जाओ आया लड़ाई री लार - ए,

अन्नदाता झगड़े जूंजिया ।।3।।

आंघोडी कमरां ओ बुजीसा नहीं खेलो

लाजै म्हारो लाडकियो मोसाल

भोमियाजी झगड़े जूंजिया ।।4।।

सीस (ए) पडे ने धड़ सूं जूंजिया

बहगा-बहगा कसूमल रा खाल ए,

 हिन्दवाणी झगडे जूंजिया ।।5।।[[24]](#endnote-25)

1. गूगोजी (गोगाजी)

गोगो सूत्यो बड़ तळे, सूत्यो रे सुख भर नींद,

वारी म्हारा गोगा भल रहिवो।

माय जगावै गोगोजी की उठ उठ ओ म्हारा गोगा लाल।।

मोदा पड्या बिलोबण रीती रे थारी जाय छछियार।

सूत्यो गोगो ओदक्यो टूट्या रे चारुं साल। वारी म्हारा...

ल्याओ ल्याओ पांचू कापड़ो, ल्याओ ल्याओ रे म्हारा पांच हत्यार।

हरजन मारयो वड़ तलै, सरजन रे सरवरिया री पाळ।

मारया रे मासी रा लाल।।[[25]](#endnote-26)

1. पाबूजी

ए पाबूजी राठोड़ा ने केसर छोड़ी जी ओ,

सुंदेही तोलेगाओ,

ए सुरग पधारया जी रे बै तो ओ,

छतरपती जी ओ, कुमलागो ए।

एखांडो तो जीत्यो रे खीचीड़ी रो ओ,

दिंदवाला तो जी ओ,

ए जुगड़ो जीत्या छै आप तो धणी तो ओ,

बे तो जी रे पाबुजी ओ। कुमलागो ए।[[26]](#endnote-27)

सारांश

 प्रथम गीत 'पोलिया में बैठोड़ा भाभोसा बरजिया' में वीर-पुरुष को अनेक बाधाएँ आने पर भी अपनी माता का दूध और कुल की प्रतिष्ठा के लिए प्राणों की बाजी लगा देते हैं। इसमें राजपूत जाति के वीर भोमिया जी की वीरगाथा का वर्णन है जो राजपूतों का मुख्य गुण-धर्म है।

 द्वितीय गीत राजस्थान के प्रख्यात वीर ‘गोगाजी’ पर हैं, राजस्थान में गोगाजी को सांपो के देवता या जाहरपीर के रूप में भी जानते हैं। इस गीत गोगाजी की वीरता का वर्णन अरजन और सरजन की लोककथा के माध्यम से हुआ है।

 तृतीय गीत गायों की रक्षा हेतु अपने प्राण का बलिदान देने वाले पाबूजी राठौड़ का वर्णन किया हुआ हैं। गायों की रक्षा में वीरगति को प्राप्त हुए पाबूजी को लोग देवता तुल्य मानते है।

गुजराती वीरगीत

(1) शूरवीर मालजी

डुंगरानी खडकीमां रे'तो रे, नाना मालजी,

 तुं कुंखेनो छे वांझीओ.

धाड्यां उपर धाड्यां चाले, नाना मालजी,

 तुं कुंखेनो छे वांझीओ.

पांसहें तरवारो भेळी करो, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

छहें बंधुको भेळी करो, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

पांसहे कामेंठी भेळी करो, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

सारहें ढालडीओ भेळी करो, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

धड दईने धाड हबाडो, नाना मालजी

 तुं अंगनो छे एकलो.

हकनीआ वसारो, नाना मालजी,

 तुं कुंखेनो छे वांझीओ.

डाबी करांळे कळी नाग, नाना मालजी,

 तुं कुंखेनो छे वांझीओ.

जमणी बोले रूपारेल, नाना मालजी,

 तुं कुंखेनो छे वांझीओ.

माठां हकनीआं थयां, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

धाड्यां पर धाड्यां भेळी, नाना मालजी

 तुं अंगनो छे एकलो.

बंधुकोना गाजे झीणा मेघ, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

तरवारोनी वीजळी झबुके, नाना मालजी

 तुं अंगनो छे एकलो.

हळीआनां वरहें झीणा मेघ, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

माथां पडे ने घोडां लडे, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.

लोहीना खार सालें, नाना मालजी,

 तुं अंगनो छे एकलो.[[27]](#endnote-28)

(2) कचरो मेर

बिलेसर तारा बेसणां, कचरा, खंथाळे तारो वास,

दादले असराणे मारी रे नाख्यो, वांसे भी लूंट्यो माल

 माणीगर मारवो नूतो, राजेसर राखवो हुतो।

काँधो पोढाड्यो पारणे, कचरा, लूखा शरमणना लाड,

जेठी इडरणी ध्रुस्के रुए, मार्यो कोडीलो कंथ,

 माणीगर................... हुतो।

झांका कचराना डायरा, कचरा, झांकी कचरानी माय,

राणी बेनी बा ध्रुस्के रुए, मार्यो पसलियात वीर,

 माणीगर................... हुतो।

हाटे ने हाटे वाणिया रुए, ने सीवतां रुए सई,

वणतां वणतां वांझा रुए, ने चोरे रुए चारण भाट।

 माणीगर................... हुतो।

पाणीशेरे पाणियारियुं रुए, ने बेडलां लोड्युं खाय,

सारथिया, तारा सीमाडे रुए, ने झंतरी झोका खाय,

 माणीगर................... हुतो।

(3) सुरतीया जातजा जुमला

अरे सुरतीया तुं जातजा जुमला

अमर रख्यो नाम।

वडोदरा तो के न गम्यो

 ने दिल्ही में रही को।

 सुरतीया जातजा जुमला।

मद्रास जो डाक्टर न गम्यो,

 ने खंडन में रही को,

 सुरतीया जात जा जुमला।

भाई आंणा मोकले धरीया लोडाडे,

 अरे सुरतीया जातजा जुमला।

धेलो धींगाणो बड़ोदरा क्यों ने,

 मुंबई में रख्यो नाम।

 सुरतीया जातजा जुमला।

भणे आंजी चकला मोकले,

 धरीया मोजा खाय।

 सुरतीया जातजा जुमला।[[28]](#endnote-29)

सारांश

 प्रथम वीर गीत 'शूरवीर मालजी, नाना मालजी' में शूरवीर मालजी की बलिदान की गाथा है, जो आज भी गुजरात में बड़े आदर के साथ गाया जाता है। स्वार्थ के लिए आत्म-समर्पण करने वाले को कोई याद नहीं करता। परमार्थ के लिए बलिदान देने वाले की वीरता का वर्णन इसमें है।

 द्वितीय वीरगीत 'बिलेसर तारां बेसणां' में कचरो मेर की गाथा है जो बरडा प्रदेश में खांभादर गाँव का था (मेर जाति)। वह गांव की स्त्रियों के संग बिलेसर के मेले में जा रहा था। रास्ते में लूट के इरादे से आए मुसलमानों से वह अकेला ही लड़कर अपने प्राण गँवाता है। ऐसे ग्राम्य वीर के लिए पूरा लोक समुदाय शोक निमग्न हो जाता है। पनिहारिनों के भरे घड़े डोलने लगते हैं, कुदरत प्रकृति भी आँसू बहाने लगती है उस समय ऐसी वीरपूजा प्रत्येक गाँव में सजीव थी, विद्यमान थी। इनके रचयिता तूरी जाति के लोग हैं।

 तीसरे वीरगीत 'सुरतीया जातजा जुमला' में प्राचीन काल से वर्तमान युग तक जो घटनाएं घटित होती रही हैं, लोकगीतों में उनका वर्णन मिलता है। सूरत शहर के निवासी डाकू के पराक्रमों की गाथा का वर्णन है इस गीत में।

गुजराती और राजस्थानी वीर गीतों की तुलना

(क) समानता

1. दोनों भाषाओं में वीरगीतों में अपने कुल और देश-धर्म की रक्षा के लिए आत्म-समर्पण करने की भावना का वर्णन है।

2. दोनों में युद्ध में जाने से पूर्व उत्साहपूर्वक साधनों से युक्त योद्धा सुशोभित होकर जाते हैं।

3. युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त करने वालों की याद में स्मारक या समाधियाँ बनाकर उनकी पूजा करते हैं।

(ख) असमानता

1. गुजराती वीरगीतों में डाकू जो शहरो में डाका डालकर लूटता है, उसकी वीरता का भी वर्णन पाया गया है, जो राजस्थानी वीरगीतों में नहीं है।

निष्कर्ष

 वीरता एक ऐसा अद्भुत तत्व है जिसके बल से वीर-पुरुष अनेक युद्ध-संग्राम जीत सकते हैं। वीर-पुरुष हमारे बीच जीवित हो या वीरगति प्राप्त की हो, सभी उनकी वीरता को प्रणाम करते हैं। वीर अपने जान की बाजी लगाकर मरते हैं, वे संसार में अमर बन जाते हैं। वीर-पुरुषों की वीरता के भाव गुजराती और राजस्थानी गीतों में बहुत ही हृदयस्पर्शी हैं। वे वीरता की याद देकर वीर बनने की प्रेरणा देते हैं। सभी गीतों में वीर युद्धभूमि में कैसी वीरता दिखाते हैं, उनकी तेजपूर्ण भावना प्रकट हुई है।

प्रकरणः पाँच

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीत : विवाह गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी विवाह गीत

सारांश

* गुजराती विवाह गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी विवाह गीतों की तुलना : समानता-असमानता
* निष्कर्ष

गुजरात और राजस्थान के लोकगीतः विवाह गीत

प्रस्तावना

 विवाह से सामिजक जीवन का प्रारंभ होता है। प्राचीन काल से गृहस्थाश्रम का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विवाह दो आत्माओं का संगम है जो पवित्र माना गया है। विवाह के बाद पति-पत्नी के हृदय एक होकर एक-दूजे के लिए प्राण तक न्यौछावर करने की कामना करते हैं। दाम्पत्य जीवन-रथ के दो पहिये होने के कारण जीवन-नौका पार होती है। पति-पत्नी एक-दूसरे की खुशी में ही अपनी खुशी समझते हैं। सुख-दुःख में दोनों परस्पर हौसला बढ़ाते हैं।

 विवाह का अर्थ है त्याग, समर्पण और विश्वास। परिवार का बोझ दोनों समान रूप से उठाते हैं। विवाह पूर्व श्रृंगारिक चेष्टाएँ होती हैं। विवाह के बाद सरल एवं शांत जीवन प्रारंभ होता है। निःस्वार्थ भाव से परस्पर समझौता करके जीवन की अनेक समस्याओं को सुलझाते हैं। असफल विवाह-जीवन में गलतियों को सुधारने से जीवन सफल बन सकता है। विवाह को लाटरी की भी उपमा देते हैं।

 वैवाहिक जीवन का प्रारंभ बड़ा ही उत्साहजनक होता है। बन्ना-बन्नी के रूप एवं गुणं का वर्णन आदि से मन को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

 मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो हरेक लोकगीत में भावों की अभिव्यक्ति वास्तविक तथा प्रेरणादायक होती है। विवाह जीवन से दोनों में मानसिक तृप्ति होती है और जीवन जीने के लिए उत्साह मिलता है।

विवाह-गीतों में आनंद एवं उल्लास के साथ हास्य का भी समावेश पाया जाता है। अतः इस दृष्टि से गुजराती और राजस्थानी विवाह-गीतों का अवलोकन किया जा रहा है।

राजस्थानी विवाह गीत

(1) मारा वरद विनायक

चालो विनायक आपां जोसिडा के चालां,

तो आछा आछा लगन लिखवां ओ राज,

मारा वरद विनायक ।

चालो विनायक आपां सोनिड़ां के चालां,

तो आछा आछा गेंणला मूलावां ओ राज,

 मारा वरद विनायक ।

चालो विनायक आपां बजाजी रे चालां,

तो आछा आछा कपड़ा मोलावां ओ राज,

मारा वरद विनायक ।

चालो विनायक आपां साजनियाँ रे चालाँ,

तो आछी आछी बनड़ी मोलावां ओ राज,

मारा वरद विनायक ।

दून्द दून्दालो ओ सूंड सूंडालो,

छोटी-सी पीड्याँ अज नगारो ओ राज,

मारा वरद विनायक ।[[29]](#endnote-30)

(2) बधावा

पांच बाधवा म्हारे आविया,

 पांचो की नवी-नवी पोल,

सुणो सुगणां मारुजीं म्हारा,

 बाईसा हट लाग्या मोती पोमचो ।

पेलो वधावे म्हारा बाप को,

 दूजो म्हारा सूसरा जी की पोल,

अगन्यों बधावो म्हारा वीर को,

 चौथो म्हारा जेठ सा की पोल,

पांचवो बधावो चाँदण चौक को, बैठ्या छै देवर जेठ,

छठी बधावो म्हारी कूँख को, जाया छै लाडण पूत ।

सातवो बधावो म्हारा रंग म्हैल को,

पीढ्यां छै, बाईसा का वीर,

यो लो बाईसा म्हारा पोमयो, फेर मत आझ्यो म्हारा वीर,

सुणो सुगणां मारु म्हारा बाईसा हट लाग्या मोती पोमचो।[[30]](#endnote-31)

(4) मेहंदी

म्हारा घरां रे कंवर बनारो घाव मेंहदी रावणो,

मेंहदी मंगाई सोजन शहर से म्हारा रंग रलिया,

 लाड़ा हरिया हरिया मान मेंहदी रावणीं।

मेंहदी पिसाई पाट में रे

म्हारा रंग रलिया लाड़ा नन्ही पोत छणाय मेंहदी रावणीं।

रजत कटोरे मेंहदी घोघसी रे म्हारा रंग रलिया लाड़ा

चोखो लोच अणायं मेंहदी रावणीं।

मावज थांकी चतुर घणीं रे म्हारा रंग रलिया लाड़ा

मांडेली दोनूं हाथ।

मेंहदी मांडा शकुन घणा रे म्हारा रंग रलिया लाड़ा

निरखे घर का लोग मेंहदी रावणीं।[[31]](#endnote-32)

मेंहदी

मेंदी दीजो भंवरलालजी सा बाली के हाथ

 प्रेम रस मेंहदी रावणी।

भंवरलाल जी सा पूछे, गोरी ने बात,

कूणी माण्या ऐ सवागण थारा हाथ.

 प्रेम रस मेंहदी रावणी।

बाई नणदल ऐ माण्डां मारा हाथ।

 प्रेम रस मेंहदी रावणी।

थारा हाथ मारा हिवड़ा ऊपर फैर,

 मारा जिवड़ा ऊपर फैर।

मारा भंवर पटापट फैर,

 प्रेम रस मेंहदी रावणी।[[32]](#endnote-33)

(5) बरात

दादा सा रा ऊंचा नीचा म्हेल,

 पानां ओ फूला छाईरयों जी।

ओ जी ज्यां बढ़ देखूं मूं बरात,

बरात देख्या भात रांधूँ, भात रांधूं जी।

हाथीडा हजार लाया, घोड़ेला पचास लाया।

ओजी जान्या रो छैय न पार,

बियाई जी कुण जाणे, कुण जाणे जी।

हसतो ने ढाणें बांधूं, घोड़ला ने पायगे बाँधूँ।

ओजी जान्या ने दो जानीवास, बियाई ने खेंचो बांधो जी ।

हसनी ने लूंद देसां, घोड़लां ने दाणो देसां,

ओजो जान्या ने खांड न भात,

 बियाई सा ने मांड पावो जी।[[33]](#endnote-34)

(6) बनड़ी हंस उड़ाये

दादासा मेलां नीचे बनड़ी हंस उड़ावे सा ।

बनड़ी हंस उड़ावे बाँकी माता कामण गावै सा ।

पाव की पसेरी बणाई दूँ कागज का दो पलड़ा सा ।

मण्डप नीचे तोल लगाई देवूं जान्या ने सुलवावो सा ।

बारा मण को बामण उतर्यो, बीस मण को नाई सा।

तीस मण का देवर उतरयाँ, अस्सी मण का जेठ सा।

सौ मण का ब्याई जी उतर्या, कुसुमबाई का सुसरा सा ।

बनी का बनासा ने तोल्या, फूल बराबर उतर्या सा।[[34]](#endnote-35)

(7) बनड़ो नहाणे का

बनड़ो न्हाय धोय बैठो बाजोट कांई आमण घूमयो,

बनड़ा कांई मांगो सरपाव कांई सिरको सेवरो ।

म्हे तो नहीं मांगा सिर पाव नहीं सिर को सेवरो,

म्हे तो मांगा साजनियां री घीय बा म्हारे चित चड़ी ।

बनड़ी न्हाय धोय बैठी बाजोट उण मुण धुन में,

बनड़ी कांई मांगे गल हार कांई दाती चूड़ली,

म्हे तो नहीं मांगा गलहार नहीं दांती चूड़ली,

म्हे मांग साजनिया री जोध बे म्हारे चित चड़या।

बनड़ा पीठड़ली दिन दिन चार रुव रुव जीमल्यो,

बनड़ा मेंहदडली दिन चार हाथ रचायल्यो,

बनड़ा काजलिया दिन चार नैण रवायल्यो ।[[35]](#endnote-36)

(8) राईवर

राईवर सूता जी सुखभर नींद जगाया जाग्या नहीं जी ।

बना का दादासा जाय जगाय, पोता हट कई लाग्यां जी ।

दादासा खरचो सी लाख दो लाख तेजण लावो होलती जी ।

घोड़ी ने चणा की दाल चबाय,

 रंगीली में रंग घणों जी ।

घोड़ी ने साठां की बाड़ चुसाय,

 रंगीली में रस घणों जी ।

घोड़ी के जाजम का परदा लगाय,

 लजालु में लाज घणां जी ।

घोड़ी ने रावो सी झूल ओड़ाय,

 रूपाली में रूप घणों जी।[[36]](#endnote-37)

(8) राईवर

ऊमा तो रीज्यो राईवर चम्पला री छाया ।

हेला पाडूँ तो मारा काकाजी सांभले,

घरयो खेंचूं तो चमके नादान ओ बनाजी ।

चमक ही देशोत बनीजी। ।

ऊमा तो रीज्यो राईवर चम्पलारी छाया,

हेला पाडूँ तो मारा बावोजी सांभले,

घरयो खेंचूँ तो चमके ओ नादान बनाजी ।

चमक ही देशोत बनीजी। ।[[37]](#endnote-38)

(10) साजन आया रे (बारात स्वागत)

साजन आये रे द्वार हमारे

धन्य धन्य रे सौभाग्य हमारे।

थाल में दीपक आज जलाओ ।

और मोतिन के चोक पुराओ ।

आज सोने के कलश द्वार पे बंदनवार बंधाओ ।

हर्ष विवारे हुआ सबका मन

स्नेह सुमन चरन दिसि बरसाओ।। साजन..

पलक पावड़े पथ में बिछाये

लाड़ी के बाबुल ने महीनों पुकारे ।

सारे मृथ्या खड़े हुए हैं

उनके गल में हार पहनाओ ।

नैन नीर से चरण पखारो

इनकी आरती आज उतारो ।। साजन

सासुल रानी बाल समारे दुलने को टीका लगा रही है

दुल्ले की आऱती उतार रही है, बहीनों फुली बोल रही है,

बन्ने की भाभियां हिलमिलकर नन्दोईजी को निहार रही है।

सब मिल मंगल गीत गाओ सौ सो रुपये आज लुटाओ

समधी आये हैं द्वार हमारे,

धन्य धन्य है सौभाग्य हमारे। साजन..[[38]](#endnote-39)

(11) ढमाक ढोलकी (ब्याई को गालियाँ)

ढमाक ढोलकी बाजै छे, नवा व्याणजी आवै छे,

आवता आवता भूली गया, भग्यां के घर में घुसी गया।

झाडू लगाणों सिखा गया, ढमाक ढोलकी बाजै छे।

आवता आवता भूली गया, मोच्यां के घर में घुसी गया,

जूतां बनाणों सिखी गया, ढमाक ढोलकी बाजै छे।

आवता आवता भूली गया, धोब्यां के घर में घुसी गया,

कपड़ा धोवणों सिखी गया, ढमाक ढोलकी बाजै छे।

आवता आवता भूली गया, सुथारों के घर में घुसी गया,

करवत चलाना सिखी गया, ढमाक ढोलकी बाजै छे।

आवता आवता भूली गया, सुनारों के घर में घुसी गया,

आभूषण चलाना सिखी गया, ढमाक ढोलकी बाजै छे।[[39]](#endnote-40)

(12) तीन तिरिया (व्याई को गालियां)

तीन तिरिया के बीच व्याई जी दुखिया,

पेली तो केवै म्हेलां पोढूंसा,

दूसरी केवे म्हूं झरोखा पोढूंसा,

सुण तीसरी का बोल, गटर में पोढूंसा,

 तीन तिरिया के बीच व्याई जी दुखिया ।

पेली तो केवे म्हूँ लाडू जीमुं सा,

दूसरी केवे म्हूँ पेड़ा जीमुं सा,

सुण तीसरी का बोल म्हूँ गोबर जीमुंसा।

 तीन तिरिया के बीच व्याई जी दुखिया ।

पेली केवे म्हूँ लेरया पैरूं सा,

दूसरी केवे म्हूँ फागणियो पेरूं सा,

सुण तीसरी का बोल म्हूँ तापड़िया ओढूंसा ।

 तीन तिरिया के बीच व्याई जी दुखिया ।

पेली केवे म्हूँ छोरी जणस्यूं सा,

दूसरी केवे म्हूँ छोरो जणस्यूं सा,

सुण तीसरी का बोल, म्हैं बाँदरिया जणस्यूं सा।

 तीन तिरिया के बीच व्याई जी दुखिया ।[[40]](#endnote-41)

(13) ए सासू (बिदाई गीत

ए सासू गाल मत दीजे, ए सासूजी का हीड़ा करजे ।

ए भाभी सा का घोड़ा घड़जे, ए देराणी ने न्यारी करजे ।

ए बाईसा ने सासरे पहुँचाजे, ए मारी करकरीया की बेटी

 ए मारी कुसुमबाई सायर बेटी

 ए मारी राय आंगण रो रम्त्यो

 ए सासू गल मत दीजे ।

ए मैं तो पापड़ देर पढ़ाई, ए मैं तो लाडू देन लड़ाई ।

ए मैं तो खाजा देन खिलाई, ए भारी कड़ियां माईली कूंबी

ए मैं तो घणी राखई ए ऊँची, ए सासू गाल मत दीजे ।[[41]](#endnote-42)

(14) कोयलबाई (बिदाई गीता)

 हे म्हे थाने पूछां म्हारी कंवरबाई है,

 इतरो बाबाजी रो हेत कोयलबाई सिध चाल्या ।

हे थांने पूछां म्हारी राधाबाई हे,

इतरो वीराजी रो हेत छोडी बाई सिध चाल्या।

हे आयो सागांरो हे सूवटो मोरकर ले गयो टोली

में सूं टोल कोयलबाई सिध चाल्या।

इतरो मामाजी रो हेत कोयलबाई सिध चाल्या,

हे थांने पूछां म्हारी राधाबाई हे

इतरो भाभीजी रो हेत छोड़ सिध चाल्या।[[42]](#endnote-43)

सारांश

 राजस्थानी प्रथम गीत 'चलो विनायक आयां' में विवाह का प्रारंभ मंडप में गणेशजी की स्थापना से होता है। विवाह की खुशी में गणेशजी की स्थापना से चार चांद लग जाते हैं। गीतों के साथ शहनाई के सुर से वातावरण प्रफुल्लित बन जाता है।

 द्वितीय गीत 'पांच बधाया म्हारे आविया' में मंडप में स्त्रियों के द्वारा कन्या की विविध इच्छाओं की परोक्ष रूप में अभिव्यक्ति हुई है।

 तृतीय गीत 'म्हारा घरां रे कंवर बनरो ब्यावे' में विवाह में मेंहदी का महत्व है। सोजत शहर की मेंहदी चाँदी के कटोरे में घोली जाती है। बन्ने के लिए यह रीति-रिवाज, श्रृंगार का प्रतीक बन जाती है। बन्नी दोनों हाथ रंगाती है। वधू प्रियतम को अपना मेंहदी वाला हाथ बताने के लिए उत्सुक होती है।

चतुर्थ गीत 'मेंदी दीजो भंवरलालजी' में वधु अपने प्रियतम के घर जाती है। सुहागरात को पति-पत्नी का मिलन होता है। पत्नी को प्रियतम हाथ देखकर मेंहदी किसने रंग दी, उसकी प्रशंसा करता है और ऐसे सुंदर कोमल हाथों को हृदय पर फेरने को कहकर प्रेमरस का पान करता है।

पंचम गीत 'विवाह' में उत्सुक कन्या, प्रियतम और बरातियों के लिए भोजन आदि की व्यवस्था से संबंधित है। हर वधू अपने बन्ने का जल्दी दर्शन करना चाहती है। दोनों विवाह के गीतों तथा चहल-पहल में भी मिलन की प्रतीक्षा करते हैं।

षष्ठ गीत 'दादासा मेलां नीचे बनड़ी' में बाराती-स्वागत के लिए कन्या की एक ही अभिलाषा है- प्रियतम ही उसका सर्वरूप है। उसकी दृष्टि में ससुर, जेठ, देवर आदि गौण हैं। पति ही मुख्य है और फूल-जैसा है।

सप्तम गीत 'बनड़ी न्हाय धोय बैठी' में प्रियतम-प्रियतमा मिलने के लिए उत्सुक हैं। दोनों सज-धजकर तैयार हैं। विवाह के लिए बन्ना-बन्नी, दोनों को अनेक आभूषण, कीमती भेंट की चीजें दी जाती हैं। दोनों को इन भौतिक चीजों का मोह नहीं है। प्रेम में हृदय की उर्मियों के आभूषणों की ही आवश्यकता होती है।

अष्टम गीत 'राईवर सूताजी' में बन्ना, बन्नी के घर बारात लेकर जाता है। हरेक पत्नी अपना पति आर्थिक दृष्टि से बराबर देखना चाहती है ताकि अपने सखी-मंडल में प्रभाव बना सके। पति को भी पत्नी की खुशियां पूर्ण करने की इच्छा होती है। पत्नी आशाएँ लेकर प्रतीक्षा करती है। बन्ना शादी में बारात को सुशोभित कर लाने के लिए दादा के कहते हुए लज्जित होता है और नींद का बहाना करके सो जाता है। दादा खुशी से फूले नहीं समाते।

नवम् गीत 'ऊभा तो रीज्यो राईवर' में बन्नी बन्ने के दर्शन के लिए उत्सुक है। शादी से पहले बन्ना देख नहीं सकती। परोक्ष रूप से बन्ने को चम्पा के पेड़ की छाया में खड़ा रहने का निमंत्रण है। अपनी मनोभावनाएँ व्यक्त करती है कि मुझे तेरी छाया मिले और तुझे हमेशा मेरे प्रेम की शीतलता मिले।

दशम् गीत 'सायन आये रे' में कन्या पक्ष को बारात का स्वागत करने का अनोखा उमंगपूर्ण पर्व प्राप्त हुआ है। आंगन में मोती के चौक में विविध भोजन और गीतों से स्वागत होता है।

ग्यारहवां गीत 'ढमाक ढोलकी' में विवाह का वातावरण आनंद से परिपूर्ण है। विवाह का अर्थ खुशी है। कन्या बिदाई के कुछ घण्टे बाकी होने से व्याई की गालियां वातावरण को हल्का बना देती हैं। सब एक होकर खुशियां बांटते हैं। समय आनंद से जल्दी व्यतीत होता है और दोनों पक्ष हंसी-मजाक-मस्ती में गीतों के द्वारा उत्तर देते हैं। वर पक्ष को कन्या पक्ष वाले इस गीत में भंगी के घर झाडू लगाना, मोची के घर जूते बनाना, धोबी के घर कपड़े धोना आदि कहकर मजाक करते हैं। उनका प्रत्युत्तर वर पक्ष के लोग देते हैं।

बारहवां गीत 'तीन तिरिया' वर-पक्ष की स्त्रियों, तीन पत्नीवाले पति की हालत का वर्णन करता है। दो पत्नी सामान्य हैं, तीसरी निम्न कोटि की होने के कारण हास्य स्फुट होता है। व्याई की गालियां वास्तविक गीत नहीं हैं, केवल मजाक के बहाने हास्य एवं मनोरंजन मिलता है। शादी में जो थकान लगती है, वह दूर होकर आनंद मिलता है।

तेरहवां गीत 'ए सासू गाल मत दीजे' में हास्य के वातावरण से थोडी गंभीरता छा जाती है। बारात के स्वागत के बाद फेरे होते हैं। खाना खाकर बेटी की बिदाई की बेला आती है। हर माता अपनी बेटी का नाम रोशन करे, अच्छे संस्कारों का संचन करती है। माता के संस्कार पुत्री में आते हैं। ससुराल जाते समय माता सीख देती है- ससुराल में सास को गालियां मत देना, उनका आदर करना, बड़ों की आज्ञा मानना, पति की सेवा करना आदि। बेटी माता की तिजोरी की चाबी है। खून का रिश्ता होने से माता-बेटी का प्यार अधिक गहरा होता है।

चौदहवें गीत 'हे म्हें थाने पूछां म्हारी' बिदाई की बेला में बहुत की कारुणिक दृश्य होता है। बिदाई के समय बेटी और उनके माता-पिता की दयनीय स्थिति होती है। एक आंख में हर्ष और दूसरी में ग्लानि। माता-पिता का कर्तव्य पूर्ण होता है । गृहस्थाश्रम की व्यवस्था ऐसी है कि हर माता को अपनी बेटी को पराये घर भेजकर पराये घऱ की बेटी को अपने घर में लाना पड़ता है। पुत्री को अनेक खुशियां मिलती हैं। अपना स्वयं का घर, जीवन जीने का सहारा पति से मिलता है। माता-पिता पूछते हैं कि इतना सुख छोड़कर भी चली गयी। बचपन से हृदय का टुकड़ा समझकर पाला होता है, उन्हें छोड़ना बहुत ही कठिन होता है। पुत्री को भी जन्म से लेकर इतने सालों के बाद पराये घऱ जाने का दुःख होता है और साथ में प्रिय को मिलने की उत्सुकता भी अधिक होती है।

गुजराती विवाह-गीत

(1) गणेश पूजा

पहेला गणेशर ने पछी परमेशर...

गणेशरजी होय तो रूडां मूरतां जोवडावे.

गणेशरने समरी काम करजो रे,

मारा गणेशरजी डुंडारा.

डुंडी डुंडारानी फोंदी फोंदारा

गणेशरजी होय तो रूडां लघनां लेवडावे.

पहेला गणेशरने पछी परमेशर...[[43]](#endnote-44)

(2) मंडप मूहूर्त

लीलो मांडवो सकावो पीरी पोनडीओ सवरावो मोरा राज...

एमना बापुने तेडावो एमनी मताने तेडावो मोरा राज...

लाडे कोडे दीकरो परणावे मोरा राज..

लीलो मांडवो सकावो पीरी पोनडीओ सवरावो मोरा राज...

एमना मामाने तेडावो एमनी मताने तेडावो मोरा राज...

लाडे कोडे भाणेज परणावे मोरा राज..

लीलो मांडवो सकावो पीरी पोनडीओ सवरावो मोरा राज...

एमना काकाने तेडावो एमनी मताने तेडावो मोरा राज...

लाडे कोडे भत्रीजो परणावे मोरा राज..

लीलो मांडवो सकावो पीरी पोनडीओ सवरावो मोरा राज...

एमना मासाने तेडावो एमनी मताने तेडावो मोरा राज...

लाडे कोडे भाणेज परणावे मोरा राज..

लीलो मांडवो सकावो पीरी पोनडीओ सवरावो मोरा राज...

एमना बापुने तेडावो एमनी मताने तेडावो मोरा राज...[[44]](#endnote-45)

(3) वधावो

पंज शब्द जी राज कोयल बोले,

पंज जुदा-जुदा रागे कोयल बोले सहेली राज।

पहेलो वधावो दादा घरे आयो,

दादीजी नाळियेर छाप पुरे,

 सहेली राज कोयल बोले।

बीजो वधावो राज बापा खरे आयो,

माडीजी मोतीडे छाब पुरे,

 सहेली राज कोयल बोले।

त्रीजो वधावो राज काका घरे आयो,

काकीजी फुलडे छाब पुरे,

 सहेली राज कोयल बोले।

चोथो वधावो राज मामा घरे आयो,

मामीजी मोशाळे छाब पुरे,

 सहेली राज कोयल बोले।

सामे ऱोडीय में अधमण खाजा,

जयंतभाई घर्ये तडे वाजिंत्र वाजा,

 सहेली राज कोयल बोले।[[45]](#endnote-46)

(4) हवामण होनानी पीठी

हवामण होनानी से पीठी रे अधमण रूपानो मादरियो रे..

हुं तमने पुसुं मोटाभई वीरा रे,

तमने पसाभई केवा वाला रे,

जोणे मारा हैयानो छे हार रे.

हवामण होनानी से पीठी रे अधमण रूपानो मादरियो रे...

हुं तमने पुसुं मोटां बा बेन रे,

तमने पसाभई केवा वाला रे,

जोणे मारा माथानो छे मोरीडो रे,

हवामण होनानी से पीठी रे अधमण रूपानो मादरियो रे...[[46]](#endnote-47)

(5) छबछबती छाब

छबछबती छाब घनरा, कोई लई आवे?

ए तो मारो माडी जायो वीर, वालेरो लागे।

घी चूंता चूरमा धनरा, कोण शीरावे?

ए तो मारो माडी जायो वीर, वालेरो लागे।

दही ने ठुमरों रे धनरा, कोण शीरावे?

ए तो मारा दादानी बेन्य, फईबा वालेरा लागे।

ठांसीने माथा धनरा, कोण ज गूंथे?

ए तो मारा दादानी बेन्य, फइबा वालेरा लागे।[[47]](#endnote-48)

(6) ऊँचो ते वर न जोशो

एक ऊंचो ते वर नो जोशो रे दादा,

 ऊंचो ते नत्य नेवां भांगशे।

एक नीचो ते वर नो जोशो रे दादा,

 नीचे ते नत्य ठेबे आवशे।

एक काळो ते वर नो जोशो रे दादा

काळो ते कटंब लजावशे।

एक धोळो ते वर नो जोशो रे दादा

धोळो ते आपे वखाणशे।

एक कडयरे पातळियो ने मुखरे शामळियो,

ते मारी सैयरे वखाणियो।

एक पाणी भरती रे पनियारीए वखाण्यो,

ने भलो रे वखाण्यो मारी भाभीए।[[48]](#endnote-49)

(7) मेंहदी लाल गुलाल

तमे ऊभा मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।

आळिये जऊँ मां माळीए जउं,

 काचां पाकां बेर खउं.

बेर दोंत आंब्या मा डमची खउं,

 डमची उपर लाडवो मा भाजी खउं

तमे बेहों मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।

अमे बेहयां मारा राज,

मेंहदी लाल गुलाल.

आळिये जऊँ मां माळीए जउं,

 काचां पाकां बेर खउं.

बेर दोंत आंब्या मा डमची खउं,

 डमची उपर लाडवो मा भाजी खउं

तमे ऊभा रो मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल.

अमे ऊभा मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल.

आळिये जऊँ मां माळीए जउं,

 काचां पाकां केर खउं.

केर दोंत आंब्या मा डमची खउं,

 डमची उपर लाडवो मा भाजी खउं

तमे हुर्या मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।

अमे हुर्या मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।

आळिये जऊँ मां माळीए जउं,

 काचां पाकां केर खउं.

केर दोंत आंब्या मा डमची खउं,

 डमची उपर लाडवो मा भाजी खउं

तमे ऊभा रो मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।

अमे ऊभा मारा राज,

 मेंहदी लाल गुलाल।[[49]](#endnote-50)

(8) वरयात्रा

पागडले पग दई चढो रे वरराजा, गोत्रज छेडो सारी रह्यां

मेलो मेलो रे गोत्रज वरनो रे छेडो, तमारा कर अमे आपशुं

जेणे नाना थकी मोटा कीधां रे तेना गुण केम भूलशुं

पागडले पग दई चढो रे वरराजा, माताजी छेडो सारी रह्यां

मेलो मेलो रे माता वरनो रे छेडो, तमारा कर अमे आपशुं

जेणे नवमास उदर राख्या रे तेना गुण केम भूलशुं

पागडले पग दई चढो रे वरराजा, फैधर छेडा सारी रह्यां

मेलो मेलो रे फैधर वरनो रे छेडो, तमारा कर अमे आपशुं

जेणे नाना रे पण नाम पमाव्यां तेना गुण केम भूलशुं

पागडले पग दई चढो रे वरराजा, बेनड़ छेडो सारी रह्यां

मेलो मेलो रे बेनड़ वरनो रे छेडो, तमारा कर अमे आपशुं

जेणे नाना रे पणमां लाड लडाव्यां तेना गुण केम भूलशुं [[50]](#endnote-51)

(9) सामैया शणगारी

सामैयां शणगारी सामा मेलो रे... भाईना दादा

जयश्रीबेनना वर ऊतर्या वाडीये

मोसाळ मोंघीनो वर ऊतर्या वाडीये

पियर पगतीनो वर ऊतर्या वाडीये

लाडकघेडीनो वर ऊतर्या वाडीये... सामैया[[51]](#endnote-52)

\*\*\*\*

(10) लाडी लाडो जमे रे कंसार

 लाडी लाडो जमे रे कंसार,

 लाडा नी भाभी हळवळो रे।

 एना दियर आंगळढी चटाड,

 कंसार केवो गळ्यो लागे रे?

 एनी भाभी परणी छे के नाहीं?

 कंसार केम वीसरी रे?[[52]](#endnote-53)

\*\*\*

(11) गोर लटपटिया

गोर करे रे उकेल, गोर लटपटिया।

मारे छेटांनी छे जान, गोर लटपटिया।

मारे थाय छे, अहूर मोडुं, गोर लटपटिया।

गोर ने हांडा जेवडुं माथुं, गोर लटपटिया।

गोरने नळिया जेवुं नाक, गोर लटपटिया।

गोरने कोडां जेवडी आंख्युं, गोर लटपटिया।

गोरने सूपडां जेवडां कान, गोर लटपटिया।

गोरने फळिया जेवडी फांद, गोर लटपटिया।[[53]](#endnote-54)

---

(12) कंसारा फटाणां (भोज के वक्त गाए जाने वाले लोकगीत)

गीत- तो जम जमरे जमइडा कलवो (कलेवा)

तो जम जम रे जमइडा कलवो तारी माडी पीरशे से कलवो

तारी सासुए पीरस्ये छे कलवो, तारी सासु ते हइयानी भोळी

तने घी मां नाखशे बोळी तारी माडी ते हइयानी कटपी

तने मीठुं नहीं आपे चपटी, तारी गांठे आवडो शो मचको

तने गोळ न आपे करी घटतो।[[54]](#endnote-55)

---

जय श्री कृष्णा (फेरे के बाद)

(13) : कन्या पक्ष :

 नवला वेवाई सवा लख जारे जय श्रीकृष्ण।

नवली वेवाण घणां होंसीला रे जय श्रीकृष्ण।

कन्याबाई असां आंके सोपीयां रे जय श्रीकृष्ण।

असांथी वधु ऐं रखजा रे जय श्रीकृष्ण।

पाणी मंगे दूध डीजा रे, जय श्रीकृष्ण।

कन्या बये नंढ़ी बाळ रे, जय श्रीकृष्ण।

इनजी रे गनणा संभाळरे जय श्रीकृष्ण।

नवला वेवाई सवा लख जारे जय श्रीकृष्ण।

: वर पक्ष :

जयसिंह वेवाई सवा लख जारे जय श्रीकृष्ण।

सुशीला वेवाण घणा होंशीला रे जय श्रीकृष्ण।

सुनंदा बहू असांके सोपीयां रे, जय श्रीकृष्ण।

आंथी अधिक असीं रखघांसीं रे, जय श्रीकृष्ण।

पाणी मंगे त दूध डींधासीं रे, जय श्रीकृष्ण।

साड़ी मंगे त सेला डींधासीं रे, जय श्रीकृष्ण।

कन्या वह नंढ़ेरी बाळ रे, जय श्रीकृष्ण।

तेजी ता गनधासीं संभाळ रे, जय श्रीकृष्ण।[[55]](#endnote-56)

(14) बिदाई के वक्त

नीलुडा वननी वांसलडी,

शेरीए शेरीए वाजंती जाय,

ए तो मारे डिम्पलबेन रे,

आजे परणीने सासरे जाय,

एना दादाने ए अती वा'ली रे,

बेनी परणीने सासरे जाय,

दीकरी ऊभी रे तो तने काले आपीश विदाय,

दादजी ऊभी रहुं केम, मारा सासरीयानो साथ चाल्यो जाय.

नीलुडा वननी वांसलडी,

शेरीए शेरीए वाजंती जाय,

ए तो मारे डिम्पलबेन रे,

आजे परणीने सासरे जाय,

एना बापाने अति वा'ली रे,

बेनी परणीने सासरे जाय,

दीकरी ऊभी रे तो तने काले आपीश विदाय,

बापाजी ऊभी रहुं केम, मारा सासरीयानो साथ चाल्यो जाय.

नीलुडा वननी वांसलडी,

शेरीए शेरीए वाजंती जाय,

ए तो मारे डिम्पलबेन रे,

आजे परणीने सासरे जाय,

एना काकाने अति वा'ली रे,

बेनी परणीने सासरे जाय,

बेनी ऊभी रे तो तने काले आपीश विदाय,

काकाजी ऊभी रहुं केम, मारा सासरीयानो साथ चाल्यो जाय.

नीलुडा वननी वांसलडी,

शेरीए शेरीए वाजंती जाय,

ए तो मारे डिम्पलबेन रे,

आजे परणीने सासरे जाय,

एना वीराने अति वा'ली रे,

बेनी परणीने सासरे जाय,

बेनी ऊभी रे तो तने काले आपीश विदाय,

वीरा ऊभी रहुं केम, मारा सासरीयानो साथ चाल्यो जाय.

नीलुडा वननी वांसलडी,

शेरीए शेरीए वाजंती जाय,

ए तो मारे डिम्पलबेन रे,

आजे परणीने सासरे जाय,

एना मामाने अति वा'ली रे,

बेनी परणीने सासरे जाय,

भाणेजी ऊभी रे तो तने काले आपीश विदाय,

मामा ऊभी रहुं केम, मारा सासरीयानो साथ चाल्यो जाय[[56]](#endnote-57)

(15) आंबो मोरेयो ने लींबे फळ घणां रे

आंबो मोरेयो ने लींबे फळ घणां रे,

जांबुडां लेरडे जाय कोयल चाली सासरे,

आयो आयो भुज शेर गामनो चोर,

लाखेणी धीयडी लई वरेओ,

रमतडी मांडवा हेठ, भोरावीने लई वरेओ,

एवा रुडा दादाजीना राज,

मेलीने चाल्या सासरे.

आंबो मोरेयो ने लींबे फळ घणां रे,

जांबुडां लेरडे जाय, कोयल चाली सासरे,

आयो आयो भुज शे'र गामनो चोर,

लाखेणी धीयडी लई वरेओ,

रमतडी मांडवा हेठ, भोरावीने लई वरेओ,

एवा रुडा काकाजीना राज,

मेलीने चाल्या सासरे.

आंबो मोरेयो ने लींबे फळ घणां रे,

जांबुडां लेरडे जाय, कोयल चाली सासरे,

आयो आयो भुज शे'र गामनो चोर,

लाखेणी धीयडी लई वरेओ,

रमतडी मांडवा हेठ, भोरावीने लई वरेओ,

एवा रुडा वीराजीना राज,

मेलीने चाल्या सासरे.

आंबो मोरेयो ने लींबे फळ घणां रे,

जांबुडां लेरडे जाय, कोयल चाली सासरे,

आयो आयो भुज शे'र गामनो चोर,

लाखेणी धीयडी लई वरेओ,

रमतडी मांडवा हेठ, भोरावीने लई वरेओ,

एवा रुडा मामाजीना राज,

मेलीने चाल्या सासरे.[[57]](#endnote-58)

सारांश

 गुजराती विवाह-गीतों के प्रथम गीत 'पहेलां गणेशरने पछी परमेशर' में शुभ कार्य का प्रारंभ गणेशजी की स्थापना से होता है। गणेशजी की स्थापना के साथ माणेक थंभ (लकड़ी का टुकड़ा) की भी स्थापना होती है। शहनाई के मंगल वादन और विवाह गीतों से वातावरण गूँजता है। विवाह के इस आनंद में सम्मिलित होने के लिए सभी उत्सुक होते हैं। विवाह में लाल-पीले-हरे रंग को विशेष महत्व दिया जाता है। इनके शुभ होने की मान्यता है।

 द्वितीय गीत 'लीलो मांडवो सकावो पीरी' में मंडप में सभी को आने का निमंत्रण है। परोक्ष रूप से कन्या-पक्ष के गुणों की प्रशंसा होती है। संयुक्त-परिवार की महत्ता का भी वर्णन है।

 तृतीय गीत 'पंज शब्द जी राज कोयल बोले' में विवाह की उमंग बहुत निराली है। शादी में सभी खुशियाँ मनाते हैं। रीति-रिवाजों को पूरा करना पड़ता है। नारियाल, मोती, पूल आदि से वर-वधू को खुश करते हैं। मामा की ओर से सभी को वस्त्र एवं आभूषण देते हैं।

 चतुर्थ गीत 'हवामण होनानी से पीठी रे' में मंडप का वर्णन है। हल्दी, पीठी, मेहंदी आदि शादी में बहुत ही आवश्यक होने के कारण हल्दी-पीठी से दुल्हा-दुल्हन का रूप निखरता है। भोजन, वस्त्र आदि की मनोकामना इस गीत के द्वारा होती है। इन चीजों से शादी की शान बढ़ती है। समाज में नाम होता है।

 पंचम गीत 'छबछबती छाब धनरा, कोण लई आवे' में कन्या अधिक प्रेम दादा, दादी, माता आदि से करती है। कुछ बातें ऐसी होती हैं कि पिता को नहीं बता सकती सीधे, इसलिए कन्या अपनी समस्या दादा, पिता आदि को गीत द्वारा बताती है। लज्जित होकर वह वर के लिए कामना प्रकट करती है।

 षष्ठम् गीत 'लाकडी चडी रे कमाड' गीत में वर के मन की समस्या है। दादा ही परिवार में मुख्य होने के कारण इच्छा पूर्ण करते हैं। वर को मिलन की तीव्र इच्छा होने से जल्दी शादी करना चाहता है। इस गीत के द्वारा अपनी व्यक्त हुई है।

 सप्तम गीत 'मेहंदी लाल गुलाल' में मेहंदी का महत्व दर्शाया है। सभी जातियों में महेंदी का शादी में बहुत ही महत्व है। महेंदी से वर-वधु, दोनों की शान बढ़ती है, सौंदर्य निखरता है।

 अष्टम् गीत 'पागडले पग दई चडो रे वरराजा' में वर के घर से निकलते समय गाया जाता है यह गीत। शादी की खुशियां वर-पक्ष में अधिक होती हैं। वधु परिवार की कुलवधु बनेगी, आदि इच्छाएं होती हैं। उनके स्वागत के लिए उत्सुक होकर प्रतीक्षा करते हैं। वर के माता, पता, दादा, दादी, मामा-मामी आदि खुशी से फुले नहीं समाते। हृदय की खुशियों का इस गीत के द्वारा भावनास्रोत प्रवाहित होता है।

 नवम् गीत 'सामैयां शणगारी सामा मळो रे' में बारात वधु के घर पहुँचती है। वर पक्ष वाले गर्व से आते हैं। बेंड-बाजे, फटाके से आगमन होता है। वधु के घर पोंखने की रस्म होती है। इस गीत द्वारा मनोभावों का वर्णन किया गया है। वधु के माता-पता सभी सुविधाएँ देते हैं ताकि भविष्य में अपनी बेटी को ताने सुनने न पड़ें।

 दशम गीत 'लाडी लाडो जमे रे कंसार' प्रत्युत्तर के रूप में कन्या पक्ष वाले देते हैं। वधु के मन के भाव, आभूषणों आदि की मांग गीत द्वारा परोक्ष रूप से करते हैं। हास्य और मजाक गीत की मूल भावना है।

 ग्यारहवें गीत 'गोर करे रे उकेल गोर लटपटिया' में ब्याह के समय फटाणे (गालियां) दी जाती हैं। शादी में कन्या पक्ष के उदास परिवारजन प्रसन्न होते हैं। हँसी से वातावरण हल्का होता है। प्रस्तुत गीत में शादी कराने वाले पंडित को मजाक का निशाना बनाया गया है।

 बारहवें गीत 'तो जम जम रे जमइडा कलेवो' ब्याई की गालियों का है। वह असल में गालियाँ नहीं होतैं, केवल मजाक होता है। वास्तिवकता न होने के कारण अतिशयोक्ति से आनंद की पुष्टि होती है। वर पक्ष वाले वधु पक्ष वालों का मजाक करके मनोरंजन की भावना प्रकट करते हैं।

 तेरहवें गीत 'नवला वेवाई सवा लख जा' में शादी के फेरे के बाद कन्या पक्ष वाले अपनी पुत्री पराई समझकर यह गीत गाकर अपनी पुत्री की आदतें और जो सुख मिला है, उनके बारे में इस गीत द्वारा मनोदशा करुणता से प्रस्तुत करते हैं। उनका प्रत्युत्तर भी वर पक्ष वाले संतोषकारक देते हैं। इससे कन्या पक्ष वालों को शांति मिलती है। वधु पक्ष वाले गंभीर होते हैं और वर पक्ष वाले वधु को प्राप्त करने की खुशी व्यक्त करते हैं।

 चौदहवें गीत 'नीलूडा वन वांसलडी' में पुत्री के मनोभावों की करुणता व्यक्त हुई है। अपना घर जन्म से था, उसे आज पराया करके पराये घर को अपना करने जा रही है। दादा, दादी, माता, पिता, भाई, भाभी, बहन सभी का स्नेह छोड़ना पड़ता है तब जो हृदय से वेदना निकलती है, ऐसे गीतों से वाणी मिलती है।

 पंद्रहवें गीत 'आंबो मोर्यो ने लींबे फळ घणां' में कन्या की माता की करुण मनोदशा का वर्णन है। वर को चोर की उपमा और पुत्री को कोयल की उपमा दी गई है। पुत्री मधुर स्वर वाली भोली-बाली को दामाद पटाकर चोर की भांति ले जा रहा है। इस दर्द-भरे गीत को सुनकर वातावरण शोकमय हो जाता है। जो नहीं रो पाते, उनका ऐसे गीतों से हृदय हलका हो जाता है।

गुजराती और राजस्थानी विवाह-गीतों की तुलनाः

(क) समानता

1. दोनों के विवाह गीतों में गणेशजी की स्थापना का विधान है।

2. दोनों में मंडप के गीत समान रूप से पाये जाते हैं।

3. दोनों में विवाह में मेंहदी, हल्दी आदि का रिवाज है।

4. दोनों के गीतों में बारात के स्वागत का वर्णन है।

5. दोनों में व्याई की गालियां समान रूप से पायी जाती हैं।

(ख) असमानता

1. राजस्थानी विवाह-गीतों में विवाह के समय हास्य-गीत गाये जाते हैं, जैसे व्याई की गालियां और गुजराती में उसे 'फटाणा' कहा जाता है।

2. दोनों में विवाह की रस्में कुछ अलग-सी हैं। गुजराती में नहाते समय का गीत प्राप्त नहीं है।

निष्कर्ष

 गृहस्थाश्रम का प्रारंभ वैवाहिक जीवन से होता है। विवाह जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। विवाह में वर-वधु अपना प्रेम एक-दूसरे को अर्पित करते हैं। इस शुभ अवसर पर स्वागत मंगल वाद्य, फूल, गहनें, मिठाइयाँ तथा आतिथ्य के समय किया जाता है जिसका जिसका वर्णन गुजराती तथा राजस्थानी लोकगीतों में प्राप्त है। वैदिक काल से ही विवाह को महत्व दिया गया है। विवाह से हृदय की अभिलाषाओं और मनोभावों की अभिव्यक्ति सहज रूप से होती है। विवाह का अर्थ दो हृदयों का मिलन, विश्वास और एक-दूसरे का सहारा है। गुजराती और राजस्थानी विवाह-गीतों में दो हृदय एक होकर नया जीवन शुरु करते हैं। संसार की खुशी वैवाहिक जीवन से प्राप्त होती है। स्वर्गमय सुख द्वारा दोनों का मानसिक विकास होता है। दोनों गीतों में समान भावना के गीत गाये जाते हैं। आत्म-समर्पण की भावना से निजी आनंद प्राप्त होता है।

प्रकरणः सात

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीत : दाम्पत्य गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी दाम्पत्य गीत

सारांश

* गुजराती दाम्पत्य गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी दाम्पत्य गीतों की तुलना : समानता एवं असमानता
* निष्कर्ष

गुजरात और राजस्थान के लोकगीतः दाम्पत्य गीत

प्रस्तावना

 पति-पत्नी दाम्पत्य जीवन के दो पहिये माने जाते हैं। सुखी दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग-सी खुशी होती है। वैवाहिक जीवन के बाद दाम्पत्य जीवन प्रारंभ होता है। पत्नी पुरुष की अर्धांगिनी होती है। अपना घर छोड़कर अपिरिचित व्यक्ति के साथ जीवन व्यतीत करती है। दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य विश्वास एवं एक-दूसरों के प्रति वास्तविक भाव दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाते हैं। पति या पत्नी आपस में अपने नजी घरेलू मामलों में कभी लड़ते-झगड़ते हैं तब उन्हें रुठने-मनाने में एक अनोखा आनंद प्राप्त होता है। सीधे-सरल दाम्पत्य जीवन में जीवन का सच्चा आनंद प्राप्त नहीं होता। अधिक ऐश्वर्य से मनुष्य ऊब जाता है, उसी प्रकार अति सुख से वे ऊब जाते हैं। रुठना-मनाना दाम्पत्य जीवन का मुख्य पहलु है। पराये लोगों के सामने पति या पत्नी एक-दूसरे की निंदा करते हैं तब दांपत्य जीवन छिन्न-भिन्न हो जाता है। दाम्पत्य जीवन में मानसिक, शारिरक तथा आर्थिक दृष्टि से दोनों में जब असंतोष होता है तब या तो तलाक होता है या सोतिया अथवा स्त्री-प्रेम प्राप्त करने के लिए गलत राह पर चलते हैं।

 आदर्श सुखी परिवार के लिए यदि सम्मिलित परिवार हो तो सास-बहू समझदारीपूर्वक बर्ताव करें तो दाम्पत्य जीवन में स्वर्ग आ जाता है। बड़ों की आज्ञा का पालन ही दाम्पत्य जीवन की कुंजी है। गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में दाम्पत्य भावना के गीत अधिक पाये जाते हैं। दोनों में समानता अधिक है जिसका वर्णन आगे किया जायेगा।

राजस्थानी दाम्पत्य गीत

(1) ननद जाने क्या हुआ

मोरी भोली ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा पहला महीना ननद जाने क्या हुआ।

तब सीस धबकने लागा, ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा दूजा महिना ननद जाने क्या हुआ।

तब धुळ धुळियन मन लागा दूजा महीना ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा तीजा महिना ननद जाने क्या हुआ।

तब खट्टे मीठे मन लगा ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा चौथा महिना ननद जाने क्या हुआ।

तब खीर-पूरी पे मन लगा ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा पाँचवा महिना ननद जाने क्या हुआ।

तब अथपल कड़कन लागा, ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा जब लागा छठा महिना ननद जाने क्या हुआ।

तब आम इमली मन लागा, ननद जाने क्या हुआ।

जब लागा सातवां महीना ननदजाने क्या हुआ।

तब साद सिदौरी मन लागा ननद जाने क्या हुआ।

सब तिरियां सब तिरियां मंगल गावे ननद जाने क्या हुआ।

सात मासा गीत सुनाये ननद जाने क्या हुआ।[[58]](#endnote-59)

(2) चलो बालम पीहर में (सगर्भा स्त्री का गीत)

जल्दी चलो बालम पीहर में लाल होंगे

सासजी के बदले अम्मा से नेग लेंगे

जल्दी चलो बालम पीहर में लाल होंगे।

जेठानी के बदले भाभी से नेग लेंगे

जल्दी चलो जल्दी चलो बाल,म

 जल्दी चलो बालम पीहर में लाल होंगे।

सखियों के बदले पड़ोसिन से नेग लेंगे

जल्दी चलो बालम पीहर में लाल होंगे।[[59]](#endnote-60)

(3) हालर जायो (पुत्र-जन्म की बधाई का गीत)

हां रे हालर जायो सा हारे हालर जायो सा।

जच्चा राज में तो हालर जायो राज।

तेड़ो नी म्हारा राय जमाई, आवतई हालर झेले का।

तेड़ो नी म्हारा घर रा जोशी, आवतई नाम सुणावे सा ।

तेड़ो नी म्हारा खाती जी, पिलंग पालणो लेने आवे सा ।

तेड़ो नी म्हारा नणदल बाईसा, अमर बदावो लेने आवे सा ।

तेड़ो नी म्हारे देराणी-जेठी, कोड्याँ सा भंमर रमावे सा।

हालर जायो मे हुई छै बधाई, अलबेली म्हारो वंश बधावे सा ।

तेड़ो नी म्हारे नेभ्यानी ने, पीलो तो चोक पुरावे सा।

तेड़ो नी म्हारा कालीड़ा कुम्हार्या, वेल वेलस लेने आवे सा ।

तेड़ो नी म्हारा सासूजी सपूत्याने, नेभ्याँ रा नेग बुकावे सा ।[[60]](#endnote-61)

(4) सास सुलखणी

मेरी सास सुलखणी, कोई करै घणेरा लाड़,

मेरी सास सुलखणी, घरमां ने घालै खीचड़ो,

कोई म्हाने बूरा-भात, औरा ने पिलयो एकलो,

कोई म्हाने दोय-दोय बार मेरी सास सुलखणी।

औरां ने चाटू लापसी, कोई म्हाने दोय-दोय प्यार,

औरां ने दही रो सबड़को, कोई म्हाने दोय दोय प्यार।

 मेरी सास सुलखणी।

औरा ने छाछ री टोकसी, कोई म्हाने टोक्स प्यार

औरां ने घी री मरक्ली, कोई म्हाने मरक्ली प्यार।

 मेरी सास सुलखणी।

औरां ने चमचो खीर रो, कोई म्हाने चमचा प्यार,

सासु ने प्यारी कुल बहू कोई करै चौंगणी सार,

मेरी सास सुलखणी कोई करै घणेरा लाड़,

 मेरी सास सुलखणी।[[61]](#endnote-62)

(5) सुसरोजी म्हारा

सुसरोजी म्हारा घर रा राजा,

सासुजी ठकुराणी जी।

सुसरैजी रो हुकम कोटड़यां चालै,

सासड़रो राबिलयो जी।

दो-दो म्हारे छान झूपडा

दो दो घर म्हारे मेड़ी जी,

गोबर लीप्यो-ढोप्यो, आंगणो

सूरज सामी पोल जी,

पोल्यां मांय सुसरोजी बैठ्या,

घाल चोधर री चौकी जी।

न्याणी मांय सासूजी बैठ्या,

चरखो लियां चलावै जी।

सुसरेजी रो हुकम कंवरड़ो चालै,

सासड़ रे कंवराणी जी,

सुसरोजी तो पूत सरावै

सासूजी कुल व्यायी जी।[[62]](#endnote-63)

सारांश

 राजस्थानी दांपत्य गीतों के प्रथम गीत 'मोरी भोली ननद जाने क्या हुआ' में दाम्पत्य जीवन पूर्ण रूप से परिपूर्ण है। दाम्पत्य जीवन पति-पत्नी के अटूट प्रेम की चरम सीमा है। दाम्पत्य बाग में नया फूल खिलने वाला है। नारी-हृदय मातृत्व के लिए तरसता है। इस गीत में नारी को सगर्भा होने से जो नयापन लगता है, परिवार में किसी को नहीं कह सकती। बड़ी ननद को अपनी बहन समान मानकर अज्ञान अवस्था का वर्णन करती हुई अपने मन के उत्साह के भाव प्रकट करती है।

 द्वितीय गीत 'जल्दी चलो बालम पीहर में लाल होंगे' गीत में नारी की अवस्था एक ही है लेकिन कुछ पात्र अलग-से हैं। आठ महीने सीमंत की विधि के बाद प्रथम बार गर्भवती स्त्री को अपने पीहर भेजा जाता है। आर्थिक स्थिति के लिए या पीहर में अधिक सेवा होने की भावना होगी। इस गीत में स्त्री अपने पति से हो सके, इतनी जल्दी अपने पीहर भेजने के लिए कहती है क्योंकि अब बच्चे के जन्म का समय नजदीक है। उसे ससुराल में विश्वास कम है। सास के बदले अम्मा और जेठानी के बदले भाभी आदि के प्रति विश्वास व्यक्त करती है।

 तृतीय गीत 'हां रे हालर जायो सा' में पुत्र-जन्म की खुशी बहुत ही आनंद से मनाने का वर्णन है। परिवार के सभी को बुलाने हैं। पुत्र-जन्म का आनंद समाज में एक शुभ अवसर होने के कारण परिवार के अलावा अनेक रिश्तेदार भी खुशी व्यक्त करने के लिए आते हैं। इस गीत में पुत्र-जन्म के स्वागत की भावना व्यक्त हुई है।

 चतुर्थ गीत सुखी दाम्प्तय की भावना का है। सास समाज में बहुत ही निंदनीय पात्र होते हुए भी इस गीत में आदर्श सास का चित्रण हुआ है। सास बहू के प्रति अधिक स्नेह जताती है। घर के सदस्यों को अच्छी चीजें नहीं देती, बहू को अधिक एवं अच्छी चीजें खाने को देती है। अत्यन्त लाड़ करने से बहू पीहर को भी याद नहीं करती। सास समझती है कि नवविवाहिता बहू अपनों को छोडकर आयी है, उसे घरवालों से भी अधिक प्रेम देना चाहिए। आदर्श परिवार का चित्रण हुआ है।

 पंचम गीत 'सुसरोजी म्हारा घर रा राजा' में आदर्श एवं सुखी घराने का चित्र उपस्थित हुआ है। बड़े-बूढ़ों के प्रति श्रद्धा भक्ति और छोटों के प्रति स्नेह-भाव दृष्टिगत होता है। ससुरजी घर के राजा-समान हैं। सासुजी रानी-समान हैं। मरदाने भाग में ससुरजी का और अंतःपुर में सासू का आदेश चलता है। सुंदर लिपा हुआ स्वच्छ घर है। ससुरजी चौधराई की चौकी डालकर बैठे हैं। ननद चरखा चला रही है। पुत्र को ससुर सराहते हैं और पुत्रवधू को सास सराह रही है। आधुनिक युग में कम परिवारों में यह भावना है। परस्पर स्नेह-भाव हो तो घर स्वर्ग बनता है। दोनों में मेल न हो तो जीवन नरक बनता है। पति की स्थिति सुड़ी के बीच सुपारी जैसी होती है। माता की मानता है तो जीवन का सुख नष्ट होता है और गृहिणी की बात मानता है तो माता नाराज होती है। सम्मिलित परिवार की यह विकट समस्या प्रत्येक घर की है।

गुजराती दाम्पत्य-गीत

(1) सीमंत (गर्भाधान गीत)

आंबुडा जांबुडा हेठ रंनादेव, वस्ती पोकारे प्रभु बे जणा रे।

आघेरी जाऊं तो वस्ती रंनादेव, पाछी फरुं तो प्रभु बे जणा रे।

ससराने आंगणे ढोल धडुक्या, बाजे वधामणी मोकली रे।

पीळडां पेरी पाटेरे बेठी, लीलडां पेरीने जळ भरयां रे।

सासु सोवासणे खोळा रे भरिया, माडी सोवासणें वीसाम्या रे।

बोचलो बांधी सुवावड सुती, अजमों ते खाद्यो तीखो तमतमतो।

सूंठ लईने सासु रे आव्यां, माडीये सुवावड केळवी रे।

सांगामाचीये बेसी पुत्र धवडाव्या, थाने ते भींजी जादर कांचळी रे।

लांबी परसाळे पारणां बांध्या, हाल करीने हिंचोलिया रे।

पाणीडां जातां छेडलां रे साह्या, वछ करीने वछोडिया रे।

निशाळे जातां राडा रे लीधा, गजुए ते धाली सुंदर सुखडी रे।[[63]](#endnote-64)

(2) जन्मोत्सव

अं अं करे ने बाळो आंघळा धावे,

नगरीनां लोक सरवे जोवाने आवे।

खमा मारा कानकुंवरने कांटको भांग्यो,

कांटो भांग्यो ने वाला ठेसडी वागी।

अडवो केशुं ने बडवो कहीने बोलावशुं,

फैयरनां नाम वन्या वणबोल्या रे शुं।

एक आवी ने घमघम घूघरा लावी

बीजी आवी ने कडां सांकळां लावी,

त्रीजी आवीने वेढ वांकडा लावी।

चोथी आवी ने लंपाई घोडिया आगळ बेसशुं।[[64]](#endnote-65)

हालरडां (पालने के गीत, झूला झुलावन)

तमे मारा देवना दीधेल छो

तमे मारा देवना दीधेल छो,

 तमे मारा मागी लीधेल छो,

 आव्या त्यारे अमर थई ने रो।

मा देव जाऊँ ऊतावळी ने जई चडावुं फूल,

मा देवजी परसन थया त्यारे आव्या तमे अणमूल

 तमे मारुं नगद नाणुं छो

 तमे मारुं फूल वसाणुं छो,

 आव्या त्यारे अमर थई ने रो।

मा देव जाऊँ उतावळी ने जई चढ़ावुं हार,

पारवती परसन थया त्यारे आव्या हैयाना हार

तमे.... नगद.

हनुमान जाऊं उतावळी ने जई चडावुं तेल

हडमान परसन थया त्यारे घिडया बांध्या घेर

 तमे.... नगद.

तमे मारा......... छो

तमे मारा......... छो

अव्या त्यारे अमर थईने रो।[[65]](#endnote-66)

(3) काकाजी-बाबाजी

(छठी – धार्मिक संस्कार का गीत)

काकाजी बाबाजी जी मेंढरा नंद गोपाला रे,

कीका तुं भले आयो अजरे तोजे दादा सरीये काज रे

 कीका तूं..

कीका कोथरडी बंध कयो रे,

 तो जी फूई मंगे से ड्यो रे कीका तुं....

कीके जे खोळे खारेक रे,

 कीके जा दादा पोंख्यों रे कीका तूं...

कीके जा सत-पंज वाघा रे, कीके जा मामा नागा रे,

 कीका तुं....

कीके जे खोळे खजूर रे कीके जा मामा मजुर रे

 कीका तुं...

कीके जे खोळे धाणी रे,

 कीके जी मामी काणी रे

 कीका तुं भले आयो अज रे

आनंद भयो रे तोजे दादा सरीये काज रे।[[66]](#endnote-67)

(4) जनेऊ देते वक्त का गीत

लीली टोपी रे ब्रह्मचारी वांके अंबोडे,

वांके अंबोडे ने चडो वरघोडे।

राजानी वाडीमां मस्तान बेठउं रे,

मस्ताने बेसीने वात विचारी रे,

रुठडा ब्रह्मचारी ने कोण मनावे रे।

रुठडा ब्रह्मचारी ने दादाजी मनावे रे।

दादा मनावीने जनोयुं देवरावे रे,

तोय ब्रह्मचारीना मनमां न आवे रे।[[67]](#endnote-68)

(5) रींगणें जे कारण

गड़ो मरजी आयो रींजणें जी अम्मा,

वडले हेठ मुंजे रींगणें कारण थई रे लड़ाई।

डोकरे जा रींगणा गंया बाई अम्मा,

मां रे मां वांभीये जो क्योरे बेघार

रींगणे जे कारण थई रे लड़ाई

कुनी धुई ने बघार जो क्यों छुंछाट,

मां रे मां रींगणे जे कारण थई रे लड़ाई

बटी में लख गनी चख्यो रे अमा

मां रे मां नढरो देर न बनी ये ससके,

रींगणे कारण थई रे लड़ाई।

सास बनी ने पंढ़जे घणी के वें,

मां रे मां रींगणे कारण थई रे लड़ाई।

सोरो बनी ने पंढ़जे पुतर के ये,

सुण बच्चा सुण ऐरी नार के कढ बार बई गनी अब,

मां रे मां रींगणे कारण थई रे लड़ाई।

सगा सम्धी क्यों समुधर घणे दूर,

ठकणी खणी बूडी मर डारी ने मूछे वाळा।

रींगणें कारण थई रे लड़ाई।

बालम तकड़ो-तकड़ो पूठीया व्यो,

घर हल रे मुंझे नंढरे बवलें जी मां।[[68]](#endnote-69)

(6) सनुं सेमो नती जाणां सिंधीयाणी

मुंजो बापा बोराय मुंके मले मातें

सनुं सेमो नती जाणां सिंधियाणी।

मुंजी माडी गनी डनें मुं के सनी सुई

सनुं भरत नती जाणां सिंधियाणी।

आऊँ मलीर वनां झच्छा मोती सनुं

सेमी नती जाणां सिंधियाणी।

मुंकी भाभी गली डने सच्चा मोती,

सनुं भरत नती जाणा सिंधियाणी ।

आऊँ मलीर वनां इनजा अच्छा मोती

सनुं सेमो नती जाणां सिंधियाणी।

मुंजो काका बोराये मली मां ने

सनुं सेमो नती जाणां सिंधीयाणी। [[69]](#endnote-70)

(7) मणियारो

उत्तरखंडेथी मणियारो ऊतर्यो

घोळी जाउं घोळी जाउं ऊडे रे

 कांई झीणी लाल गुलाल

मणियारडा रे जीओ गोरलना सायबा रे

 नीमाणां नेणारो रे मणियार

 मीठुडी बोलीनो रे मणियार

 सांवरी सुरतनो रे मणीयार

देराणी-जेठाणी बेनी जोडली

घोळी जाउं गोळी जाऊं जोवे रे

 मणियारडा तारी वाड मणियारडा रे...

तळावनी रे पाळे मणियारो ऊतर्यो

घोळी जाऊं तंबुडा ताण्या छे वडला पास, मणियारडा रे...

ताळ रे भर्यो सग मोतीडे

घोळी जाऊं हेते रे वधावो लाल मणियार, मणियारडा रे...

कोई कोई वोरे रे खारेक टोपरां

घोळी जाउं अमे रे वधावीए लाल मणियार, मणियारडा रे...

जनम दीधो रे मणियारानी मावडी

घोळी जाऊं रूप रे दीधो दीनोनाथ, मणियारडा रे.....

चडतां रे चूडी भांगी मारी काचनी

घोळी जाऊँ ऊतरतां नंदवाणो मारो हार, मणियारडा रे...

चूडी तो सांधे दिल्लीनो बादशा,

घोळी जाऊं हार रे परोवे मणियार, मणियारडा रे...

(8) एक हालार शेरना हाथीडा,

कंह आव्या अमारे देश मोरली वागे।

छेल छोगाळो होय तो मूलवे,

डोलरियो दरिया पार मोरली वागे छे।[[70]](#endnote-71)

- - -

गाजे विहंगतणा गान थी रे, मांहे टहूके कळायेल मोर

मने व्हाला बालम जी ना वेणला रे, जाणे वरसे मंद-मंद मेहूलो रे

जाण फूलडां झरे कोई फोरंता रे, लळी आवे सागर तणी लहेर

भले वरसे अंगार कोई अनिथी रे,

भले करवत थी काळजुं कपाय, रहे रसनी सरित उरे रेलती रे

पडी जूठा संताप सहू जाय[[71]](#endnote-72)

- - -

(9) के मेलुं सुंदर सासरी रे, केम मेलुं रे मा ने बाप?

हसती मेलुं सुंदर सासरी रे, रोतां मेलुं रे मा ने बाप!

सुखमां संभारुं सुंदर सासरी रे, दुःखमां संभारुं मा ने बाप!

जेम मेले गाय वाछरुं रे, तेम मेलुं रे मैयरवाट![[72]](#endnote-73)

* - -

(10) मा, मारी शोक्य तो मांदा पडिया रे

मा, एने शा ओसडियां पाउं रे, मानेती शोक्य ने रे।

आकडो, धतूरो, एलियो घोळीने पाव।[[73]](#endnote-74)

सारांश

 दाम्पत्य भावना के गीतों के प्रथम गीत 'आंबुडा जांबुडा हेठ रंनादेव में सुखी दाम्पत्य जीवन का चित्रण है। दाम्पत्य जीवन जब तक नारी माता नहीं बनती, तब तक पूर्ण नहीं होती। शिशु के जन्म से दाम्पत्य जीवन में बहार आ जाती है। शिशु दोनों के प्रेम का सेतु बनता है। इस सेतु के सहारे माता-पिता परिवार को अधिक सुखी बनाते हैं। वैवाहिक जीवन में प्रेम अति आवश्यक है। प्रेम से दाम्पत्य जीवन महकता है। इस महत्व से फूल खिलते हैं। नारी गर्भवती बनती है, उसके लिए मंगल प्रसंग होता है। आठवां महीना पूरा होते ही सीमंत प्रसंग बड़े धुमधाम से मनाया जाता हा। सात सुहागन उनकी विधीपूर्वक गोद में सभी चीजें डालकर उनके पीहर छोडने जाते हैं। दुल्हन जैसे श्रृंगार किये जाते हैं। गर्भवती स्त्री एवं परिवार के सदस्यों की मंगल घडी होती है। इस गीत में भाटिया जाति की सगर्भा स्त्री के संस्कार गीत का वर्णन है।

 द्वितीय गीत 'अं अं करेन कालो आंगळा धावे' में सगर्भा स्त्री की खुशी तब ही परिपूर्ण होती है जब वह सुंदर एवं स्वस्थ पुत्र-रत्न को जन्म दे। जो उसके कुल का दीपक बने। पुत्र-जन्म से सबी खुश होते हैं। शुभ सगुन से जन्मा बालक परिवार को अधिक ऐश्वर्य प्रदान करता है। शिशु की फूफी, बहनें और गीत गानेवालीं स्त्रियां शुभ अवसर का लाभ उठाकर साड़ी, आभूषण आदि उनके दादा, माता-पिता से माँगते हैं। दायिन भी सोने के आभूषण, बधाई देकर प्राप्त करती है।

 तृतीय गीत 'काकाजी बाबाजी जा नंढरा गोपाला रे' में जन्म से छः दिन बाद नामकरण के संस्कार को छठी के गीत के नाम से पहचाना जाता है। उस समय बालक की फूफी नाम ढूँढकर शिशु के लिए कपड़े, आभूषण आदि लाती है। विधिपूर्वक राशि के अनुसार नामकरण होते समय यह गीत गाया जाता है। इस गीत में शिशु का स्वागत करते हुए कहते हैं कि तुम भले हमारे घर आया, हम सब तुम्हारा स्वागत करते हैं। विनोदपूर्ण भाव से मामा को गालियां देते हैं। भाटिया जाति का यह गीत बहुत ही भावपूर्ण है।

 चतुर्थ गीत 'लीलुडी टोपी ने ब्रह्मचारी वाळे अंबोडो रे' में शिशु अवस्था से बालावस्था पार करके कुछ बड़ा होते ही जनेऊ के धार्मिक संस्कार हिन्दू धर्म में होते हैं और मुसलमान सुन्नत का धार्मिक संस्कार करते हैं। इस गीत में बालक जनेऊ संस्कार करने से पूर्व रुठ जाता है तब परिवार के सभी मनाते हैं। चीजें देने के लिए कहते हैं तो भी नहीं मानता। बाल-सहज हठ का इसमें वर्णन है। भाटिया जाति में यह गीत प्रचलित है।

 पंचम गीत 'गडो भरजी आयो रींगणे जो अम्मा' में दाम्पत्य भावना में कुछ अन्तर पड़ता है तो झगड़ा हो जाता है, दर्शाया है। दाम्पत्य जीवन सरल एवं शांत चलता है तो प्रेम अधिक नहीं बढ़ता। प्रेम में कुछ झगड़ा भी आवश्यक है। पति-पत्नी के झगड़े क्षणिक होते हैं। बिरहावस्था और घरेलू झगडों से ही दाम्पत्य प्रेम अधिक मजबूत बनता है। इस विनोदपूर्ण गीत में बैंगन जो सामान्य सब्जी है, उसको बैलगाडी में बेचने छोटे गांव में लाया जाता है तब नारी सस्ती सब्जी लेकर बहुत कम मात्रा में तेल डालकर सब्जी बनाती है। कई स्त्रियों की आदत चखने की होती है तो देवर देखकर अपनी मां से कहते है। बात आगे बढ़कर पतिराज तक पहुँचती है और ससुर तो पुत्र को सौत लाने का आदेश देता है। नारी घर छोड़कर जाती है तो पड़ोसी परिवार को कोसते हैं और पति तुरन्त पत्नी को मनाकर बच्चों के लिए घर आने को कहकर बुलाते हैं। इस प्रकार समाज में नारी को तुच्छ चीजों के लिए कितना अपमान सहन करना पड़ता है, इसका वर्णन है। संयुक्त परिवार की यह कहानी घर-घर की होती है।

 षष्ठ गीत 'सनुं सेभो नती जाणां सिंधीयाणी' में एक नारी की मनोव्यथा का वर्णन है। पुत्री को माता-पिता अधिक लाड़ करते हैं, उसे कुछ भी कला नहीं सिखाते। इससे जब तक पीहर में होती है तब तक भाभी, माता आदि से काम करा लेती है। जब ससुराल जाती है, कुछ सिलाई का काम करने को देते हैं, तब अपनी गलती का एहसास होता है। इसका वर्णन इस गीत में है। सिंध प्रदेश में रिवाज है कि सुई और बारीक मोती दहेज में दिये जाते हैं।

 सप्तम् गीत 'मणीयारा उत्तरखण्डेथी आव्या रे' में प्रसन्न दाम्पत्य का वर्णन है। दाम्पत्य जीवन में विश्वास अधिक महत्वपूर्ण होता है। अपने प्रियतम के प्रति अत्यन्त विश्वास है। पति रात बीतने के बाद बड़े सवेरे आता है तब नारी अपनी मनोभावना व्यक्त करती है कि मुझे अपने पति के सिवाय कुछ नहीं दिखायी देता। नारी पूरी रात रास खेलती है। किसी को देखकर अपने प्रिय की याद आती है। उसे खारिक-कोपरा, कुछ मीठा नहीं लगता, उसे सिर्फ अपना प्रियतम ही मीठा लगता है। प्रियतम आते ही विरहावस्था से संयोग श्रृंगार से प्रेम में डूब जाती है। अति सुखी विश्वासपूर्ण दाम्पत्य भावना का चित्रण हुआ है।

 अष्टम् गीत 'एक हालार शेरना हाथीडा और गाजे वडलो विहंग तणा' में नारी-पुरुष की अर्धांगिनी सच्चे रूप में दृष्टिगत होती है, का उल्लेख है। नारी की शक्ति अमाप है। पुरुष कितना भी विचित्र स्वभाव का होते हुए भी नारी उस पर अपनी अमाप शक्ति से काबू पा सकती है। इस गीत में पति आजीविका के बिना घर में बैठता है तो उसे दूसरों के उदाहरण देकर, प्रेरणा जगाकर आलसी मन को छुड़ाकर वास्तविक बनाती है। भारत की नारी विश्वास से सब कुछ समर्पण करती है। हरेक रूप से पति को मदद करती है। इस गीत में नौका बनाकर परदेश भेजकर अपना कर्तव्य पूर्ण करती है।

 नवम् गीत 'केम मेलुं सुंदर सासरी रे में एक साधन-सम्पन्न नारी जो अपने पीहर में अधिक सुखी थी, ससुराल में अत्यन्त कष्ट होने से व्याकुल होती है, इन्हीं मनोभावों का सुंदर चित्रण हुआ है। माता उसे वास्तविकता का एहसास कराती है कि सच्चा सुख ससुराल में ही मिलेगा। आधुनिक नारी में सहनशीलता का अभाव होने से वह जहर पीने के लिए तैयार है, ससुराल नहीं जाना चाहती। नारी जीवन की व्यस्तता व्यक्त हुई है।

दशम गीत 'मा, मारी शोक्य तो मांदा पडिया रे' में नारी-हृदय की व्यथा का वर्णन है। नारी, नारी की दुश्मन हो जाती है। नारी का रूप जितना सुंदर एवं कोमल है, उतना ही कठोर एवं खराब भी हो सकता है। इस गीत में दाम्पत्य भावना में कुछ दरार है। पति की प्रथम पत्नी को पति आदर एवं मान देता है। सोताय डाह के काररण उसे बहुत ही ईर्ष्या होती है। प्रेम के बीच जरा भी अभाव आये तो अच्छा नहीं लगता। प्रेम का त्रिवेणी संगम है। पति भ्रमर वृत्ति का होने के कारण दूसरा विवाह करता है। प्रथम पत्नी के लिए भारी आभूषण बनाता है तो सौत के लिए कुछ हल्के प्रकार के। प्रथम पत्नी को एक ही बात का दुःख होता है कि आभूषण के पैसे तो उनके प्रियतम को ही देने पडेंगे। सौत ने अपने प्रियतम पर कैसा जादू किया है, उसकी भी व्यथा व्यक्त हुई है इस गीत में। इस गीत में समाज में कई स्त्रियाँ ऐसी व्यथा से गुजरती होंगी, उनके प्रति दुःख की भावना व्यक्त हुई है।

**गुजराती और राजस्थानी के दाम्पत्य गीतः तुलना**

**समानता**

1. राजस्थआनी और गुजराती दाम्पत्य संबंधी गीतों में समान भावना प्राप्त होती है।
2. दोनों के गीतों में सुखी दाम्पत्य के गीत गाये जाते हैं।
3. दोनों के गीतों में पुत्र-जन्म का स्वागत, नाम-संस्कार आदि के गीत गाये गये हैं।
4. सगर्भा की स्थिति का वर्णन भी पाया जाता है।
5. दोनों के गीतों में गृहस्थ जीवन की कठिनाइयों से संबंधित गीत पाये गये हैं।

**असमानता**

1. राजस्थानी दाम्पत्य भावना के गीतों में आधुनिक स्त्री जो रुठ जाती है और पीहर रहना पसंद करती है, ऐसी भावना के गीत नहीं हैं जबकि गुजराती दाम्पत्य गीतों में पाये गये हैं।
2. राजस्थानी में अर्थ उपार्जन की प्रेरणा देने के गीत नहीं है जबकि गुजराती में हैं।
3. सोतिया डाह के गीत गुजराती में हैं, राजस्थानी गीतों में नहीं।
4. राजस्थानी लोकगीतों में जितने दाम्पत्य भावना के गीत हैं, उतने गुजराती में नहीं।

**निष्कर्ष**

 दाम्पत्य जीवन के चक्र पति-पत्नी हैं। वास्तविक प्रेम जब चर सीमा पर पहुँचता है तब ही दाम्पत्य जीवन संपन्न एवं संपूर्ण बनता है। दाम्पत्य भावना वैवाहिक जीवन के बाद ही शुरु होती है। पति-पत्नी एख-दूजे के सुख-दुःख के साथी, मित्र, पथदर्शक बनते हैं। दाम्पत्य जीवन में वास्तिवकता, सच्चाई, विश्वास एवं श्रद्धा अत्यंत जरूरी है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दाम्पत्य जीवन सुखी होता है तो शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक सभी प्रकार से विकास होता है। गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में दाम्पत्य भावना के गीत अधिक मात्रा में पाये गये हैं। दोनों प्रदेशों की समान भू-रचना के कारण समान भावना दृष्टिगोचर हुई है।

प्रकरणः नौ

**गुजरात एवं राजस्थान के लोकगीतः श्रमिक गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी श्रमिक गीत

सारांश

* गुजराती श्रमिक गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी श्रमिक गीतों की तुलना : समानता-असमानता
* निष्कर्ष

**गुजरात एवं राजस्थान के लोकगीतः श्रमिक गीत**

**प्रस्तावना**

 जीवन के अभावों की पूर्ति स्वप्न या श्रम-गीतों द्वारा होने पर हृदय का बोझ हलका होता है। लोकगीतों में श्रम का महत्वपूर्ण स्थान है। श्रम के साथ आनंद-प्राप्ति के लिए लोकगीतों के माध्यम से श्रम-साधना व्यक्त हुई है।

 श्रमिकों का जीवन श्रम में ही व्यतीत होता है। मजदूर हो यो नाविक, कोई भी श्रमिक गीतों द्वारा आनंद प्राप्त कर लेता है। गरीबों का यही एक सुलभ साधन है। बोझ उठाते समय नाविक हेला हेला जामसा करके कुछ-न-कुछ बोलते हैं ताकि थकान कम हो और बल ज्यादा बढ़े।

 श्रम विभाजन से कार्य अधिक सरल और कम समय में होता है। सामूहिक श्रम करने से आनंद-प्राप्ति के साथ मनोरंजन भी मिलता है।

 मनोवैज्ञानिक दृष्टि से श्रम केस थ गाने से मानसिक एवं शारीरिक स्वस्थता प्राप्त होती है। मन उद्योग या श्रम से ही प्रफुल्लित होता है। अतः गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में भी श्रम-गीत विशेष मात्रा में उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं।

राजस्थानी श्रमिक गीत

(1) चरखे का गीत

चाल रे चरखला हाल रे चरखला,

 ताकू तेरी सोयण, लाल गुलाबी माल,

चरकूँ-भरकूँ फिरै घेरणी, मधरी-मधरी चाल,

 चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।

गुन्हीं तेरी रंग रंगील तकली चक्करदार,

 चांखे क्यों दमड़को तेरी, पूफड़ियेरी घर,

 चाल रे चरखला, हाल रे चरखला।

कांतणवाली छेल छबीली बैठ पीढ़े डाल,

 महीं-महीं पूणी कांतै लंबी काढै तार।

 चाल रे चरखला हाल रे चरखला। [[74]](#endnote-75)

(2)म्हारे आंगणिये आमवारी झूँड

म्हारे आंगणिये आमवा री झूँड,

ज्यों री छाथा सारे आंगण जी राज।

छाया में बैठी पढ़ली डाल,

सात सहेली कातवा जी राज।

सात सहेली म्हारे सातूँ ओट,

म्हारी चरखों बिब में जी राज।।

सात सहेलियां मांडी हौड़,

कुण रे थासे काँत कूबड़ी जी राज।

हाथां ही कांतै कातड़ीयाल हाथां ही पूणी,

 बीख में जी राज।

कातूं तो म्हारी तूटै तार,

पुणी ना म्हासूँ, वीखणै जी राज।

औरां रा चरखा चालै जरभाट,

म्हारी चरखो पल-पल रनके जी राज।

सामी पोल्यां मारी बाईजी रो वीर,

सूता-सूता नरखता राज।

बाईजी रो वीरो उठ आईया जी राज,

को कांतो घण, सिंदू-सिंदू तार,

म्हैं मारी पुणी वीखणों जी राज।[[75]](#endnote-76)

(3) सासू-बहू म्हें चली खेत में

सासू-बहू म्हें चली खेत में,

 लीनी गंडासी हाथ बणायी झूंपड़ी,

सासूजी म्हें पूला काटया,

 म्हें काट्या सर ए पचास बणायी झूंपड़ी।

ऊँटा-ऊँटा पूलां ढोया,

 कोई सर गाडां के मांय बणाई झूंपड़ी।

म्हारे पराये छायी तिरणी,

म्हारे देवरिये गूंथ्यो पाल बणायी झूंपड़ी।

आ कोई झूंपड़ी म्हारो मालियो,

 कोई आ झूंपड़ी म्हारो मैल बणायी झूंपड़ी।[[76]](#endnote-77)

**सारांश**

 प्रथम गीत 'चाल रे चरखला हाल रे चरखला' में अर्थ-प्राप्ति के लिए कुछ-न-कुछ करना ही पड़ता हैष हरेक व्यक्ति के हृदय में अनेक इच्छाएँ होती हैं। अपनी निजी वास्तविक दुनियाँ बसाने के लिए श्रम ही आवश्यक है। नारी चरखा द्वारा अर्थ-उपार्जन करके परिवार की आर्थिक सहायता करती है। चरखा जल्दी चलाने के लिए अनेक प्रयत्न करती है। राजस्थान की नारी अत्यंत कार्यशील है। घर और श्रम दोनों में हाथ बँटाती है। श्रम के साथ गीत गाने से तन-मन स्वस्थ एवं आनंदित रहता है।

 द्वितीय गीत में जिसका शीर्षक है 'म्हारे आंगणिये आमवा रो झूँड', नारी-हृदय कोमल होने से भावनाओं के प्रवाहमें बह जाता है। श्रम तो दिन-रात करना ही पड़ता है। रेगिस्तान होने के कारण खेती से अधिक गृह-उद्योग पर अधिक निर्भरता होती है। इस गीत में श्रम का बोझ हल्का करने के लिए समूह श्रम पर महत्व दिया गया है। आम के पेड़ के नीचे गीत गाकर सहेलियां चरखा कांतते समय गीत गाती हैं। विनोदपूर्मण गीत गाने से काम का बोझ हल्का होता है। शर्त लगाकर काम करती हैं। बीच में बैठने वाली स्त्री का तार टूटने लगा क्योंकि उनका प्रियतम बैठा था। मन लगाकर काम करने में एकाग्रता आवश्यक है। श्रम के साथ एकरूपता होनी चाहिए।

 तृतीय गीत 'सासू-बहु म्हें चली खेत में' में श्रम परिवार में सुख एवं शांति प्रदान करता है। इस गीत में परिवार के छोटे-बड़े सभी श्रम को महत्व देते हैं। सास-बहू खेत का काम करती हैं। पति, देवर, सभी घर के काम में हाथ बढ़ाते हैं। झोंपड़ी बनाने में भी सामूहिक श्रम करते हैं। इस गीत में श्रम विभाजन एवं सामूहिक श्रम की भावना व्यक्त हुई है जो परिवार को सुख प्रदान करता है।

गुजराती श्रमगीत

(1) पगारजी पावली

शेठ मुंके डेरे पगारजी पावली।

पावली ता डई ने मुं कड़ला घड़ाइयाँ,

कांभीयें जी थई रे लुंटा लुंट जमाधार,

सोबेदार फोईदार शेठ मुंके डेरे पगार जी पावली।

पावली ता डई ने मुं मुठीयाँ घड़ाईयाँ

गुजरीजी थई रे लुंटा लुंट जमाधार,

फोईदार शेठ मुं के डेरे पगार जी पावली।

पावली ता डईने मुं हारलो घड़ाईयाँ

गुजरी जी थई रे लुंटा लुंट जमाधार,

फोईदार शेठ मुं के डेरे पगारजी पावली।

पावली ता डईने मुं नथड़ी घड़ाईयाँ

टीलड़ी जी थई रे लुंटा लुंट जमाधार

फोईदार शेठ मुं के डेरे पगारजी पावली।

पावली डई ने मुं ठोरिया घड़ाईयाँ

एरींग जी थई रे लुंटा लुट जमाधार,

फोईदार शेठ मुं के डेरे पगारजी पावली।[[77]](#endnote-78)

(2) लोढानुं दातेडुं

खरां लोढानुं मार दातेडुं रे लोल,

घड्युं पेला लालिया लुवारे, माला बालमजी हो,

हवे ना जाउं घास काटवा रे लोल!

डुंगरानी ओरे डुंगरी रे लोल,

पीपर ने ओरे घास, मारा बालमजी हो! हवे ना.

परणे वाढ्या पांच कोळियां रे लोल,

में वाढ्यां दसवीस, मारा बालमजी हो! हवे ना.

परणे तो लीधी बाली मारा लोल,

में लीधो छे वांक, मारा बालमजी हो! हवे ना.

परणानी बाली तूटी रे लोल,

मारो झलइको वांक, मारा बालमजी हो! हवे ना.[[78]](#endnote-79)

(3) सागर खेडूनी हेलामणी!

हे जाला, जामली सोबान! आवे चाली जामली, सोबान !

हलेसां मारो, जामली सोबान! गया चाली, जामली सोबान !

वाणां माली ! जामली सोबान ! सागरना बाळक, जामली सोबान !

मोजां उछळे ! जामली सोबान ! बाईनां जोरे, जामली सोबान !

सध हंकारो ! जामली सोबान ! आव्या सागरपार, जामली सोबान !

ईश्र्वरना आशरे ! जामली सोबान !

सारांश

 गुजराती श्रमगीतों के प्रथम गीत 'शेठ मुंके डेरे पगारजी पावली' में श्रमजीवी नारी के हृदय के मनोभावों की अभिव्यक्ति है। हरेक व्यक्ति अर्थ-प्राप्ति के लिए श्रम करती है। राजस्थान की तरह कच्छ भी रेगिस्तानी इलाका होने से अर्थ-प्राप्ति के लिए कुदरत के साथ संघर्ष करना पड़ता है। इस गीत में सामान्य स्थिति की नारी अपने मन की इच्छा को विनोदपूर्ण गीत द्वारा वर्णन करती है। एक के बाद एक आभूषणों के नाम लेती जाती है। हार खरीदना चाहती है तो झरमर (गले का आभूषण) की चोरी हो जाती है। अल्प तनख्वाह के कारण एक साधने जाती है तो दूसरा टूटता है। कठिन जीवन होते हुए भी श्रम के साथ विनोदपूर्ण गीतों से मन के भावों को व्यक्त करती हुई श्रमिक-बोझ बल्का करती है।

द्वितीय गीत 'खरां लोढानुं मार दातेडुं' में निर्दोष ग्रामजनों का श्रम गै, जो शहर की कृत्रिमता से दूर है। अपना सामान बेचने के लिए बाजार आना जरुरी है। सिर पर घास रखकर चलनेवाली श्रमवारी का मन बाजार में जौहरी की दुकान पर स्थिर हो जाता है। वैसे तो उसका वर उसे परिश्रण करके बहुत कुछ ला देता है, मगर मन तो मन है।

 तृतीय गीत 'सागर खेडूनी हेलामणी' में दर्शाया है कि गुजरात में रेगिस्तान है और समुद्र तट भी है। नौका चलाने का, मछली पकड़ने का, जहाज बनाने का व्यवसाय है। इस गीत में श्रमिक भाई के प्रति बहन की मनोभावना व्यक्त हुई है। भाई नौका चलाता है और बहन परदेश होने के कारण भैया को नौका जल्दी चलाने को कहती है। भाई को समुद्रवटी धीरा कहती है क्योंकि संपूर्ण जीवन समुद्र में व्यतीत होता है। भाई को पैसा जल्दी भेजने को कहती है। इस गीत में राष्ट्रप्रेम भी व्यक्त होता है।

**गुजराती और राजस्थानी श्रम गीतः तुलना**

**समानता**

1. गुजरात और राजस्थान दोनों के श्रमगीतों में परिश्रम के समान गीत गाये गये हैं क्योंकि दोनों प्रदेश समान भू-रचना होने से अर्थ प्राप्ति के लिए प्रकृति के साथ संघर्ष करना पड़ता है।
2. दोनं प्रदेश में स्त्री-पुरुष श्रम करते हैं जो इन गीतों में प्रकट हुए हैं।
3. दोनों के श्रमगीतों में थकान दूर करने के लिए विनोदपूर्ण गीत गाकर श्रम को हल्का बनाने की भावना व्यक्त हुई है।
4. दोनों प्रदेश में मजदूरी करके श्रम करते हैं जो गीतों में अभिव्यक्त हुए हैं।

**असमानताः**

1. राजस्थान में खेती से अधिक गृह उद्योक हाथ-चरखा चलाकर या मट्टी उठाकर श्रम करते हैं। गुजरात में मिट्टी या तो समुद्रतट में मछलियां पकड़कर बेचने का व्यवसाय है। राजस्थान समुद्र से नहीं लगा है।
2. गुजरात में नाविका का व्यवसाय है जबकि राजस्थान में नहीं।

**निष्कर्ष**

 श्रम का आर्थिक, सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से महत्व रहा है। गुजरात और राजस्थान, दोनों को प्रकृति के साथ संघर्ष करके श्रम करना पड़ता है। राजस्थान में मजदूरी और गृह उद्योग, चरखा-कताई आदि व्यवसाय हैं। गुजरात में समुद्र-तट होने के कारण नाव चलाना, जहाज बनाने का एवं समुद्र से मछली पकड़ने का व्यवसाय अधिक होने से राजस्थान की तुलना में गुजरात के लोग अधिक सुखी एवं सम्पन्न हैं। गुजरात के श्रमिकों को श्रम करते-करते प्रकृति सौंदर्य भी समुद्र-तट पर देखने को मिलता है जो थकान को दूर करता है। राजस्थान के लोगों को जंगल से जड़ी-बूटी लाने से सौंदर्य प्राप्त होता है। इस प्रकार दोनों प्रदेशों की प्रजा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अडिग विचार वाली है। देश के प्रति उच्च राष्ट्रीय भावना दृष्टिगत होती है।

प्रकरणः दस

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीतः भक्ति-गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी भक्ति गीत

सारांश

* गुजराती भक्ति गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी भक्ति गीतों की तुलना: समानता एवं असमानता
* निष्कर्ष

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीतः भक्ति गीत**

**प्रस्तावना**

 भक्ति गीतों की धारा प्राचीन काल से प्रवाहित होती चली आ रही है। जीवन में मनुष्य को अति सुख या अति दुःख की अनुभूति होती है तब मन भक्ति की ओर अग्रसर होता देखा गया है। भक्ति व्यथित हृदय का पथ-प्रदर्शन करती है। भक्ति से मन एवं तन स्वस्थ एवं आनंदमय होता है। ईश्वर प्रेम में एक हो जाना एक बहुत ही अनोखा अनुभव है। जो इस दुनियाँ से अलग दिनयाँ में ले जाता है। मन को शान्ति प्राप्त होती है तथा जगत् का अलौकिक आनंद प्राप्त होता है। गृहस्थाश्रम से वानप्रस्थाश्रम की ओर जाने वाले भक्ति मार्ग को स्वीकारते हैं। निजानंद का मार्ग प्राप्त करने के लिए भक्ति श्रेष्ठ है।

 धर्म और भक्ति की धारा गुजरात और राजस्थान के लोक-जीवन में स्वच्छन्द रूप से बहती है। दोनों प्रदेशों में एक ओर देवी-देवताओं के मंदिर और मंडप दृष्टिगत होते हैं तो दूसरी ओर मुसलमानों की मस्जिदें, सिक्खों के गुरुद्वारे, ईसाइयों के गिरजाघर और जैनियों के तीर्थस्थलों की प्रतिमाएँ राजाओं की धार्मिक उदारता के उद्घोष हैं।

 गुजराती और राजस्थानी लोकगीतों में अनेक भक्ति गीत पाये जाते हैं। जिन पर ध्यान गया है, उनमें से कुछ यहाँ दृष्टव्य है।

राजस्थानी भक्ति गीत

(1) सती माता का गीत

सती माता । कागेड़ा रा वाजा वाजिया

 मोटों री जायी।

सती माता बिलाड़ा मढरा बाजा वाजिया।

बिलाड़ा गढ़ रा धुरिया हें निसांण ।

सैयां बी ठोड़ा रा बाजा बाजिया।

सती माता मातो तो धोयो पीली मेंट सूं।

सती माता चोपड़ियो तेल (ए) चम्पेल,

 मोटां री जायी।

सती माता राम भजै नै घोड़े थ चढ़ो।

सती माता येई तो खीली प्रेम री ।

सती माता सजिया सोल्ह सिणगार,

सती माता ओ रोटियां पीवतां करियो ऐड़ो विचार।[[79]](#endnote-80)

(2) अम्बी माता रो गीत

अम्बी थारा मोरवा मोती चूगे ए मां,

मां थारो मेंमद झरणी अजब बण्यो

बाजी ओ थांरी राखड़ी सवायो राज रो रूप म्होंरी माँ।

अम्बी थारां मोरणा मोती चूगे ए मां,

सखेज सालु झरणी अजब बण्यो,

हांजी हो थांरा कंचु आ बायो राज रो रूप म्होंरी मां।

अम्बी थारां मोरवा मोती चूगे ए मां,

नाकां ने ज्यो बेसर झरणी अजब बण्यो

हांजी ओ थारी नथड़ी सवायो राज रो रूप म्होंरी मां।

अम्बी थारां मोरवा मोती चूगे ए मां,

हीवड़ा ऐ हांस ज्यो झरणी अजब बण्यो,

हां जी ओ थारां तमण्या सवायो राज रूप म्होंरी मां।

अम्बी थारां मोरवा मोती चूगे ए मां,

बाया ने बागू झरणी अजब बण्यो,

हां जी ओ थारा गजरा सवायो राज रो रूप म्होंरी मां।

अम्बी थारां मोरवा मोती चूगे मां।। [[80]](#endnote-81)

(3) राम

जनमे राम बड़े री आनंद में,

 बड़ी री खुशियों में।

राजा दशरथ हत्ती बलैसे,

रहा एक हाथी राजाजी की हतशाला में।

माता कौशल्य मोती बलसै

रहा एक मोती रानीजी की नथ में।

कौशल्याजी की नथ में,

जन्मे राम बड़े ही आनंद में,

बड़ी ही खुशी पावे भक्तजनों श्रीराम के दर्शन से।[[81]](#endnote-82)

(4) सती माता

माथा ने बमर घड़ाव रे सायण म्हारा,

सायब को डोलो चंदन नीचे ऊबो।

चंदन नीचे ऊबो, चमेली नीचे ऊबो,

सायम से छेटी भर्ता पाड़ो रे,

सेवक म्हारा सायब को डोलो।

बड़प्पन चुड़लो विराव रे सेवग म्हारा सायब।

मुबिया ने रतन घड़ावो रे सेवग म्हारा।

पगल्या ने नेवर घड़ावो रे सेवग म्हारा।

अड़गें-ने सालूड़ो रंगावो रे सेवग म्हारा,

सायब को डोलो चंदन नीचे ऊबो।[[82]](#endnote-83)

(5) तेजाजी

कुल में तो दोय फूलड़ा बड़ाजी,

 एक सूरज दूजो चांद हो।

ऊबा सगलां ओ तेजाजी थे बड़ा जी,

 सूरज री किरणां तपैजी।

चन्दा री निरमल रात हो,

कुल में तो दोय पूलडां बड़ा जी,

एक धरती दूजौ आसमान हो।

ऊबा सगलां ओ तेजाजी थे बड़ा जी,

इन्दर तो बरसावे हो नीर हो

धरती में निपजैले धान हो।

कुल में तो दोय पूलड़ा बड़ा जी,

एक मायड़, दूजो बाप हो।

ऊबा सगलां ओ तेजाजी तें बड़ा जी,

मायड़ जण जनम दोनों

बाप लड़ावे छै लाड़ हो।[[83]](#endnote-84)

(6) भेरुजी

पाती दोनी ओ कड़वां लीम री,

भेरुजी लीप्या ने चूंप्यां मारा आंगणा।

भेरुजी पगल्या रा तोड़ण वाला दोनी ओ अन्तरजामी।

भेरुजी राम रसोई म्हारे सीगे चढ़ी,

भेरुजी टुकड़ा रा तोरण वाला दोनी ओ अन्तरजामी।

पाती दोनी ओ कड़वा लीम री,

भेरुजी गायां तो मैस्यां म्हारे अते घणी,

भेरुजी दुधड़ा रा पीवण वाला दोनी ओ अंतरजामी।

भेरुजी सासूजी री आई नणदल अते घणी,

भेरुजी भुवा रा केवण वाला दोनी ओ अन्तरजामी।

बेरुजी सासुरा जावा देवर अते घणा,

भेरुजी काका का केवण वाला दोनी ओ अंतरजामी।

भेरुजी अन्न-धन्न लक्ष्मी म्हारे अते घणी,

भेरुजी लक्ष्मी रा बिलसण वाला दोनी ओ अंतरजामी।

पाती दोनी ओ कड़वा लीम री।[[84]](#endnote-85)

सारांश

 राजस्थानी भक्ति गीतों के प्रथम गीत 'सती माता । कागेड़ा बाजा बाजिया' में अटल विश्वास और भक्ति से अनेक अशक्य कोटि के कार्य भी सिद्ध हो सकते हैं, दर्शाया गया है। 'सो दवा एक दुवा' अर्थात् दवा से भी बढ़कर दुवा (आशीर्वाद) होता है। सती माता जो नारी अपने पति के पीछे सती हो जाती है, उसकी याद में पत्थर पर दो हाथों की प्रतिकृति रखी जाती है। सिंदूर चड़ाया जाता है। पुराने समय में गुजरात एवं राजस्थान में अनेक स्त्रियाँ सती हुई थीं। मान्यता के अनुसार उनकी बाधा रखने से सब दुःख दूर होते हैं। इस गीत में सती-माता के श्रृंगार का वर्णन बहुत ही भावपूर्ण हुआ है। भक्तों के भाव का इस गीत द्वारा चित्रण हुआ है।

 द्वितीय गीत 'अम्बी थारा मोरवा मोती चूगे ए मां' में अम्बा माता के श्रृंगार का अत्यन्त वास्तविक चित्रण है। अम्बा माता के नौ दिन नोरते किये जाते हैं जिसे नवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है। नौ दिन उपवास अनुष्ठान आदि किये जाते हैं और रात में गरबे के कार्यक्रम होते हैं।

 तृतीय गीत 'जनमे राम बड़े री आनंद में' राम भगवान को सभी पूजते हैं। कोई व्यक्ति की पूजा नहीं होती, उनके आदर्शों की पूजा होती है। श्रीराम आदर्शवादी थे। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है। उन्होंने अपने आदर्शों के लिए अपनी पत्नी सीता का त्याग कर दिया था। जैसे ही श्रीराम का जन्म होता है, उनके माता-पिता के हर्षोल्लास का वर्णन है। इस गीत द्वारा भक्त के मनोभाव व्यक्त हुए हैं।

चतुर्थ गीत 'माथा ने भमर घड़ाव रे सेवक म्हारा' में सती-माता की पूजा-संबंधी भक्त के मनोभावों की अभिव्यक्ति हुई है। एक नारी अपने प्रियतम के डोले की प्रतीक्षा करती हुई कहती है कि प्रियतम का डोला चंदन-चमेली के पेड़ के नीचे खड़ा है। सती माता की पूजा करते हैं। प्रत्येक परिवार में अलग सती की आराधना होती है। सती माता के पगलों को सुंदर बनाकर सिंदूर से पूजा करते हैं।

 पंचम गीत 'कुल में तो दोय फूलड़ां बड़ा जी' की भावना अलग-सी ही है। तेजाजी जिन्हें राजस्थान में पूजते हैं, उन तेजाजी की प्रकृति के तत्वों के साथ तुलना की है। हमारे कुल में दो पुष्प खिले हैं- एक सूरज, दूजा चाँद। इस गीत में तेजाजी की शक्ति से सूरज तपता है, धरती, आकाश, मेह आदि प्राकृतिक तत्त्वों की तुलना की है।

षष्ठम् गीत 'पाती दोनी ओ कड़वां लीम री' में नारी-हृदय के भाव भक्ति-गीत के रूप में प्रवाहित हुए हैं। भैरुजी के प्रति आदर व्यक्त किया है। नारी भैरुजी से अनेक इच्छाएँ पूर्ण करने की भावना व्यक्त करती हुई प्रार्थना करती है कि मुझे संतान दो- आंगन में खेलने वाले, देवर को काका कहने वाला बालक चाहिए। नारी जब व्याकुल हो जाती है तब देवी-देवताओं की आराधना करके मन की शांति प्राप्त करती है। भक्ति-गीतों द्वारा मन को शांति मिलती है।

**गुजराती भक्ति-गीत**

(1) माता आशापुरा

माता कच्छ धरा जी जगदंबा आशापुरा रे,

अंबा बालब्रह्मकुमारी ब्राह्मणी साक्षात्

कच्छजी वाड़ीजी रखवारी मा आशापुरा रे।

धींगी कच्छ धरा अने धींगा रात तोखार,

धींगा रण-जोदा, जिते जेराता झूंझार,

धींगी कच्छ धणियाणी देवी आशापुरा,

धींगी रणवीरें जी ते जी ली तलवार माता आशापुरा रे।

तुंज कमंछा, कालका, महामाया, मोमाय,

आदि मात आशापुरा आश असांजी आय,

तुं गात्राड भवानी त्रिपुरारी वाघेश्वरी रे

तुं समधर जी सायक आशापुरा माता रे।

माता मात भवानी राणी तुं जगत जी आधार,

तो जो जग में आय जय-जयकार।

 माता आशापुरा कच्छजी रे।[[85]](#endnote-86)

(2) केसरियो रंग तने लाग्यो ल्या गरबा

केसरियो रंग तने लाग्यो ल्या गरबा,

 केसरीओ रंग तने लाग्यो रे लोल.

झीणी झीणी जाळीओ मेलावी ल्या गरबा,

 झीणी झीणी जालीओ मेलावी रे लोल.

थोडा थोडा साथिया पुराव्या ल्या गरबा

थोडा थोडा साथिया पुराव्या रे लोल

कोने कोने माथे गूम्यो ल्या गरबा,

 कोने कोने माथे घूम्यो रे लोल

अंबे माने माथे घूम्यो ल्या गरबा,

 अंबे माने माथे घूम्यो रे लोल

गढ आरासुरथी आव्यो ल्या गरबा

 गढ आरासुरथी आव्यो रे लोल.

चाचरना चोकमां घूम्यो ल्या गरबा,

 चाचरना चोकमां घूम्यो रे लोल.

बहुचर माने घूम्यो ल्या गरबा,

 बहुचर मेन माथे घूम्यो रे लोल.

गढ पावागढ थी आव्यो ल्या गरबा,

 गढ पावागढथी आव्यो रे लोल

चांपानेरना चोकमां घूम्यो ल्या गरबा

 चांपानेरना चोकमां घूम्यो रे लोल

केसरियो रंग तने लाग्यो ल्या गरबा,

 केसरियो रंग तने लाग्यो रे लोल[[86]](#endnote-87)

(3) हाजी पीर

हाजी पीर वली अल्ला, मनजी उमेधुं पूरीयुं करो,

अंधले के अखियुं डयोता वली दातार,

बांजीयें के ड्योता बीया वली दातार,

 मनजी उमेधुं पूरीयुँ करो।

लंगड़े के पग ड्योता वली दारा,

लखुं माडु अचेंता पगे वली दाता

 मनजी उमेधुं पूरीयुँ करो।

कोडीला अवेंता पीर आंजी दरगातें

कोडीलेंजी कोड पूरी कयो वली दातार

हाजीपीर वली अल्ला मनजी उमेधुं पूरीयुँ करो।[[87]](#endnote-88)

(4) मीरा दातार

पीर ऊनामां मीरां दातार ओलिया रे

पीर आंधळा आवे रे पीरनी दरगाहे रे

पीर आंख्युं दियो घरे जाव रे। मीरां दातार

ऊनामां मीरां दातार ओलिया रे

पीर वांझियां आवे रे पीरनी दरगाहे

पीर पुतर दियो घेर जायें रे। मीरा.

ऊनामां ...... रे

पीर पांगळां आवे रे पीरनी दरगाहे रे

पीर पग दियों घेर जावै रे। मीरा.

पीर कोढियां.............. रे

पीर कोढियांने काया अलावो रे। मीरा.

पीर ऊनामां मीरां दातार ओलिया रे।[[88]](#endnote-89)

(5) घर बार मेल देने

घर बार मेल देने, साल मारी संगाते,

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

सारां साबर मेल देने, साल मारी संगाते,

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

भाई ने भोजाई मेल देने, साल मारी संगाते,

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

काका न बाबा मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

मामो मामी मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

फूई ने फूओ मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

कहळी कटंब मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

चोडां बीडां मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

गायां भींशां मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.

धन माया मेल देने, साल मारी संगाते

 ओ ओ साधुडी, ओ ओ भगति, -ओ ओ जी.[[89]](#endnote-90)

(6) सती तोरल

 पाप तोजो प्रकाश जाड़ेजा

धरम तोजो संभाळ रे तोजी बेडली के

बुडेले नहीं डींयां रे जाड़ेजा रे

 हीं तोरल चेती जी।

जटला मधे जा बाळ तोरी राणी,

इतरा तोरी राणी ऊँ क्या ऐ पाप रे,

 जाड़ेजा हीं चेरे ।

लूंटीं कुंवारी जान तोरी राणी

 लुंटी कुंवारी जन रे

सतवीसुं मोर बंधा मारया तारेतादे रे

 हीं जाड़जो चे तो रे।

हरण हण्या लखयार सती राणी,

 हरण हणया लखयार रे

मेण माणेजा आऊँ मार्या रे

 तोड़ादे रे हीं जाड़ेजो चेतो जी रे।[[90]](#endnote-91)

**सारांश**

 गुजराती भक्ति गीतों में प्रथम गीत 'माता कच्छ धरा जी जगदंबा' में लखपत तहसील में राजपूतों की कुलदेवी आशापुरा माता का स्थान बहुत ही पवित्र एवं अद्भुत मानने का वर्णन है। भक्त भक्ति के लिए आशापुरा माताजी की आराधना करते हैं। आशापुरा देवी आशाओं को पूर्ण करने वाली देवी है। विश्वास एवं श्रद्धा के सहारे जरुर इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। भक्ति सच्चे हृदय से करनी चाहिए। आशापुरा को कच्छ की धरा की माता कहा है। कच्छ के जाड़ेजा शासकों की कुलदेवी भी है।

 द्वितीय गीत 'केसरियो रंग तने लाग्यो' में नारी-हृदय के भाव माताजी के प्रति भक्ति के द्वारा व्यक्त होते हैं। नवरात्रि के नौ दिन स्त्रियाँ उपवास एवं अनुष्ठान करती हैं। साथी ही रंगोली आदि से माताजी का स्वागत किया जाता है। मिट्टी के गरबे में शाम को पूजा के साथ दीप जलाया जाता है। पूरी रात गरबे एवं दांडीया रास होता है। इस गीत में माताजी के श्रृंगार का वर्णन है।

 तृतीय गीत 'हाजीपीर वली अल्ला मनजी उमेधुं पूरीयुं करे' में अलग भावना व्यक्त हुई है। कच्छ के रेगिस्तान में एक संत हो गये जिन्होंने अपने चमत्कारों से लोगों के दुःखों को दूर किया। इस गीत में नारी अपने मनोभाव व्यक्त करती हुई कहती है कि तुम मेरी इच्छा पूर्ण करो। आप नेत्रहीनों को आंखें देते हो, निःसंतानों को संतान देते हो, लंगड़ों को पैर देते हो। आप मेरी सर्व इच्छाएँ पूर्ण करो। अनेक आशावादी लोग तुम्हारे दर्शन के लिए पैदल आते हैं। इस प्रकार नारी भक्ति द्वारा शांति प्राप्त करती है।

 चतुर्थ गीत 'मीरां दातार ओलिया रे' में सौराष्ट्र के ऊना के पीर दातार का वर्णन है। भक्त अपने पीर के लिए जितना खुश होकर ढोल, नगाड़े, नौबत, शहनाई, रहने के लिए महल, नहाने के लिए नाहियेर का दातून, सुंदर भोजन मुखवास, सोने के लिए सुंदर पलंग आदि के द्वारा अपने वास्तविक भावों की अनुभूति व्यक्त हई है। भक्त देव के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होता है क्योंकी निष्ठापूर्वक की गयी भक्ति में स्वार्थ न होकर केवल विश्वास होता है। अंधे को रोशनी, बाँझ को पुत्रप्राप्ति, कोढ़ी को काया प्रदान करने वाले हैं।

 पंचम गीत 'घर बार मेल देने' में संसार के प्रति वैराग्य उत्पन्न होने से एख नारी साध्वी हो जाती है। उसे वास्तविकता का अहसास कराना चाहती हुई स्त्रियां अपने मनोभाव इस गीत में प्रकट करती हैं। जैन धर्म में यौवन काल में कई स्त्रियाँ संसार का त्याग करती हैं। श्वेत वस्त्र पहनकर उपाश्रय में विविध स्थलों पर रहते हैं। दीक्षा लेते समय दुल्हन की तरह सजाकर गीत गाते हैं और दान करते हैं। उसी समय स्त्रियाँ गीत गाती हैं कि संसार के सुख छोड़कर, माता-पिता को छोड़कर गुरू के प्रति क्यों मन लगाया। सखियों का साथ छोड़ दिया। बड़ा ही हृदयद्रावक दृश्य दीक्षा के समय होता है।

 षष्ठम् गीत 'पाप तोजो प्रकाश जाड़ेजा' में सति तोरल अपने पति के साथ सौराष्ट्र से कच्छ आती है तब समुद्र में भयानक तूफान आता है। जेसाल डाकू था जो घबराता है। तब सती तोरल उसके पापों का प्रायश्चित करने को कहती है। आज भी अंजार कच्छ में उनका मंदिर है। नारी की भक्ति इसमें व्यक्त होती है।

**गुजराती और राजस्थानी भक्ति गीतों की तुलना**

**(क) समानता**

1. गुजराती और राजस्थानी भक्ति गीतों में समान रूप से भक्ति के भाव प्राप्त होते हैं।

2. दोनों के भक्ति गीतों में सती माता के गीत पाये जाते हैं, किन्तु राजस्थान की अपेक्षा गुजरात में कम पाये गये हैं।

3. दोनों के प्रदेशों में माताजी के गीत समान रूप से उपलब्ध हैं।

**(ख) असमानता**

1. राजस्थान में पीरों के गीत कम मिलते हैं, जबकि गुजरात में पीरों के बहुतायत में हैं।

2. राजस्थान में दीक्षा संबंधी गीत नहीं मिलते जबकि गुजरात में मिलते हैं।

3. गुजरात में देवताओं के गीत कम मिलते हैं जब कि राजस्थान में अधिक मिलते हैं।

**निष्कर्ष**

 धर्म और भक्ति की धारा दोनों प्रदेशों में स्वच्छन्द रूप से प्रवाहित होती है। दोनों प्रदेशों के धार्मिक रीति-रिवाज एक समान हैं। सभी धर्मों का दोनों में मेल है। गुजरात में मुस्लिम पीर (संत) को सभी धर्म के लोग आदर करते हैं। यह असांप्रदायिकता का प्रतीक ह। भावात्मक एकता मजबूत होती है। भक्ति से ही मन को शांति प्राप्त होती है। जगत् का अलौकिक आनंद एवं निजानंद की खुशी भक्ति के पथ से प्राप्त होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भक्ति से ही मन सशक्त बनता है।

प्रकरण : ग्यारह

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीत : प्रकृति के गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी प्रकृति वर्णन के गीत

सारांश

* गुजराती प्रकृति वर्णन के गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी प्रकृति-वर्णन के गीतों की तुलना : समानता एवं असमानता
* निष्कर्ष

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीत : प्रकृति के गीत**

**प्रस्तावना**

 प्रकृति अखण्ड चैतन्य का प्रतीक है जिसमें मनुष्य अपनी भावानुभूतियों को प्राप्त करता है। प्रकृति नया जीवन जीने की प्रेरणा देती है। प्रकृति के आनंद दूर से उनके सौंदर्य से मिलता है। प्रकृति हरेक तत्त्वों में समायी हुई है। प्रकृति-तत्त्व को जानने के लिए दृष्टि चाहिए। प्रकृतिवादी प्रकृति के मूल तत्त्वों को पहचान सकते हैं। वे अनुभूतियों के द्वारा विचार व्यक्त करके दूसरों को दृष्टि प्रदान करते हैं। निराश, थके हुए व्यक्ति समुद्र-तट, झरनों का नाद,भौरों की गुंजन आदि से सबी व्याकुलता को भूल सकते हैं। वर्षा प्रकृति की रानी है। वर्षा प्रकृति को विविध फूलों, पक्षी और मंद-मंद समीर, झरनों से सजाकर नयी दुल्हन बनाती है।

 ऐसे ही प्रकृति वर्णन के गीत इन दोनों भाषाओं में जो व्यक्त हुए हैं, उन्हें देखिए।

**राजस्थानी प्राकृतिक वर्णन के गीत**

(1) पावस ऋतु

मोटी मोटी छींटा मोझरयो वादली,

ओसरयो ए वादली।

कोई जोड ढेल मारे सुरंगी,

ऋतु आयी म्हारे देश।

भली ऋतु आयी ओ वादली,

घुण चीजे बाजरी ओ बादली।

ओ घुण बीजै मोठ गया भिजरा

सुरंगी रात आयी म्हारे देश ओ वादली।[[91]](#endnote-92)

(2) मोर थारे आंगण नाचे

अम्मा ओ अम्मा थारे आंगण मोर नाचे।

हुँ सा हियरे मोर री मधुर आवाज,

बाजरी वेरूं थारा चोक मां।।

सुसरे घर अम्मा मोरनी नाचे,

हुँ सा हियरे मोरनी री मधुर आवाज।

मोर रो आवाज सुणी हुँ घर रो काम मेली दोडुं,

आंगण म्हारे मोर नाचे।

अम्मा थारे आंगण मोर नाचे,

हुँ सा हियरे मोर री मधुर आवाज ।।[[92]](#endnote-93)

(3) चाँदनी रात

चाँदनी रात म्हें लागे मीठी

 चाँदनी अजवारयो आँगण थारो,

कोयल टहुकै आंबलियाँ डाल,

 ढोला रमवा आव म्हें जोऊँ तारी वाट रे।

खर-खर वहेतां नदी राँ पानी,

 चाँदनी सां लागे दूध-साँ जी,

कोयल टहुकै आँबलिया डाल,

 ढोला रमवा आव म्हें जोऊँ तारी वाट रे।

फूलाँ रां झुंड लागे मने मीठा,

 चाँदनी साँ लागे म्हें प्यारा,

 ढोला रमवा आव म्हें जोऊँ तारी वाट रे।[[93]](#endnote-94)

**सारांश**

 प्रथम गीत 'मोटी मोटी छींटो मोझरयो वादळी' में वर्षा ऋतु का रोचक ढंग से वर्णन है। राजस्थान व गुजरात के कच्छ प्रदेश में रेगिस्तान होने के कारण वर्षा ऋतु के आगमन की बहुत खुशी होती है। मोर-मोरनी के कुंजन वातावरण को आनंद से भर देते हैं। वर्षा ऋतु में अनाज बोने की तैयारी का वर्णन है। इस प्रकृति गीत द्वारा राष्ट्रीय भावना व्यक्त हुई है।

 द्वितीय गीत 'अम्मा ओ अम्मा तारे आंगण मोर नाचे' में मोर के प्रति प्रेम का भाव व्यक्त हुआ है। मोर के लिए बाजरी का दाना देने और हृदय प्रेम से भर जाने की भावना है। प्रकृति के तत्त्वों के सौंदर्य से मनुष्य तल्लीन हो जाता है कि घरेलू कार्य सौंदर्य के स्थान पर विशेष महत्व नहीं रखते।

 तृतीय गीत 'चांदनी रात म्हें लागे मीठी' में पूनम की रात की चाँदनी का सौंदर्य से निखरने का वर्णन है। प्रकृति जब सौंदर्य से निखरने लगती है तब प्रिया-प्रियतम को रास खेलने का निमंत्रण देती है। कोयल की कूक, आम का पेड़, फूलों के झूंड आदि से मानव सहज भाव में प्रकट होकर गीतों में प्रवाहित होने लगते हैं।

**गुजराती प्रकृति वर्णन के गीत**

(1) मेघ आव्यो पण मानुनी नथी

दरियामां गाज्यो, गामडे वरस्यो,

 वरस्यो जाय रे मेघजी।

नागली रे वावी, कोदरा रे वाव्या

सीमे पाक्युं भात रे मेघजी।

सात पनियारी पाणीडां भरे

गोरी होय तो पाणीडां जाय रे मेघजी।

सात सहेरी, शेरी बुआरी

गोरी होय तो झांपो उघाड रे मेघजी।[[94]](#endnote-95)

(2) मोर

मारे आंगण अमरत आंबो रोपियो,

मारे आंगण टोडले कोर्या मोर,

 वधावो मारे आविया.

मारे आंगण सहियर पारेवां घूघवे,

मारे आंगण बेठो कळायल मोर,

 वधावो मारे आविया.

मारे आंगण सोनानो सूरज ऊगियो,

मारे आंगण मोती पूर्या चोक,

 वधावो मारे आविया.

\* \* \*

मारे आंगणिये तळशीनो केरो

तळशीने केरे रूडा राम रमे.

रूडा राम रमे, मोर मोती चणे,

मोर मोती चणे ढेल्युं ढूंगे वळे.

ढेल्युं ढूंगे वळे लीलो चमरो ढळे.

लीलो चमरो ढळे, किया भाईने गमे

राजुभाईने गमे, एनो मोभी परणे.[[95]](#endnote-96)

(3) कोयल

लीली वाडी मां लीलो आंबलो रे,

न्यां रे कोयलडीनो वास, कोयल बोले टहूकडे रे

आव्या शियालो रवरव्यो रे,

 आव्यो कसुंबीनो रंग रंगावो ने चूंदडी रे

पहेरो मारे नीनाबेन तमारे जावुं सासरे,

तमारा ससराने रढ्युं लागशे रे,

 आ रे चूंदडी क्यांथी वावरी रे?

वावरी माना महियार,

खंतीला मामे मोकली रे.

खंतीला मारा नीनाबाना मामा,

जगुभाईए मोकली रे.

रंगी रंगी नवानगर हेठय,

तळांणीमां तारवी रे.

पंचमसूरनी कोयल बोले

सामा ओरडीआमां अधमण जीरु

राजुभाई परणे त्यारे कौतुक दीठुं

राज कोयल बोले.

सामा ओरडीआमां अधमण खाजा,

विपुलबाई परणे त्यारे वगडावो वाजा,

राज कोयल बोले.

\*

किया भाईने मोभारे मोती जड्या

किया भाईनी वळिये वींट्या हीर रे,

तुं बोले रे मारा रुदिया परनी कोयल.

किया भाईनो मोभी घोडा खेलवे,

किया भाईनो कानुडो गोवाळ रे,

तुं बोले रे मारा रुदिया परनी कोयल.[[96]](#endnote-97)

**सारांश**

 प्रथम गीत 'मेघ आव्यो पण मानुनी नथी' में मेघ समुद्र में गरजे लेकिन गाँव में जाकर बरस पड़े और बरसते ही जा रहे है । खेत में जैसे धान बोर गए है और फिर खेत में फसल लहरा उठी है मेघ बरसने से । सात पनिहारिन पानी भर रही है । यदि गोरी होगी तो पानी भरने अवश्य जाएगी । सात सहेलियाँ मिलकर गली साफ कर रही हैं । यदि गोरी होगी तो अपने प्रियतम हेतु द्वार खोलेगी ।

 द्वितीय गीत 'मारे आंगण अमरत' में राष्ट्रीय पक्षी मोर के प्रति दया की भावना व्यक्त हुई है। मोर की सुंदर मोती जैसी आंख और मधुर आवाज के वर्णन द्वारा खुशई में नारी इन भावों से प्रकृति-वर्णन के गीत गाती है।

 तृतीय गीत 'लीली वाडीमां लीलो आंबलो रे' में विविध वृक्ष, आम वृक्ष, जामुन तथा नीबू के पेडों पर कोयल बोलती है। मधुर आवाज का प्रतीक एक ओर कोयल पक्षी अपने गूँजन से वातावरण को आनंदमय बनाता है, वहीं नारी भी सौंदर्य के प्रति आकर्षित हुई है जो कोयल के रूप में भी नारी की तुलना हुई है।

**गुजराती और राजस्थानी प्रकृति-वर्णन गीतोंकी तुलना**

**समानता**

1. दोनों प्रकृति गीतों में समानता अधिक दृष्टिगत होती है।
2. दोनों के गीत अल्प मात्रा में पाये जाते हैं।
3. दोनों के गीतों में मोर के प्रति अधिक प्रेम व्यक्त हुआ है।
4. दोनों के गीतों में वर्षा ऋतु के प्रति समान बाव है।

**असमानता**

1. राजस्थानी प्रकृति गीतों में वर्षा ऋतु, कोयल, मोर के गीत प्राप्त हुए हैं, जबकि गुजराती गीतों में सब्जी का गीत भी प्राप्त है।

**निष्कर्ष**

 हर मनुष्य प्रकृति से अधिक प्रेम करता है। प्रकृति से ही मनुष्य आनंद प्राप्त करके मानसिक शांति प्राप्त कर सकता है। हृदय की उमंग, अभिलाषाएँ प्रकृति के माध्यम से व्यक्त होती हैं।

 गुजराती और राजस्थानी प्रकृति गीत समान रूप से लेकिन दोनों प्रदेशों के कुछ हिस्सों में अल्प मात्रा में पाये गये हैं, क्योंकि रेगिस्तान होने के कारण हर साल वर्षा न होने से प्रकृति का सौंदर्य नहीं खिलता अन्य भागों में अच्छी वर्षा हो तो भी प्रकृति रेगिस्तान हो या सूखा पड़े, अपने-आप सौंदर्य प्राप्त कर ही लेती है। थोर के पेड़ में भी सुंदर फूल खिलते हैं। प्रकृति हमें नया जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है ।

राजस्थानी और गुजराती लोकगीतः निष्कर्ष

 राजस्थानी और गुजराती लोकगीतों में जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियों एवं विविध घटाएँ दृष्टिगत हुई हैं। कभी लोरी गीतों मे मां की वात्सल्य भावना उमड़ आयी तो कभी बाल-मानस के निरागस भाव प्रकट हुए। कभी विनोदपूर्ण ढंग से नारी आपस में छेड़छाड़ करती हैं तो कभी विवाह गीतों द्वारा मन का उल्लास प्रगट करती हैं। कभी प्रियतम-प्रेयसी के प्रेमभाव गीतों में शब्द-रू ले लेते हैं तो कभी दाम्पत्य गीतों में पति-पत्नी के घरेलू झगड़ों द्वारा जीवन का आनंद द्विगुणित हो उठता है। प्रिय पति के बिछड़ने से नारी व्याकुल होकर प्रिय की प्रतीक्षा करती है। शोक-गीतों में मृत्यु के बाद दुःखी मन की अभव्यक्ति होती है। देहातों में परिश्रण करने वाले श्रमिकों को नारी श्रम में हाथ बंटाती हुई गीत गाकर प्रोत्साहित करती है। स्फुट गीतों में बी पशुओं के प्रति प्रेम-भाव, नारी की आभूषणों के प्रति आसक्ति, त्यौहार का आनंद तथा पारम्परिक रीति-रिवाज की अभिव्यक्ति हुई है। इस प्रकार सभी अलग-अलग भावों के गीत पाठकों के समक्ष राजस्थान तथा गुजरात के जीवन का प्रत्यक्ष चित्र उपस्थित करने में समर्थ हैं जो मन को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

 इस प्रकार प्रकृति का मनुष्य जीवन में महत्वपूर्ण स्थान पाया गया है।

प्रकरणः बारह

**गुजरात और राजस्थान के लोकगीतः प्रकीर्ण गीत**

* प्रस्तावना
* राजस्थानी प्रकीर्ण गीत

सारांश

* गुजराती प्रकीर्ण गीत

सारांश

* गुजराती और राजस्थानी प्रकीर्ण गीतों की तुलना : समानता एवं असमानता
* निष्कर्ष

**गुजराती और राजस्थानी लोकगीतः प्रकीर्ण गीत**

**प्रस्तावना**

 गुजरात और राजस्थान के विविध भावनाओं के गीतों में माता के वात्सल्य भाव, बाल-मानस, विनोदपूर्ण भाव, वीरगाथाएँ, विवाह की खुशी, दाम्पत्य भाव, श्रमिकों के श्रम के साथ आनंद, भावपूर्ण भक्ति, प्रकृति सौंदर्य के गीत जैसे नो विभागों में विभाजित लोकगीतों का संपादन प्रस्तुत किया। विविध भावनाओं के गीत अधिक मात्रा में पाये गये हैं जो इस शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किये जा रहे हैं। ऐसे स्फुट मात्रा में पाये जाने वाले गीतों को अगले पृष्ठों पर दिया जा रहा है जिन पर स्वतंत्र रूप से विचार किया गया है।

**राजस्थानी प्रकीर्ण गीत**

1. पिल्ले का गीत

म्हारे घर में पिलड़ो पाळ्यो,

 दूध-दही को धापो जी।

वो पिलड़ो म्हारो इतरो मोटो,

 जितडी मोटी टोल गल वेरे

गल पट्टे बांध्यो घमा क्यां म्हे पनोड़,

कालो पिलड़ो कीसूं बूंत लड़ता में पोखायो जी,

म्हारे घर में पिलड़ो पाल्यो, दूध-दही को धापोजी।

आंगण मांय रहां रे ऊंची डेलो,

 जों चढ़ ऊंचो बैठो जी।

नाड़ माड़े फूला मांय देलै,

 नेक निकालो मारे जी।

राद वासे इतड़ो खारो,

 देख पूरा सूं धावै जी।

खुल्ला म्हारा करला बैठ्या,

 सूता मेड बकरियां जी।

चोर-चकोर नेड़ै नहीं आवै, बलडो रात रूखा लै जी।

म्हारे घर में पीलड़ो पाल्यो, दहीं-दूध को धापो जी।[[97]](#endnote-98)

(2) बिल्ली का गीत

मिनड़ी मर ज्याणी,

या दूध दह्याँ री बैरण लागी जी,

 मिनडी मर ज्याणी।

छाछ राबड़ी कदेय न चाखै,

 का मलाई जी, मिनड़ी मर ज्याणी।

मांचा नीचे दबकी बैठे, बैठी-बैठी ताके जी,

दाव पढ़ै जद बाहर आवे, छींको ढूंढे जी।

धारो परयो घीलोडियां म्हारो,

 छींका ऊपर धरियो जी।

गलवा रे ऊपर बांध्यो बातणो, गाढो फलियो जी।

सांझ पड़ी मैं लागी रसोयां, बटोड़ा में चाली जी।

लेय छाबड़ी छाणा लापवा,मिनड़ी री दाब लागा जी।

मार उछाळो छींका बढ़गी, नीचे डारयी जी,

दीय डबर घीलोड़िया रा करिया, बिवड़ो खाय गयी जी।

जद मेरी नणदल देखसी,

 मेरी सासूजी ने माय कैसी जी।

सासूजी म्हाने घणाय क, लड़सी गालियां देसी जी,

म्हारी तू कद की वैरण लागी जी, मिनड़ी मर ज्याणी।[[98]](#endnote-99)

(3) धीणे का गीत

 छछिया लावण, मारुजी मैं गई जी लेय,

 छछोली हाथ घर-घर खोली मांगती जी।

 कोईप न घाली, मारुजी, दोय टोपसड़ी छाछ रीती

 हांडी लेकर घर बाबडी जी।

पड़ोसणड़ी मारुजी बोल्या मने बोल,

छाछ चावै तो बैंस्यां बांधलो जी।

लावो-लावो जी मारुजी भैंस्यां दोय,

भैंस बिना धीणे घरमा सरैजी।

दूवां दूवां जी मारुजी, असल खादर की झोट

जद होवै मन का चावणा जे।[[99]](#endnote-100)

(4) दाल चूरमा

म्हारे करयो चूरमो-दाल

 आज धोकां तीजड़ली,

मण भर तो म्हें गेहूँडा पीस्या,

 घड़ी दोय दली एक दाल,

सासूजी म्हाँरा वोके दीनो,

 नणदी चूले ए जलाय.,

एक नाके म्हें चूलो जलायो,

 कोई दीनी-दनी दाल चढ़ाय।

नणदीबाई मांडा पीवै,

 म्हें लयी ऊंखली मंगाय,

घर-घर ऊखल फूटण लागी,

 चूं-चूं चूरमो फुटाय, नानो चूरयो चूरयो।

कोई बणियो बिसवा बीस

 म्हाँरो कुड़मो बैठ्यो जीमवा,

म्हाँरी सासड़ पुरस्याँ जाय,

 जद दाल-चूरमो खाबा लाग्या,

म्हारो जी गयो धपाय,

 आज धोकां तीजड़ली।[[100]](#endnote-101)

(5) मीठा गुलगुला

मीठा जी मीठा गुलगुला,

नणद-भोजाई गेहूँ रे पीस्या,

पीस्या-पीस्या सेर-दोय दोय प्यार।

बाईजी रो वीरो मेलां व्यायो,

सासूजी व्याया छै तेल।

तई ए चढ़ासी राय-रसोया,

सासूजी पूरजा छै तेल,

नणद लबाई सरबत कारियो।

म्हे ढोल्यो कुंटले घाल,

जद म्हारे तेल उबटियो,

लीनी छै सींक मंगाय,

म्हें चूंटण लाग्या गुलगुला।

नणदलबाई केरयां जाय,

बाईजी रो वीरो काबा बैठ्यो,

सासूजी रया पकड़ाय,

खाय-पीय चलूँ करी जद,

लीनी छै लांबी डकार,

जद म्हें सुणी रे डकारड़ी,

कई भर गयो म्हारो पेट,

मीठा जी गुलगुला।[[101]](#endnote-102)

(6) खीचड़ो

म्हारो मीठो लागै खीचड़ो

म्हारी बोली लागे खीचडी मीठो खीचड़ो

छुलक्यो-छांट्यो बाजरो,

म्हें दली ए मीठां की दाळ मीठो खीचड़ो।

म्हां रो मीठो लागै खीचड़ो,

म्हारो चोखो लागै खीचडो मीठो खीचड़ो।

अखल घाल्यो बाजरो,

म्हें छाल्ले घाली दाल मीठो खीचड़ो।

म्हांरो मीठो लागै खीचड़ो,

म्हारो चोको लागै खीचड़ो।

में नानो कूट्यो बाजरो,

म्हें मीठी छांटी दाल मीठो खीचड़ो।

खद-खद सीजै बाजरो,

कोई लथ-पथ सीजै दाल मीठो खीचड़ो।

दूध-खीचड़ो खाबा बैठ्या,

कोई तरसै म्हांरी जाड़ मीठो खीचड़ो।

म्हारो चोखो लागै खीच़डो मीठो लागै खीचडो। [[102]](#endnote-103)

(7) रायतो

चूलाई थारो रायतो, लागै गजब सवाद,

 चूलाई थारो रायतो।

म्हारे आंघण ऊगी ए चूलाईड़ी,

ज्यां री झोल्यां भर-भर लाय,

 चूलाई थारो रायतो।

म्हाने लागै गजब सवाद चूलाई तारो रायतो।

म्हारा सासूजी चूटे पानड़ली,

म्हारी नणदल हांडी में चढ़ाय,

 चूलाई थारो रायतो।

जद चूलाईडी उबली, लीनी कुंडले सिराय,

चूलाई थारो रायतो म्हाने लागै गजब सवाद,

चूलाई थारो रायतो।

दोय बेर पानीड़ो काढ़ियो, लीनी दहीड़े छुंकाय,

चूलाई थारो रायतो गजब सवाद

चर-चर मंडक खावा लाग्यो आवै म्हारे मुँह

चूलाई थारो रायतो, म्हाने लाग गजब सवाद।[[103]](#endnote-104)

(8) घूमर गीत

ओजी ओझी मने पाजीड़ो पोमचियो रंगा दे मोरी माय

घूमर रमवा में जास्यूं।

ओ जी ओ, मने रायड़ा रो टेवरियो चड़ादे मोरी माय

घूमर रमवा मैं जास्यूं।

ओ जी ओ मने घूमतीन लाइड़ा दीने मोरी माय,

 घूमर रमवा मैं जास्युं।[[104]](#endnote-105)

(9) श्रावणी तीज

 ओरां ने तो मां भिरियो बिरियो, ए पीव,

 मने भिरियों, मां तेल को जे।

 आयो आयो मां, पीबरिये रो ए फाग,

 वो सपके लेग्यो, मां मांडियो जे ।

 भागी-दौड़ी मां, फागलिये रे लार,

 कांटो लाग्यो, मां कर को जे।

 लेज्या लेज्या म्हारे पीवरिये रा रे फाग

 जाय दिखावै म्हारी माय ने जे।[[105]](#endnote-106)

**सारांश**

 राजस्थानी प्रकीर्ण गीतों में अलग-अलग भावना के गीत प्राप्त होते हैं। प्रथम गीत 'म्हारे घर में पिलड़ो पाल्यो जी' में प्राणी के प्रति मनुष्य की वास्तविक भावना का चित्रण हुआ है। प्राणियों को भी अपने घर में एक घर के सदस्य की तरह रखा जाता है। प्राणी भी इतना ही प्यार जताते हैं। राजस्थानी ग्राम्य नारी के प्राणी-प्रति-वात्सल्य का चित्रण है।

 द्वितीय गीत 'मिनड़ी मर ज्याणी' में गृहस्थ जीवन में बिल्ली का अनोखा स्थान है। बिल्ली को भी घर के सदस्य की तरह पाला गया है। प्राणी सहज स्वभाव के कारण दूध, दही, मलाई आदि बाहर रखने से खा जाता है। संयुक्त परिवार में घरेलू झगडे छोटी-छोटी बातों से होते हैं। बिल्ली की शरारतों से थकी नारी की मनोव्यथा इस गीत में प्रकट हुई है।

 तृतीय गीत 'छछिया लावण मारुजी मैं गई जी' में ग्राम्य नारी के मनोभावों की अभिव्यक्ति हुई है। छाछ ग्राम्य जीवन का महत्वपूर्ण पेय है। हर घर में गाय-भैंस रखते हैं। छाछ मांगने से ताने सुनने पड़ते हैं इसलिए अपने घर में भैंस लाने की इच्छा इस गीत में व्यक्त हुई है।

 चतुर्थ गीत 'म्हारे करयो चूरमो दाल' में धार्मिक त्यौहार पर चूरमा-दाल का महत्व होने से प्रतिदिन बनने वाली चीज कितनी अच्छी लगती है, व्यक्त किया गया है। नारी-हृदय भोजन बनाना और परिवार में सभी को संतुष्ट रखने की भावना होती है। इस गीत में धार्मिक भावना भी व्यक्त हुई है।

पंचम गीत 'मीठा जी मीठा गुलगुला' है। नारी भोजन के प्रति अधिक लगाव रखती है, अतः विविध व्यंजन बनाकर परिवार का प्रेम प्राप्त करती है। इस गीत में पारिवारिक सहयोग की भावना भावपूर्ण ढंग से व्यक्त हुई है। नारी-हृदय की निःस्वार्थ भावना है। वह दूसरों को खिलाकर ही संतुष्ट होती है।

षष्ठम् गीत 'म्हारो मीठो लागै खीचडो' में ग्राम्य नारी सामान्य अनाज को विशिष्ट भोजन बनाकर अपनी व्यंजन निपुणता व्यक्त करती है। अपने परिवार को भोजन खिलाकर संतोष का भाव व्यक्त करती है।

सप्तम् 'चूलाई थारो रायतो, लगै गजब सवाद' में एक भाजी से बने रायते का वर्णन है। अपने घर में उगी कोई सब्जी या फल खाने में कितना आनंद मिलता है, और अपने हाथों से बनायी चीजों में निजी सुख होता है। इस गीत में परिवार के सबी सदस्यों का मेल होता है तो मिठाश और आती है। पारिवारिक सहयगो की भावना इस गीत में दृष्टिगत होती है।

अष्टम् गीत 'ओ जी ओ मने पाजीड़ो पोमचियो रंगा दे' में स्त्री-पुरुष के आनंद की अभिव्यक्ति त्यौहार-गीत में व्यक्त हुई है। रंग उड़ाकर होली में नृत्य करते हैं। इस गीत में त्यौहार के स्वागत एवं खुशियों का स्वागत है।

नवम् गीत 'औरां न तो मां भिरियो भिरियो ए पीव' है। इस गीत में ससुराल में बैठी स्त्री को अपने पीहर की याद आते ही मन व्याकुल हो जाता है। ससुराल में त्यौहार के समय भी बहू को अन्याय होने से अपने मन की व्याकुलता सहज भाव से होती है जो इस गीत में व्यक्त हुई है। श्रावणी तीज के इस त्यौहार गीत में मनोरंजन के साथ व्यथा भी है।

**गुजराती प्रकीर्ण गीत**

(1) भारी बेडां ने हुं तो नानकडी नार

भारी बेडां ने हुं तो नानकडी नार, केम करी पाणीडां भराय रे,

 भम्मरिया कूवाने कांठडे?

गोरी नीची ने ऊँचा कांठडा रे राज। चडतां कमर लचकाय रे,

 भम्मरिया कूवाने कांठडे?

सरके साळुडां नीर सीचंता रे राज। कोईनी नजर लागी जाय रे,

 भम्मरिया कूवाने कांठडे?

पाणी पाणी थई जती रे, एवा पाणी भरवा काज रसीली ना जती,

स्त्रीना सुखने कारण पुरुष थाय कुरबान

तो पाणी भरवा महीं शुं झाझुं नुकसान? लोकोमां मश्करी थाय रे,

 भम्मरिया कूवाने कांठडे?[[106]](#endnote-107)

(2) मारी घंटी

घंटी मारी आरण कारण रे

 घंटी मारी हैया धारण रे

ओशीके ओधवजी बेठा रे

 पाटलीए पर भुजी बेठा रे

गाले गोविंदजी बेठा रे

 हाथे हनुमानजी बेठा रे

थाळामां शिवजी बेठा रे

 पैये परषोत्तम बेठा रे

सुपडे साळगरामनी सेवा रे

मीठा बाजराना मेवा रे।[[107]](#endnote-108)

(3) घोघो चडुआण

घोघा! तारो वाड्यमां वास. तलसाणे घोघा तारा बेसणां रे,

घोघो ऊभो गांधीडाने हाट, रसलबा बेनी कंकोडी वोरे रे।

घोघो पूछे वळी वळी वात, आवडी कंकोडी बेनी क्यां वरे रे

नावण करसे घोघो चुवाण, आवडी कंकोडी बेनी क्यां वरे रे

घोघो ऊभो सरोवरियानी पाळ, रासलबा बेनी पाणी भरे रे,

घोघो पूछे वली वळी वात, आवडां पाणी रे बेनी क्यां वरे रे,

नावण करशे घोघो चुवाण, बार बार बेडे रे घोघो अंघोळ करे रे।

ढाल्या ढाळ्या रुपला बाजोठ, फरतां मेल्या रे सोना सोगठां रे.

रमे रमे घोघो चुवाण, बेला रमे रासल बेनडी रे।

चडी चडी ऊगमणी वार, आथमणा थाय रडिया रे,

वारे चडजे घोघा चुवाण, भेळां च़डे रासल बेनडी रे।

बळो वळो, रासल बा बेन, तमारे सोंई छोरुं वाछरुं रे,

छोरुं वाछरुं सार संसार, मारे माडीनो जायो एकलो रे।[[108]](#endnote-109)

(4) मघरो दारु

अरधानो सीसो आण्या छे

 ने मधरो दारु मारो छे।

इनेलाणे लाणे पायो छे

 ने..... छे।

मारा पग केरि कांबियुं छे - ने मधरो.

इ दारुडामां डूलियुं छे – ने मधरो.

मारी केड्य केरो घाघरो छे – ने मधरो.

इ दारुडामां डूल्यो छे – ने मधरो.[[109]](#endnote-110)

(5) मृत्यु गीत (छाजियां-राजिया-मरसियां)

हर हरि करतां आणां रे आइवां

 तेडां आइवां श्रीरामनां रे, हवे आ शेनो वार?

संम्या ते मांची हीरे भरी,

 बेसण करतेला जाव रे! हवे आ शेनो वार?

बेसण करशुं रे वावडी,

 वासो हरिने दरबार रे! हवे आ शेनो वार?

सरगनी शेरीए नदी घणेरी,

 नदीए केम उतरशे रे? हवे आ शेनो वार?

करनो छोकरो ब्राह्मण गाय आपे,

 पूछडे वळगेला जाशुं रे! हवे आ शेनो वार?

सरग शेरीए कांटा घणेरा,

 कांटामां केम चलाशे रे? हवे आ शेनो वार?

करनी छोकरी होय तो शेरी रे वाळे,

 ते पुन्ये चाल्यां जाशुं रे! हवे आ शेनो वार?[[110]](#endnote-111)

(6) देखाडुं ए देश

वीजळीने चमकारे मोती परोवुं, पानबाई।

 नहितर अचानक अंधार थाशे,

जोतजोतामां दिवस वया गया, पानबाई।

 एकवीश हजार छसोने काळ खाशे

भाई रे। जाण्या जेवी आ तो अजाण छे पानबाई।

 आ तो अधूरियां नो केवाय,

आ गुपत रसनो खेल छे अटपटो,

 आंटी मेलो तो पूरण समजाय। वीजळीने.

भाई रे। निरमळ तैने आवो मेदानमां, पानबाई।

 जाणी लियो जीवनो जात,

सजाति विजातिनी जुगति बतावुं ने

 बीबे पाडी दऊ बीजी भात। वीजळीने.

भाई रे। पिंड ब्रह्मांडथी पर छो गुरु, पानबाई।

 तेनो देखाडुं हुं तमने देश,

गंगा सती एम बोलियां रे,

 त्यां नहि मायानो जरीए लेश। वीजळीने.[[111]](#endnote-112)

\*\*\*\*

(7) सात पांच सखीओ टोळे वळी, चालोने जातरा जईए!

चालता चालता थाकी गयां रे, रखोमणी रडवा लाग्यांजी रे।

लाडका दियरिया रथ मंगावो रे, रखोमणीने बेसाडो जी रे!

चालतां रे चालतां तरसां थयां रे, रखोमणी रडवा लाग्यांजी रे।

लाडका दियरिया लखमणजी रे, जळ केथां निपजावो जी रे!

अंगोठडीमां जळ निपजाव्यां ने रखोमणीने पायांजी रे!

चालतां रे चालतां भूखां ज थयां रे, रखोमणी रडवा लाग्यां रे,

लाडका दियरिया लखमणजी रे, अन्न केथां निपजावो जी रे!

हथेळीमां अन्न निपजाव्यां ने रखोमणीए ते खाधांजी रे![[112]](#endnote-113)

(8) मारी साव सोनानी लाकडली

मारी साव सोनानी लाकडली,

राम! धण चारवाने चाइला.

 हो राम! धनवाडीना राजाजी.

हला ! सूकी ते नदीओ ठंमठमे

कां जईने जळ लेवां ?

 हो राम! धनवाडीना राजाजी.

मारी साव सोनानी लाकडली,

राम ! गौधन चारवाने जवां,

 हो राम! धनवाडीना राजाजी.

हला ! सूकी ते माळीओ ठंमठमे,

कां जईने जळ लेवां ?

 हो राम! धनवाडीना राजाजी.

हला ! सूकी ते वावडी ठंमठमे

कां जईने जळ लेवां ?

 हो राम! धनवाडीना राजाजी.[[113]](#endnote-114)

**सारांश**

 प्रथम गीत 'भारी बेडां ने हुं तो नानकडी नार' में गाँव की गोरी पानी भरने की गागर भारी है और वह नाजुक है। वह स्वयं को नाटी समझती है और कुआँ ऊँचा होने से पानी भरते समय वह पानी से तरबतर हो जाती है। उसका स्वामी उसे चिढ़ाता है।

 द्वितीय गीत अनाज पीसने 'घंटी मारी आरण कारण रे' में विनोदपूर्ण गीत है। स्त्रीयाँ कहती हैं चक्की ही मेरा सबकुछ है। मेरे हृदय का आश्वासन है। वह बारी-बारी से कृष्ण, हनुमान, शिवजी को याद करते गाती है कि पहिये में पुरुषोत्तम, सूप से साफ करते शालीग्राम हैं। ऐसे हीस वा करने से बाजरे की मीठी रोटियाँ खाने को मिलती हैं।

 तृतीय गीत 'घोघा तारो वाड्यमां वास' वीरतापरक गीत है, जो घोढा चहुआण नामक वीर की कथा है, जो गायों की रक्षा करते वक्त मारा गया। उसका समाधिस्थान तलसाणा नाम से प्रसिद्ध है। इसमें भाई-बहन के संवाद का अच्छा चित्र उभरकर आया है।

 चतुर्थ गीत 'अरधानो सीसो आण्यो छे' नशा संबंधी गीत है। जो शराब की बोतल लाकर पीता है, जिससे पत्नी के सारे आभूषण बेच देने पडे हैं। घर-परिवार तबाह हो जाते हैं। अर्थात् सबकुछ शराब की भेंट चढ़ चुका है।

पंचम गीत 'हर हरि करता आणां रे आइवां' में स्त्रियों द्वारा मृत्यु के वक्त छाती कूटते समय हरिस्मरण करके गाती है। अब तो अंतिम क्षण आ गई। अब तो प्रभु के दरबार में ही निवास करना है। अब पूण्य के सहारे ही स्वर्ग प्राप्त हो सकेगा।

षष्ठम् गीत 'वीजळीने चमकारे मोती परोवुं, पानबाई' गहन तत्त्वज्ञान की भावना व्यक्त हुई है। प्रभु भक्ति का मर्म समझाया गया है।

सप्तम् गीत 'सात पांच सखीओ टोळे वळी' यात्रा गीत में यात्रा के लिए किस तरह की तैयारियां की जाती हैं और उसमें शारीरिक और मानसिक थकान के चित्र हैं। यात्रा में सुख-सुविधा का अभाव सा रहता है।

अष्टम् गीत 'मारी साव सोनानी लाकडली' में उस विस्तार में पानी की कमी का वर्णन लकडी के माध्यम से किया गया है ।

**गुजराती और राजस्थानी प्रकीर्ण गीतों की तुलना**

**समानता**

1. गुजराती और राजस्थानी दोनों के प्रकीर्ण गीतों में प्राणी के गीत समान हैं।

**असमानता**

1. दोनों के गीतों में समानता की अपेक्षा असमानता अधिक दृष्टिगत होती है।
2. राजस्थान में ऊंट, बिल्ली, धीणें के गीत प्राप्त होते हैं। गुजरात के कच्छ में रेगिस्तानी इलाका होते हुए बी कच्छ में ऊंट कम मात्रा में पाले जाते हैं। गधे पालते हैं, लेकिन उनके गीत नहीं मिलते।
3. राजस्थानी गीतों में भोजन संबंधी गीत अधिक मिलते हैं लेकिन कच्छ में भोजन पर एक भी गीत नहीं मिलता। कच्छी में आभूषणों के प्रति नारी का अधिक लगाव दिखायी देता है।
4. राजस्थानी में त्यौहार के गीत अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं जो गुजराती में केवल एक-दो होली-गीत मिलते हैं।
5. राजस्थान में तत्वचिंतन, प्राकृतिक संकट और राष्ट्रप्रेम के गीत प्राप्त नहीं हैं, जो गुजराती में प्राप्त हैं।

**निष्कर्ष**

 गुजरात और राजस्थान के लोकगीतों का संपादन विविध नौ विभागों में समान भावना के गीतों द्वारा प्रस्तुत किया है। अंतिम विभाग में समानता से अधिक असमानता है। दोनों प्रदेशों का एक ही वातावरण होते हुए भी असमानता अधिक है। राजस्थान में त्यौहार के गीत अधिक मिलते हैं। गुजरात में त्यौहार अधिक होते हैं तो भी त्यौहार संबंधी गीत अल्प संख्या में मिलते हैं। दोनों प्रदेशों में प्राणियों को पालने की आवश्यकता है। भैंस, गाय, बकरी आदि हरेक ग्राम्य जीवन की नजी आवश्यकता है। छाछ गरम प्रदेश में ठंडक देती है और सस्ती होने से गरीब लोग भी पी सकते हैं। प्रकीर्ण गीतो में अलग भावना के गीत बहुत ही रोचक हैं। इन स्फुट गीतों द्वारा गुजरात और राजस्थान का पारिवारिक तथा सामाजिक चित्रण प्रत्यक्ष रुप में प्राप्त होता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. बृहद महिला मंगलगीतः शकुन्तला जोशी, पृ. 26 [↑](#endnote-ref-2)
2. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1); रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 52 [↑](#endnote-ref-3)
3. उत्सव गीत : लज्जारानी गोयल, पृ. 54 [↑](#endnote-ref-4)
4. मैया ममुताजी परमार, आबू रोड (राजस्थान) [↑](#endnote-ref-5)
5. गुजरातनां लोकगीतो- सं. खोडीदास भा. परमार, पृ. 48 [↑](#endnote-ref-6)
6. मेघाणी ग्रंथ भाग-2 - सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 225 [↑](#endnote-ref-7)
7. हालरडां - सं. झवेरचंद मेघाणी - पृ. 12,13,14,15 [↑](#endnote-ref-8)
8. राजस्थान के ग्राम-गीत (भाग 1) ; रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 31 [↑](#endnote-ref-9)
9. कलात्मक राजस्थान; एन. भीष्म पाल, पृ. 37 [↑](#endnote-ref-10)
10. राजस्थानी लोकगीत (भाग 1); गंगाप्रसाद कमहान, पृ. 6 [↑](#endnote-ref-11)
11. प्रभावती जाड़ेजा से प्राप्त (राजपीपळा, गुजरात) [↑](#endnote-ref-12)
12. बालगुर्जरी- पूँजालाल, पृ. 120 [↑](#endnote-ref-13)
13. बालगीतों के संदर्भ और आयाम- दीपेन्द्र जाडेजा, पृ. 45 [↑](#endnote-ref-14)
14. आपणां लोकगीतो- जयमल्ल परमार, पृ. 266-267 [↑](#endnote-ref-15)
15. चेतन बालवाडीमां गवातां गीतो- डॉ. योगिनी पाठक, पृ. 64 [↑](#endnote-ref-16)
16. जितेंद्र लीलाधर परमार, काठडा मांडवी तहसील (कच्छ) [↑](#endnote-ref-17)
17. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययनः डा. कुलदीप, पृ. 219 [↑](#endnote-ref-18)
18. राजस्थान के ग्राम-गीत; रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 112 [↑](#endnote-ref-19)
19. श्याम परमार, मालवी लोक-साहित्य, पृ. 398 [↑](#endnote-ref-20)
20. मरीयाबई, हाजी वाघेरा काठड़ा मांडवी तहसील (कच्छ) [↑](#endnote-ref-21)
21. गुजरातनां लोकगीतो- ले. मधुभाई पटेल, पृ. 106 [↑](#endnote-ref-22)
22. गुजरातनां लोकगीतो- सं. खोडीदास भा. परमार, प. 31-32 [↑](#endnote-ref-23)
23. रढियाळी रात- (बृहद आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 104 [↑](#endnote-ref-24)
24. राजस्थानी लोकगीत, हनुमन्तसिंह देवड़ा, भाग 2, पृ. 7-8 [↑](#endnote-ref-25)
25. राजस्थानी लोकगीत, डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.87 [↑](#endnote-ref-26)
26. वहीँ, पृ.89 [↑](#endnote-ref-27)
27. लोकसाहित्यमाळा मणको-14, सं. गुजरात राज्य लोकसाहित्य समिति, पृ. 104, 105, 106 [↑](#endnote-ref-28)
28. मुरायाबाई हाजी वाघेर, काठडा मांडवी तहसील (कच्छ) [↑](#endnote-ref-29)
29. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना गोयल, पृ. 6 [↑](#endnote-ref-30)
30. मोतीड़ा की लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 51 [↑](#endnote-ref-31)
31. विवाह के गीत (संशोधित संस्करण), शकुंतलादेवी जोशी, पृ. 26 [↑](#endnote-ref-32)
32. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 40 [↑](#endnote-ref-33)
33. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 46 [↑](#endnote-ref-34)
34. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 15 [↑](#endnote-ref-35)
35. विवाह के गीत (संशोधित संस्करण), शकुंतलादेवी जोशी, पृ. 15-16 [↑](#endnote-ref-36)
36. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 13 [↑](#endnote-ref-37)
37. राजस्थानी लोकगीत (भाग 4), संपादक मोहनलाल व्यास शास्त्री, उदयपुर, पृ. 18 [↑](#endnote-ref-38)
38. उत्सव गीत, लज्जारानी गोयल, पृ. 32 [↑](#endnote-ref-39)
39. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 65 [↑](#endnote-ref-40)
40. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 65 [↑](#endnote-ref-41)
41. मोतीड़ा री लूम (संकलन), केदारबाई अग्रवाल, श्रीमती मीना अग्रवाल, पृ. 49 [↑](#endnote-ref-42)
42. विवाह के गीत (संशोधित संस्करण), शकुन्तलादेवी जोशी, पृ. 44-45 [↑](#endnote-ref-43)
43. कंकु छांटी कंकोत्री- सं. प्रशांत पटेल, पृ. 40 [↑](#endnote-ref-44)
44. कंकु छांटी कंकोत्री- सं. प्रशांत पटेल, पृ. 72 [↑](#endnote-ref-45)
45. स्नेहलता जे. संपट, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-46)
46. कंकु छांटी कंकोत्री- सं. प्रशांत पटेल, पृ. 57 [↑](#endnote-ref-47)
47. गुजरातनां लोकगीतो- सं. खोडीदास परमार, पृ. 15 [↑](#endnote-ref-48)
48. आपणां लोकगीतो- सं. जयमल्ल परमार, पृ. 340 [↑](#endnote-ref-49)
49. मेंहदी लाल गुलाल- ले. अमृत पटेल, पृ. 127-128 [↑](#endnote-ref-50)
50. प्रभावती जाडेजा (राजपीपला, गुजरात [↑](#endnote-ref-51)
51. सौरभ लग्नगीत संचयः सं. डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 77 [↑](#endnote-ref-52)
52. गुजरातनां लोकगीतो- सं. खोडीदास परमार, पृ. 30 [↑](#endnote-ref-53)
53. गुजरातनां लोकगीतो- सं. खोडीदास परमार, पृ. 31 [↑](#endnote-ref-54)
54. सौरभ लग्नगीत संचय- सं. हसु याज्ञिक, पृ. 94 [↑](#endnote-ref-55)
55. सरोज पी. ठक्कर, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-56)
56. कोयल चाली सासरे- सं. उमियाशंकर अजाणी, पृ. 143, 144 [↑](#endnote-ref-57)
57. कोयल चाली सासरे- सं. उमियाशंकर अजाणी, पृ. 146 [↑](#endnote-ref-58)
58. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, पृ. 58 [↑](#endnote-ref-59)
59. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन, पृ. 58 [↑](#endnote-ref-60)
60. मोरिया आछो बोल्यो, डॉ. महेंद्र मानावत, पृ. 16 [↑](#endnote-ref-61)
61. राजस्थान के ग्राम-गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 19-20 [↑](#endnote-ref-62)
62. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 26 [↑](#endnote-ref-63)
63. गुजराती लोकगीतो- सं. खोडीदास परमार, पृ. 35 [↑](#endnote-ref-64)
64. रढियाळी रात- (बृहद आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 139 [↑](#endnote-ref-65)
65. मेघाणी ग्रंथ (भाग-2)- सं. उमाशंकर जोशी, पृ. 225 [↑](#endnote-ref-66)
66. श्रीमती मेनाबहन एन. आशर, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-67)
67. गुजरातनां लोकगीतो- खोडीदास परमार, पृ. 59 [↑](#endnote-ref-68)
68. कुलसुमबाई ए. मीर, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-69)
69. मामदभाई वाघेर, काठड़ा, मांडवी तहसील (कच्छ) [↑](#endnote-ref-70)
70. प्रभावती जाडेजा (राजपीपला, गुजरात) [↑](#endnote-ref-71)
71. प्रभावती जाडेजा (राजपीपला, गुजरात) [↑](#endnote-ref-72)
72. दक्षिण गुजरातनां लोकगीतो- सं. मधुभाई पटेल, पृ. 162 [↑](#endnote-ref-73)
73. लोकसाहित्य माला- मणको-09, सं. गुजरात राज्य लोकसाहित्य समिति, पृ. 303 [↑](#endnote-ref-74)
74. राजस्थानः ग्राम गीत, भाग 1, रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 50 [↑](#endnote-ref-75)
75. राजस्थान के ग्राम गीत, भाग, रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 1 [↑](#endnote-ref-76)
76. राजस्थानी ग्राम गीत, भाग 1, रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 42 [↑](#endnote-ref-77)
77. श्रीमती मेनाबहन एन. आशर, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-78)
78. दक्षिण गुजरातनां लोकगीतो- सं. मधुभाई पटेल, पृ. 122 [↑](#endnote-ref-79)
79. राजस्थानी लोकगीतः हनुमन्तसिंह देवड़ा, भाग 1, पृ. 12-13 [↑](#endnote-ref-80)
80. राजस्थानी लोकगीत (भाग 6), मोहनलाल व्यास शास्त्री, पृ. 62 [↑](#endnote-ref-81)
81. राजस्थानी लोकगीत (भाग6), मोहनलाल व्यास शास्त्री, पृ. 1 [↑](#endnote-ref-82)
82. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (भाग 16), हिन्दी का लोक-साहित्य, खण्ड-4, मालवी, पृ. 471 [↑](#endnote-ref-83)
83. मोतीड़ा री लूम, श्रीमती केदारबाई अग्रवाल, गता गोयल, पृ. 35 [↑](#endnote-ref-84)
84. मोतीड़ा री लूम, राजस्थानी विवाह गीतों का संग्रह, केदारबाई अग्रवाल व

 श्रीमती मीना गोयल, पृ. 36-37 [↑](#endnote-ref-85)
85. वजो भगत, काठडा मांडवी तहसील (कच्छ) [↑](#endnote-ref-86)
86. लोकसाहित्य माला मणका (भाग 1 से 14) के अन्तरगत- सं. हसु याज्ञिक, पृ. 54,55 [↑](#endnote-ref-87)
87. कुलसुमबाई अबुभाई मीर, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-88)
88. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 430 [↑](#endnote-ref-89)
89. लोकसाहित्यमाला मणका (भाग 1 से 14) के अन्तरगत- सं. हसु याज्ञिक, पृ. 378 [↑](#endnote-ref-90)
90. कच्छी लोकगीत की पुरानी पुस्तक से प्राप्त, मांडवी (कच्छ) [↑](#endnote-ref-91)
91. राजस्थानः रीति-रिवाज, रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 59 [↑](#endnote-ref-92)
92. भैरव बी. परमार, आबू रोड (राजस्थान) [↑](#endnote-ref-93)
93. ओमप्रकाश दोलतराम चौहाण, ताड़ बाड़ झोपड़ियां सोडजत (मारवाड़) [↑](#endnote-ref-94)
94. लोकसाहित्यः तत्त्वदर्शन अने मूल्यांकन- श्री जयमल्ल परमार, सं. बळवंत जानी, पृ.. 392 [↑](#endnote-ref-95)
95. आपणां लोकगीतो- सं. जयमल्ल परमार, पृ. 261, 267 [↑](#endnote-ref-96)
96. आपणां लोकगीतो- सं. जयमल्ल परमार, पृ. 264, 265 [↑](#endnote-ref-97)
97. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 77-78 [↑](#endnote-ref-98)
98. राजस्थानी ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 74-75 [↑](#endnote-ref-99)
99. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 70 [↑](#endnote-ref-100)
100. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 89 [↑](#endnote-ref-101)
101. राजस्थानी ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 91-92 [↑](#endnote-ref-102)
102. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 82 [↑](#endnote-ref-103)
103. राजस्थान के ग्राम गीत (भाग 1), रामसिंह एन. स्वामी, पृ. 100 [↑](#endnote-ref-104)
104. राजस्थानी रीति-रिवाज, सुखबीर सिंह गहलोत, पृ. 70 [↑](#endnote-ref-105)
105. वही, पृ. 52 [↑](#endnote-ref-106)
106. सौरभ रास लोकगीत संग्रह- सं. हसु याज्ञिक, पृ. 36 [↑](#endnote-ref-107)
107. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 152 [↑](#endnote-ref-108)
108. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 262 [↑](#endnote-ref-109)
109. रढियाळी रात (बृहद् आवृत्ति)- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 186 [↑](#endnote-ref-110)
110. गुजरातनां लोकगीतोः ले. मधुभाई पटेल, पृ. 244-245 [↑](#endnote-ref-111)
111. सोरठी संत वाणी- सं. झवेरचंद मेघाणी, पृ. 47,48 [↑](#endnote-ref-112)
112. दक्षिण गुजरातनां लोकगीतो- सं. मधुभाई पटेल, पृ. 170, 171 [↑](#endnote-ref-113)
113. लोकसाहित्यमाला (मणका 01 से 14) के अन्तरगत- सं. हसु याज्ञिक, पृ. 472 [↑](#endnote-ref-114)